

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَلطَّبَّوَالْعَالَمِ مِنَ الْمَهْدِ اِلَى الْاَلْحَدِ

एवम हासिल करो गेहवारै से कब तक

गुलदस्त अंशकाल

मकारिब के अर्थों के लीखे
जइरी बातों का बेहतरीन मखमुआ



मुशत्तब : मौलाना शम्सुलहक हाशीम • थांगा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 أَطْلَبُوا الْعِلْمَ مِنَ الْمَهْدِ إِلَى اللَّحْدِ
 (علم حاصل کرو گہوارے سے قبر تک)

"गुलदस्तअे अट्ङाल"

७२ मुसलमान के लिये दीनी बातोंका
 बेहतरीन मजमुआ

* मुरात्तबे *

मौलाना शम्सुलउक उाशिम यांगवी (भेडा)

प्रकाशक

नुरानी कुतुबखाना

मु.पो. छापी, जि. बनासकांठा

पीन - ३८५२१०

सर्व उक स्वाधीन छे.

दुआओंका अनमोल भजाना
या'नी

हिस्ने हसीन मुतरज्जम

अरबीके साथ

गुजराती लिपीमें

सोकर उठनेके वक़्तसे लेकर सोते वक़्त तक के तमाम जिन्दगीके मा'भूलात और पैदा होनेके पहलेसे लेकर मरनेके बाद तक के तमाम हावातसे मुतअद्विक रसूलुल्लाह (स.अ.व.) से नक़ल की ग़र्ह दुआयें, अजकार और हिदायातोंका ज़ेहतरिन मजमूआ.

• दिलोंमें ईमानका नूर और ईबादतका
शौक डालनेवाली लाजवाब किताब

हिकायतोंका गुलदस्ता

* जिसमें *

मौलाना मरदूमने दिलोंमें रोशनी और ईमानमें
साज़गी पैदा करनेवाली (१५०) के करीब मो'तबर
किताबोंसे सखी नसीहत आमेज़ हिकायात लिखी
हैं ज़े लोर्गोंमें बहोत ही मकबूल हैं.

प्रकाशक

नुरानी कुतुबखाना

मु.पो. छापी, जि. बनासकांठा, पीन - ३८५२१०

नं०	अध्याय	पृ०
१	पेश लङ्ग १	१
२	अर्जे मुअल्लिक ३	३
३	हमारे अर्योंसे जातीयत ४	४
४	ईलमकी इमीलत ५	५
५	मद्सा के आदात ७	७
६	उस्ताद के हुकुक ८	८
७	नसीहत ८	८
८	तिलापते कुर्आन मजुद १०	१०
९	आदात ११	११
१०	तिलापत की भिकदार ११	११
११	तिलापत का सवाल १२	१२
१२	सिखदये तिलापत का तरीका १३	१३
१३	कुर्आन मजुद पत्म करनेका तरीका १३	१३
१४	कुर्आन मजुदकी सुरते और इकुअ १४	१४
१५	कुछ सुरतोंकी इमीलत १४	१४
१६	ईमान और ईस्लाम १५	१५
१७	ईमाने मुश्मल १५	१५
१८	ईमानेमुइस्सल १६	१६
१९	कलिमये तय्यजह १६	१६
२०	ईमान नामा १७	१७
२१	ईस्लामके इर्ज १८	१८
२२	ईस्लामके वाजुआत १८	१८
२३	ईस्लामकी सुन्नते १९	१९
२४	नमाज का अध्याय १९	१९
२५	अपकाते नमाज २०	२०
२६	अमाज का अध्याय २२	२२
२७	पुगु का अध्याय २५	२५
२८	तयामु का अध्याय २८	२८
२९	इराईजे नमाज ३०	३०
३०	वाजुआते नमाज ३०	३०
३१	सिखदये सहवका तरीका ३१	३१

नं०	अध्याय	पृ०
३२	नमाज पढनेकी तरकीब	३१
३३	नमाज के आदाब	३४
३४	नमाजे विप्र	३४
३५	नमाजे तरावीह	३५
३६	नमाजे घईन	३६
३७	मई और औरतकी नमाज का इर्क	३८
३८	अहम सुन्नतसे गइलत	३९
३९	जुम्हाका दीन और इमीलत	४०
४०	जुम्हा छोडनेकी वईद	४१
४१	जुम्हा का भुल्ला	४१
४२	जुम्हा की नमाज	४२
४३	नईल नमाजे	४२
४४	तहीयतुल पुगु	४३
४५	तहीयतुल भरगुद	४३
४६	ईशराक	४३
४७	यास्त	४४
४८	अप्यालीन	४४
४९	तहजुद	४४
५०	नमाजे इस्तिफारह	४४
५१	सलातुत तरगीह	४६
५२	नमाजे तौबा	४७
५३	सलातुल हाजत	४७
५४	मुसाफ़ीर की नमाज	४८
५५	सुरज अहन और थांअ अहनकी नमाज	५०
५६	दुमार की नमाज	५१
५७	अवकाते ममनुअ	५२
५८	अवकाते मक़ूद	५२
५९	नमाज के जाद की दुआ	५३
६०	तरगीहे इतिमह	५५
६१	रोज़ेका अध्याय	५५
६२	रोजे की नियत	५५

नं०	अध्यान	पे०
६३	रोगे की इमीलत.....	५६
६४	जुन चीजोंसे रोगा तुट जाता है.....	५६
६५	जुन चीजोंसे रोगा मक़्द होता है.....	५६
६६	जुन चीजोंसे रोगा मक़्द नही होता.....	५७
६७	सेहरी.....	५७
६८	ईक़तार.....	५७
६९	ओ'तिकाइ का अध्यान.....	५९
७०	ओ'तिकाइ के फ़ायदे.....	५९
७१	शलेक़द.....	५९
७२	सदक़ओ इि़त्र.....	६०
७३	नहील रोगे.....	६१
७४	पांच दीनोमें रोगा रफ़ना हराम है.....	६३
७५	ईदैनकी रातोंकी इमीलत.....	६३
७६	मक़ात का अध्यान.....	६४
७७	मक़ात की ताकीद और इमार्थल.....	६४
७८	मक़ात न देने पर अग्नाअ.....	६५
७९	मक़ात न देने से काल पडता है.....	६५
८०	वो लोग जुन्को मक़ात देना ज़रूरी है.....	६६
८१	वो लोग जुन्को मक़ात देना ज़रूरी नही.....	६७
८२	कीसको मक़ात देना अइमल है.....	६७
८३	हज्ज का अध्यान.....	६८
८४	मदीना मुनव्वरहकी हाजरी.....	६९
८५	अशरओ जुल्हज.....	७०
८६	अरइहके दीनकी इमीलत.....	७०
८७	तक़बीराते तशरीक.....	७०
८८	कुरआनी की इमीलत.....	७१
८९	कुरआनी न करनेकी वरिध.....	७१
९०	कुरआनी कीस पर वाजुअ है.....	७१
९१	कुरआनी का ज़ानवर.....	७२
९२	कुरआनी के ज़ानवर के औअ.....	७३
९३	मुअ के मसार्थल.....	७३

નંબર	બયાન	પેજ
૯૪	કુરબાની કી ખાલ	૭૫
૯૫	અકીકે કા બયાન	૭૫
૯૬	મૌત કા બયાન	૭૬
૯૭	મૌત કી અલામત	૭૭
૯૮	મૈયત કા ગુસલ	૭૮
૯૯	કફન કા બયાન	૮૦
૧૦૦	બસ્યે કે અહકામ	૮૧
૧૦૧	નમાઝે જનાઝા	૮૧
૧૦૨	નમાઝે જનાઝા કા તરીકા	૮૨
૧૦૩	દફન કરને કા તરીકા	૮૪
૧૦૪	ઈસાલે સવાબ	૮૫
૧૦૫	તઅઝીયત કરના	૮૬
૧૦૬	કબ્રકી ઝિયારત કરના	૮૬
૧૦૭	કફન કા નકશા	૮૭
૧૦૮	પાકી ઓર સફાઈ	૮૭
૧૦૯	નાખુન કાટનેકા મુસ્તહબ તરીકા	૮૮
૧૧૦	ખુશ્બુ	૮૮
૧૧૧	ગુસલ	૮૯
૧૧૨	બયતુલ ખલાકે આદાબ	૯૦
૧૧૩	મસ્જુદકે આદાબ	૯૧
૧૧૪	લિબાસકે આદાબ	૯૨
૧૧૫	બાતચીત કરને કે આદાબ	૯૩
૧૧૬	સલામકે આદાબ	૯૩
૧૧૭	આદાબે મુલાકાત	૯૪
૧૧૮	કોઈ આપકે યહાં આયે તો	૯૪
૧૧૯	સોને કે આદાબ	૯૫
૧૨૦	ખાને કે આદાબ	૯૬
૧૨૧	મસનુન દુઆઓ	૯૮
૧૨૨	કુઆન હદીસ કે અનમોલ ખાઝાને	૯૮
૧૨૩	અઝીમુશ્શાન વઝીફા	૧૦૧
૧૨૪	મુખ્તલીફ અવકાત કી દુઆઓ	૧૦૫

નંબર	બયાન	પેજ
૧૨૫	પુઝુ કી દુઆઓ	૧૦૮
૧૨૬	કુઆન હદીસ કી દુઆઓ	૧૦૯
૧૨૭	દુઆ માગને કા મસનુન તરીકા	૧૧૩
૧૨૮	બગેર હિસાબ મગફેરત કી તદબીર	૧૧૪
૧૨૯	જરૂરી માલુમાત (રસુલે અકરમ (સ. અ.) ઓર અહલે બૈત).....	૧૧૪
૧૩૦	પુલફાએ રાશેદીન	૧૧૭
૧૩૧	દસજબ્બતી	૧૧૮
૧૩૨	ચાર ફરિશ્તે	૧૧૯
૧૩૩	ચાર પયગમ્બર	૧૧૯
૧૩૪	ચાર ઈમામ	૧૨૦
૧૩૫	ચાર શોખ	૧૨૦
૧૩૬	સબસે પહેલે ઈમાન લાનેવાલે	૧૨૧
૧૩૭	મશહુર દીની કિતાબે	૧૨૧
૧૩૮	ઈસ્લામી મહીનોકે અહમ દીન	૧૨૧
૧૩૯	ઈસ્લામી તહેવાર	૧૨૩
૧૪૦	યાદ રખને કી બાતે	૧૨૩
૧૪૧	હમ કયા કરેંગે ?	૧૨૬
૧૪૨	બુમુગાને દીન કી બાતે	૧૨૮
૧૪૩	મદદ કરને કા સવાબ	૧૩૦
૧૪૪	આમ મઅલુમાત	૧૩૦
૧૪૫	ખેલ કુદ	૧૩૧
૧૪૬	થીયેટર ઓર સિનેમા	૧૩૨
૧૪૭	નાવીલ ઓર અફસાને	૧૩૨
૧૪૮	દીની તઅલીમી તહરીક	૧૩૩
૧૪૯	સેહત ઓર તંદુરસ્તી	૧૩૩
૧૫૦	હર બિમારી કી દવા	૧૩૬
૧૫૧	કલિમા કા બયાન	૧૩૭
૧૫૨	અમલકે લીયે મુખ્તસર યાદ દાશ્ત	૧૩૮
૧૫૩	અહમ નસીહત	૧૪૦
૧૫૪	હમ્દે બારીતઆલા	૧૪૧
૧૫૫	નઅતે રસુલ (સ. અ.)	૧૪૨

ઈન્તીસાબ
(અર્પણ)

બ હુઝૂર
ઈમામુલ અંબિયા
ખાતિમુન્ન બિચ્ચીન
રહમતુલ લીલ આલમીન
હઝરત મુહમ્મદુરસુલુલ્લાહ
સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વસલ્લમ.

पेश लङ्ग

मौलाना मुफ्ती ईस्माईल लउकोद्रवी साहेब
दाउल उलुम कंथारीया ज. लउय.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हामेदंव वमुसव्वीया.

अकाईदे ईस्लाम और आमावे ईबादतकी सिहत व मकबुलीयत के लीअे ईल्मे दीन और ईल्मे नब्वी (स. अ.) सीभना और अपनी औलादोंको सीभाना बहुत अहम और जरूरी है. बगैर ईल्म के तरीकअे नब्वी (स. अ.)के खिलाफ जो अमल ली ईबादतकी निख्यतसे कीया जाये वो गुमराही और बिदअत है.

अव्लाह तआलाका इरमान है.

या अय्युहल लज्जन आमनुं कुं अन्हूसकुम वअहलीकुम नारा
वकुदुहन्नासु वल हिलारह (सुरअे तहरीम पारा-६)

“अय ईमानवालो तुम अपनेको और अपने घरवालोंको आगसे बचाओ. जस्का ईधन भादमी और पत्थर है.

ईस आयत के बारे में हजरत मौलाना मुफ्ती मोहंमद शफीअ साहेब (र. ह.) अपनी तफ्सीरमें तहरीर इरमाते है :- हजरते कुकहाने इरमाया की ईस आयत से साबीत हुआ के हर शप्स पर इर्ज है के अपनी बीवी और औलादको शरीअत के इराईज और हलाल इरामके अहकामकी तालीम दे. और ईस पर अमल कराने की कोशीष करे.

मआरीकुल कुआन जल्ल - ८

सफ़ा - ५०३

जस्को हम ईब्नीदाई दीनी तालीम कहेते है उसका दरजा इर्ज औन का है.

अव्लामा ईब्ने आबेदीन (र. ह.) ने लीभा है के दीन की जरूरी बातों का ईल्म ईसलामके इर्जों में से अेक इर्ज है और हर मुसलमान मर्द औरत पर उसका सीभना इर्ज औन है.

(शामी जल्ल-१ सफ़ा २८)

अपनी औलाद के लीये आशाईश और राहत का सामान मुहय्या करना बिवा शुभा जार्ज और पसंदीदा मकसद है. मगर अपने बच्चों को दीनी ईल्म और ईस्लामी अफ्वाक सीखाना ये सभसे बडी दौलत और नेअमत है और ईस्लामी अफ्वाककी किमती दौलत से आरास्ता उनकी सखी मुहब्बत है और असली पैर प्वाही है के उन्हें ईल्मेदीन और ईस्लामी अफ्वाक की किमती दौलत से आरास्ता करने की इक की जाये. छरत रसुले मुदा (सं.अ.) ने इरमाया के आदमीका अपनी औलादको ईल्म और अदब सीखाना ये अक साअ सदका करने से अइजल है.

(तिर्मीज़ी शरीफ-२)

दूसरी हदीस में है के कोई बाप अपनी औलाद को अच्छे ईल्म व अदब की दौलत से अइजल और बेहतर अतीया (तौहफा) नही दे सकता.

(तिर्मीज़ी शरीफ-२)

अहकर के दोरे तालीबे ईल्मी के हमसबक व हम सइर और रईके मुफ्तीस मोहतरम मौलाना शम्सुलहक (यांग्वा) साहबने छोटे बच्चों की तअलीम व तरबीयत जैसे मुबारक व मसउद मकसद से मोअतबर किताबों के मुताबे व हवालों से बडी अर्क रेज़ीके साथ ये अक मुफ्ती रिसाला मुरत्तब इरमाया है जो आपके हाथों में है अल्लाहतआला मौलाना मौसुफ्की सईये बलीग को कबुल इरमाकर इस रिसाले को बच्चों की तअलीम व तरबियत का जरीया बनाये.

आमीन या रब्बल आलमीन

अहकर ईस्माईल लउकोद्वी

पाटीमे तदरीस व ईफ्ता

दाइल उलुम कंधारीआ. ज. लइय

माडे-मोहरम हीजरी १४१५

अर्से मुखल्लिक

बिसभिल्ला छिरुंमा निरुंडीम.

अल उम्हु विल्लाडी रब्बील आलमीन वस्सलातुं वस्सलामु अला सैय्येदील मुरसलीन वअला आलेडी वअतबाईडी अजमईन.

अम्माबाद ! दुनिया दारों की भातें लोगोंको दुनियाकी तरफ़ भीय रही है. और इतरतरहकी काम्याबीयोंकी जमानत दे रही है.

अल्लाह तआला के नेक बंदे पुदा की तरफ़ बुला रहे है और जिके पुदा. इिके रसुल (स.अ.) के जरीये दोनों जहाँ की काम्याबीका पयगाम पढोया रहे है. मुहंकरक बात तो यही है जो पुदाके बंदे सुना रहे है. ईन्ही की भातोंकी तस्वीम करने में फायदा और काम्याबी है. कयुंके उन उजरत की अपनी भातें नहीं है. बल्के पुदाकी तरफ़से आई हुई हय. तर्जुबा ईस बातका शाहीद हैकेईन भातोंको अमली छंदगी में लाने के लीये ईल्मे दीनकी तरफ़ मुतवज्जह होना बल्के पिघलना जरूरी हय.

नायीज तलबे ईल्मके सिलसीलेमें तो बहोत कमजोर साबीत हुआ हय पीघलनातो दुरकी बात हय. पुरी तवज्जुह ली नहीं कर सका ताहम अहकरअपने तमाम असातीजअे किराम. और मुरब्बीयान उजरात के जेरै साया मकतीब के बख्यों को कुछ साल तक दीनी तालीम देने के दौरान जो भातें बख्यों के लीअे जरूरी समज में आई उनको जमा करके "गुलदस्तेकी" शकल में आप उजरात की पीदमत में योथी बार तरमीम ईजारे और गलतीयों की ईस्लाह के साथ पेश करने की सआदत हासील कर रहा हुं.

रिसावे हाजामें. तालीमुदीन, तालीमाते, ईस्लाम, मआरीकुल कुर्आन, बिहीशीतजेवर, तालीमुल ईस्लाम, तम्बीहुल गाईलीन, हयाते नबवीयह (स.अ.), वगयरह मुअतबर किताबोंसे ईस्तेफादा किया गया है. ताहम अगर कोई गलती नजर आयें तो मुत्तलेअ इरमाकर रहबरी इरमायें

मौजूदा दौर में जबके जिम्मत अपने बख्योंको ईल्मे दीनसे मुजय्यन करने में गइलत और ला परवाहीसे काम ले रही हय. ईस कीसम के रिसावे को शायअ करनेसे बहुत फायदे की जिम्मीद की जा शकती हय

अल्लाह तआला ईस दीनी कोशीषको शई कुबुलीयत बख्शे और अजरे अजीम अता इरमाये. और हम सबको अमल करने और ईत्तबाअे सुन्नत की जिम्मत और तौईक अता इरमाये. आमीन

वस्सलाम

अहकर शम्सुलउक हाशीम

यांगा. ज. पेडा गुजरात

हमारे बच्चों से बातचीत

प्यारे बच्चों :-

आप अपने आपको "मअमुली ईन्सान" या कुछ न करनेवाली कौम न समझते "बच्चों जन्मत के कूल है" जहाँ बच्चों नहीं वहाँ बरकत नहीं" अल्लाह तआलाने बच्चोंके हिमागीके पजाने मे बहुत अच्छी कामकी बातें छुपाकर रक्की हय. उस्मे बड़ी ताकत और काम्याबीयां हय. अगर बच्चे बचपन के जमाने को खेलकूद में बरबाद करने के बजाए ईल्मेदीन हासिल करने और अप्लाक दुइस्त करने में और बड़ोंकी भीदमत करने में लगाये तो उनके हिमागी पजाने से वो किमती मोती जो छुपे हुअे हय. उबर आते हय. और उसके जरीये से कुछ बन जाते है. जस्की जरूरत घरवालोंको कौमको और मुक को छोती है.

बचपन का जमाना "सबकुछ" हासील करने और सब कुछ गुमा देनेका जमाना है जिस वक्त के उबरते हुअे हिमागी पजाने उम्र तर काईम रहेते है बचपन का जमाना बड़ा किमती है. जिस्से सही हाईदा उठाने के लीयेअपने मा बाप और बड़ोंकी बातें मानो. जिस्ताहकी तालीमातपर ध्यान लगाओ और खुब महेनत से अपने अंदर ईल्म और अप्लाक और भीदमत का किमती पजाना जमा करो. जो कल बडे होने के बाद तुम्हारे लीअे रहमतका जरीया बनेगा.

हमारे तमाम बुजुर्गोंने दीन "जो उम्मतके लीये अेक नमुना" और हायदाभंद साबीत हुअे है वो ली पडेले अेक बच्चोंकी शकल में थे. लेकिन जिन्हुने अपने बचपनके जमाने को असली काममें लगाया तो खुदा तआलाने जिन्हे बडे भरतबे तक पछोया दीया.

वहीं बच्चों आगे चलकर अच्छे बनते है जो मदसे में पाबंदीसे जाते है और जिस्ताह का अहब करते है ध्यानसे सबक याद करते है. और दीनका ईल्महासील करके अच्छे अप्लाक के मालीक बनते है. नीज "पादीमे कौम" बनकर अल्लाह के बंदोंकी और दीनकी भीदमत करके वो ईज्जतकी बड़ी जियी योंटीयोंको सर करते है.

પ્યારે બચ્ચો :-

તુમભી નેક બનો. એક બનો. પાક સાફ રહો. દીની તઅલીમ સે દીલ લગાઓ. બડે આદમીયોંકા અદબ કરો. ઊંકો સલામ કરો. છોટે ભાઈ બહેનોંસે મુહબ્બત કરો. પડોસકે બચ્ચોં કો ભલા બુરા મત કહો. ગાલીયાં મત દો. ઈસલીયે કે શરીફ બચ્ચેં ગાલીયા નહિ દેતે.

અચ્છા બચ્ચા બા અદબ હોતા હૈ. બડોંકા અદબકરતા હૈ. મા બાપકા કહના માનતા હૈ. ઊસ્તાદકા અદબ કરતા હૈ. કીસીકી ચીઝકી નહિ છીનતા. યે છોટીસી કિતાબ જો તુમ્હારે હાથ મેં હૈ ઊસ્કા નામ “ગુલદસ્ત એ અત્ફાલ” હૈ યાની બચ્ચોં કે લીયે દીની બાતોંકા મજમુઆ ઊસ્કી ખુબ ઘ્યાન સેં પઢો ઔર જરૂરી બાતોંકો જબાની (મુંહ પર) યાદ કરો ઔર અપની છુંદગી અચ્છી બનાને કી કોશીષ કરો ઔર અલ્લાહ તઆલા સે દુઆ માગતે રહો કયુંકે અલ્લાહ તઆલા મહેનત કરનેવાલોંકી મહેનત બરબાદ નહી કરતે. અલ્લાહ તઆલા હમ સબકી મદદ કરમાયે.

(આમીન સુમ્મ આમીન)

ઈલ્મકી ફઝીલત

- (૧) કુર્આન શરીફમેં ઈશાદ હૈ. રબ્બેઝીદની ઈલ્મા. તરજુમા ઔર દુઆ કીજીયે “અય મેરે રબ મેરાઈલ્મ બઢા દે.” ઈસ આયતે કરીમામે હુઝુર સલ્વલ્લાહો અલયહે વસલ્વમ કો અલ્લાહ તઆલાને ઈલ્મકી જીયાદતીકે લીયે દુઆ ફરમાને કા હુકમ દીયા હૈ. કીસ કદર ઊંચા મરતબા હૈ. કે અપને હબીબે પાક (સ. અ.) કો ખાસ ઈલ્મકી જીયાદતી કે લીએ દુઆ કરનેકા હુકમ ફરમાયા.
- (૨) ઈલ્મે દીન સીખને કે લીએ જાનેવાલા જબતક લોટકર ન આયે. વહાં તક વો અલ્લાહકે રાસ્તે મેં હૈ.
- (૪) ઔર ઈશાદ ફરમાયા કે ઈલ્મકા તલબ કરના (સીખના) હર મુસલમાન મર્દ ઔર ઔરત પર ફર્જ હૈ. (ઈબ્ને માજા)
- (૫) ઈલ્મ સીખનેવાલેં કે લીએ ફરીશ્તે (જો નુરસે બને હૈ) વો મુહબ્બત કરતે હૈ ઔર હર ચીજ સુક જાતી હૈ. યહાં તકકી હવામેં ડિનવાલે

परीन्दे और दरीयाकी मछलीयां और सुराभोमें छुपनेवाली युंटीयांभी
ईस्के लीअे हुआ और ईस्तिगफ़ार करती है.

(६) ईल्म अेक अैसी दीवत है जो योरके युराने से मड्डुऊ है. पुढ
अपने साडब याने ईल्मवाले को सेंकडो आइतोसे बयानेवाला है".
कबमें, मयदाने उशरमे, और जन्तमें, जाने तक साथ देनेवाला है.
पुल सिरात पर कुव्वत देनेवाला है.

(७) हज़रत अली (र.दी.) का इरमान है के ईल्म मालसे बहेतर है.
ईल्म मेरी डिफ़ाऊत करता है. और मालकी मुजे डिफ़ाऊत करनी
पडती है. माल पर्य करनेसे कम होता है. और ईल्म पर्य करने से
बढता है. गर्ज के ईल्म पुढाकी अेक अैसी नेअमत है के जो शप्स
हासीव करता है अल्वाउ तआला ईस्को दीन व हुनियाकी लवाई
अता इरमाते है. और जो शप्स ईल्मकी ईल्नी बडी नेअमतसे
ममडूम रहेता है. तो वो सारी पैरो बरकतसे मड्डूम कर दिया
जाता है. यहां तकके वो ईन्सानियतसे नीकलकर हयवानियतमें दापील
हो जाता है.

याद रहे ! हम जो काम करे "दीनी या हुन्यवी" ईस्के मुताव्विक
दुआंन शरीफ़ और हदीसे रसुल (स.अ.) से मालुमात हासीव करे. हलाव
और हुरामको पडेयान कर अमल करे और जो बातें दीनकी जरूरी है.
जैसे की ईमान, नमाऊ, ज़कात, रोज़ा, हज्ज, तिज्जरत, शादी बियाह,
गमी, सइर, वगेरह के मसाईल काईल्म हासीव करे और ईस्के मुताबीक
अमल करे.

याद रण्णो :- ईस्लाम सरासर ईल्मो अमलका नाम है. बगैर ईल्मके
अमल नहीं हो सकता. ईसी वास्ते हदीस शरीफ़में ईल्मका तलब करना
हरे मुसलमान मर्द-औरत पर फ़र्ज़ किया गया है.

आजकल नयें नयें तरीकोसे अनपढ और ज़ाहील मुसलमानोंको
दुसरे लोग बडेकाते और लालय देते है. और मज़हबे ईस्लामको भुरा केह
कर गुमराह करनेकी कोशीश करतेहैं. ईसलीये ज़हां तक हो सके अैसे
लोगोंसे और ईन्की बातोंसे दुर रहेना याहीअे. और क्रीसी मद्रसेमें आलीमे
दीनसे दीनकी किताबें पढकर दीने ईस्लामकी बातोंसे वांकीफ़ होना याहीअे.
ताके गलत बातोंसे बयकर हम सही आमाव कर सके. और अपनी
आभेरतको संवार सके.

દીદાયત :- ઈલ્મ ઊસ્કો હાસિલ હોતા હૈ જોગુનાહોસે બચતા હૈ. ઈસલિયે કે ઈલ્મ “નુરે ઈલાહી”હૈ. ઓર નુરે ઈલાહી ગુનાહગારકો નહી દીયા જાતા લિહાઝા ગુનાહોસે દુર રહેના ચાહીયે તાકે ઈલ્મકા કુછ હિસ્સા મીલ જાએ. ઓર દુનિયા આખેરત સંવર જાએ.

મદ્રસાકે આદાબ

મદ્રસા જાનેકી તૈયારી :- મદ્રસા જાનેસે પહેલે પાકસાફ કપડે પહેનલો. નાશતા કરલો. અગર વક્ત હો તો આગેકા સબક દેખ લો. જો સબક સુનાના હૈ ઉસે જરૂર યાદ કરકે જાઓ. ઘરવાલોં કો સલામ કરકે જાઓ. રાસ્તેમેં ચલતે વક્ત દાયે-બાયે આગે-પીછે ખ્યાલ રખો. આંખે બંદ કરકે મત ચલો મોટર સાઈકલ ઓર રાસ્તેમેં ચલનેવાલોંસે ખબરદાર રહો. રાસ્તે કે બાયે તરફ ચલો. દોડકર તુફાન કરતે હુએ મત ચલો. વક્ત પર મદ્રસેમેં પહોંચ જાઓ બહોત જલ્દી જા કર મત બેઠે રહો. ઓર એક મીનીટ દેરસેભી મત જાઓ.

મદ્રસેકે અંદર :- મદ્રસમેંદાખીલ હોતે વક્ત ઊસ્તાદકો ઓર સાથીયોંકો સલામ કરો. અપની જમાઅત કા ખાસ ખ્યાલ રખો. મદ્રસા ઓર સ્કુલમેં પાબંદીસે હાજરી દો બગૈર મજબુરીકે કભી ગેર હાજીર ન રહો. શયતાની રંગકે તુફાની લડકોંકી તરહ મત બનો છુકે બહાને બનાકર ઘરમેં મત પડે રહો. લીખને પઢનેમે સુસ્તી ન કરો મુમ્કીન હૈ કે અભી તુમકો અપની કદો કિંમત માલુમ નહો લેકીન જબ બડે હો જાઓગે તબ ઉસ્કી અસલી કિંમત માલુમ હોગી. ફીર પછતાને સે કોઈ ફાયદા ન હોગા. ખેલ કુદમેં ધ્યાન કમ લગાઓ. અપને ઉસ્તાદકા અદબ કરો ઉન્કે સામને ગુસ્તાખી (બેઅદબી) ન કરો જબાન દરાઝીસે કામ ન લો. મહેનત ઓર શોકસે સબક યાદ કરો દીલસે ધ્યાન લગાકર ઉસ્તાદકી બાત સુનો. લીખને પઢનેમે ખુબ તવજજુહ રખો. અપની જમાઅતમેં પહેલે નંબર પાસ હોનેકી કોશીષ કરો ઈન્નેહાનમેં પહેલે નંબર પાસ હોનેકી કોશીષ કરો કુરઆન શરીફ ઓર અપની કિતાબસે લાપરવાહી ન કરો બગૈર વુજુકે કુરઆન શરીફકો હાથ ન લગાઓ. ઈસ બાતકા ખુબ ખ્યાલ રખો કે દુસરેકી કિતાબ ઓર કલમ વગેરહ ભુલસેભી મત લો. ઓર કીસીકી કોઈ ચીજ તુમહારે પાસ આ જાએ તો ઉસ્કે માલિકકો

पछोया दो. ईभ्नेछान में खोरी करने. से या दुसरेकी नकल करनेसे दूर रहो खोरी करके पास होने से डेवल होना अखण. शरमीदा होना पडे औसा काम हरगीज न करो. कीसीको अपना दोस्त बनानेमें जल्दी मत करो. हर अकके साथ दोस्ती मत करो. अक अखण और सख्या दोस्त बेहतर है. नेक और काबील को तो अक दोस्तभी काफ़ी है. कयूं के नादान दोस्तसे तुमको जराभी फ़ायदा न होगा. बडे नुकसानका मतला है. जब कीसी अखे से दोस्ती करलो तो मरते दम तक उसको निभाओ, और दोस्ती बाकी रहनेकी कोशीश करो. औसा न हो आज दोस्ती करली कलको जगडा हुआ और तीसरे दीन दोस्ती मत्त. ये बहोत भुरी हरकत है.

मद्रसे से वापसी :- मद्रसेसे वापस आओ तो घरवालोको सलाम करो. कुर्आन शरीफ़ और किताबों का बस्ता (दफ़तर) उसकी जगह पर रहो कपडे बदल लो. हाजतसे फ़ारीग हो जाओ ड़ीर हाथ मुंह धोकर जो पाना तैयार हो पालो और पुदाका शुक्र अदा करो. मगरीबकी नमाजके बाद रोजाना मद्रसा और स्कुल का सबक याद करने बेठ जाओ. रोजाना दो घंटे वीचने पढनेका काम जरूर करते रहो रोजानाकी ये थोडी महेनत बहुत फ़ायदा पछोयायेगी.

ईभ्नेछानके जमानेमें भुब महेनत करते करते पाना-पीना और सोना छोड देना. ज़स्से तंदुरस्ती पराब हो जाये ईससे बेहतर है के तुम रोजाना थोडीथोडी महेनत करते रहो ईससे तंदुरस्ती भी अच्छी रहेगी और नतीजा भी अखण रहेगा.

कुछ लउकोकी आदत ये होती है के साल भरका वक्त भेलकुदमें भरबाद करते है. ड़ीर जब ईभ्नेछानका वक्त आता है तो ईतनी महेनत करते है के पाने पीने और सोनेका भी भ्याल नहीं करते और बीमार पड जाते है.

याद रहो :- ईल्म हासिल करने के वीअे महेनत और मशक़त और मुतालेकी जरूरत है. ईल्म कोई औसी मामूली खीज नहीं है के अक दीनमें उसकी धोल कर पी लीया जाअे. तोते की तरह रटने से और पास हो जाने से लीयाकत पैदा नहीं होती कयूंकी जो लउके रट कर आगे बढ़ते है जिन्मे अकलमंदी नहीं आती ड़ीर वही मिसाल बनती है की नाम "अकीलमीयां" और अकल का कतरा (टीपा) भी नहीं.

उस्तादके हुकुक

- (१) उस्तादके पास भिस्वाक करके पाक साई कपडे पडेन कर जाओ.
- (२) अदबसे जाओ. जो बात बताओ उस्को भुब ध्यानसे सुनो.
- (३) बातों को भुब याद रभो.
- (४) अगर कोई उस्तादकी बुराई करे तो उस्को रोकी वरना वहांसे गिठ कर. यले जाओ.
- (५) जब हल्का (भजलीस) के करीब पहुंचो तो लाजुरीनको सलाम करो. उस्तादको भास तौरसे सलाम करो. हां अगर वो पढानेमें या तकरीर करनेमें मशगुल हो तो गिस वक्त सलाम न करो.
- (६) उस्ताद के सामने बहोत हसो नडि न ज्यादा बात करो. ईधर गिधर न देभो बल्के उस्तादकी तरफ मुतवज्जे रहो.
- (७) उस्तादसे बह गुमानी न करो.
- (८) उस्तादकी पीठ पीछेभी हुकुक का प्याल रभो.
- (९) कभी कभी तोड़का (हदीया) देकर भत लिभ कर गिन्का दिल् भुश करता रहे औरभी बहोत से हक है. लेकीन समजदार के लीये ईत्ने भी काई है. ईस्से बाकीको समज सकता है.

-: नसीहत :-

- (१) अगर दुसरेसे सवाल होता हो तो भुद कुछ न बोले.
- (२) पढनेके जमानेमें कुरसद और तंदुरस्तीको गनीमत समजे क्युं के ये चीजें निहायत बे अेअतीबार है. अगर ये मौका भैलकुदमें भतम कर दीया तो बादमें मौका न भीलेगा और अईसीस करना पडेगा.
- (३) अगर काममें या बात चीतमें गलती होजाओ तू फोरन अपनी गलतीका ईकारर करले भाते न बनाओ ये तकब्बुर (बाडाई) की अलामत है.
- (४) अगर कोई साथी या दुसरा तावीबे ईल्म गलत अल्फाज पढे तो हसना नही याहीये.
- (५) सबक पर निशान रभें ताके जल्दी से भोल ले औसा न हो के

- तमाम डिताब उलटना पडे.
- (६) सबक आगे रुक कर सुनाओं पीछे तन कर न सुनाओ जिस्मे बे परवाई और बेअदबी है.
- (७) जस्से ईल्म पढे जिस्की मुहब्बत और अदब रफ्ते. ईससे बडा नफा होगा.
- (८) हमको याहीये के अल्लाहवाले बन कर रहें. तमाम चीजे हमारी बन कर रहेगी. अगर अल्लाह तआला से डीर गया तो सब चीजें डीर जाओगी.
- (९) दीव लगाकर पढेगा तो जल्दीसे पढेगा वरना बरसोंमें न आओगा.
(रहमतुल मुतअद्वेमीन)

तिलावते कुर्आन मजुद

क़ज़ीलत :-

- (१) रसुले मुहा कुर्आन (स.अ.)ने इरमाया के मेरी जिम्मत के लीये सबसे बेहतर ईबादत कुर्आन मजुदकी तिलावत है. (बयहकी)
- (२) रसुले मुहा (स.अ.)ने इरमाया के कुर्आन मजुद पढा करो बेशक वो क़्यामत के दीन अपने पढने वालोंके लीये शिफ़ाअत करता हुआ आयेगा. (मुस्लीम शरीफ़)
- (३) अक़ रिवायत मे है के कुर्आनवाले ही अल्लाहवाले है. और जिस्के पास बंदे है. रसुले मुहा (स.अ.) ने इरमाया जस्के सीनेमे कुछ त्नी कुर्आन नहो वो अैसा है. जैसे जिजाड घर. (ईमाम अहमद)
- (४) हज़रत अनस (र.दी.)ने हुरुर (स.अ.)की ये ईश्राफ़ नक़ल कीया है के जो शप्स अपने बेटेको नाजरह (अंदर टेभकर) कुर्आनशरीफ़ पढना सीपाओ उसके अगले पीछले गुनाह माफ़ हो जाते है और जो शप्स हीफ़ज़कराओ जिस्को क़्यामतमें योंदवी रातके यांद के मुशाबे ठीकाया जायेगा. और ईस्के बेटे से क़हा जायेगा पढना शुरु कर जब भेटा अक़ अयात पढेगा तो अक़ दरजा बापका बुवंद कीया जायेगा. यहां तक के ईस तरह पुरा कुर्आन मजुद पुरा हो. (तबरानी)
- (५) हज़रते जिस्मान (र.दी.) से हुरुर (स.अ.) का ये ईश्राफ़ नक़ल किया है के तुममें सबसे बेहतर वो शप्स है जो कुर्आन शरीफ़ को

सीमे और सिभाओ

(बुभारी शरीफ)

आदाब :- भिस्वाक और वुजुके बाद निलायत तवाजुअ के साथ पाक साफ जगामे बैठे. डिब्बेकी तरफ मुंह छोतो बेहतर है. पढने में जल्दी न करे तजवीद से पढे. कलाम पाक को रहेल या तकीया या कीसी जियी जगामे पर रभें तिलावत के दरम्यान कीसीसे बात न करे. अगर मजमाअमें लोग अपने अपने कामोंमें मशगुल छोतो आहीस्ता पढना अइजल है. मुफ्तसर तौरपर आदाबका पुलासा ये है कि कुर्आन शरीफ मअबुद का कलाम है अहकमुल हाकेमीन का कलाम है. रब्बुल आलमीनका इरमान है. जमीनों और आस्मानों के बादशाह का कानुन है. जिसकी हैबत दीवमे. छोनी याहीअे.

हजरते ईकरेमा (र.दी) जब कुर्आन शरीफ पढने के लीअे भोला करते थे तो बे छोश छोकर गीर जाया करते थे. और जुबानसे ज़ारी छो जाता था. हाजा कलामो रब्बी. हाजा कलामो रब्बी. ये भेरे रबका कलाम है.

तिलावत की मिकदार :- ओलमा के नजदीक कुरान शरीफ भतम करनेकी मुदत मकर्रर नही है. जतने दीनों में सहूलत से भतम छो सके करे.

मगर कुछ ओलमा का मजहब है के याबीस दीन से जयादा न छो कुछ ओलमा का इत्वा है के हर महीने में अेक भतम करना याहीअे और बेहतर ये है सात रोज में अेक कलाम पाक भतम करे सहाबा (र.दी)का अमल आम तौर पर यही नकल कीया जाता है. जुमा के रोज शुरु करे और रोजाना अेक मंजील पढकर जुमेरात को भतम करे.

हजरत ईमाम अबु हनीफा (र.ह) का इरमान है के **साबत्रे** दी

भरतभा	भतम करना कुरान शरीफ का एक है. लीहाजा ईससे कीसी तरह
कम नही करना	याहीअे.

अेक हदीसमे है के कलाम पाक का भतम करना अगर दीन के शुरु हिस्से मे छो तो तमाम दीन और रातके शुरुमें छोतो तमाम रात इरीश्ते जिस्के लीअे रहमत की हुआ करते है. (इजाईवे कुरान शरीफ)

मसखला :- ईतना कुर्आन शरीफ हीफज याद करना जससे नमाज अदा छो जाये हर शप्स पर इर्ज है. और तमाम कुर्आन शरीफ का हीफज करना इर्ज कीफाया है अगर कोई ली हाफिज न रहे तो तमाम मुसलमान गुनेहगार है. (अल्लाहकी पनाह)

बह्के मुल्ला अली कारी (र.ह.)ने नकल किया है के जस शहर या

ગાવ મેં કોઈ કુર્આન શરીફ પઢનેવાલા ન હોતો સબ મુસલમાન ગુનેહગાર હૈ.

મૌજુદા દૌર મેં જહાં હમ મુસલમાનોં મેં દીન કે બહોત સે અહકામ મેં ગુમરાહી ફેલ રહી હૈ વહાં એક આમ આવાજ ચૂલી હૈ કે કુર્આન મજુદ કે હીફઝ કરને કો ફુજુલ સમજા જા રહા હૈ ઊસ્કે અલ્ફાઝ રટને કો હમાકત (બેવકુફી) કહા જાતા હૈ ઓર ઈસ્કે અલ્ફાઝ કો યાદ કરના. દીમાગ સોઝી કહાં જાતા હૈ. કીસ કીસ ચીઝકો રોવે. ઓર કીસ કીસકી ફરીયાદ કરે.

(ફઈલલ્લાહીલ મુશતકા વલ્લાહુલ મુસતઆન)

તિલાવત કા સવાબ :- હઝરત અલી ર.દી)સે નકલ કીયા હૈ. કે જીસ

શખ્સને નમાઝ મેં ખડે હોકર કુર્આન મજુદપઢા તો ઊસ્કો હર હરફ પર સો નેકીયા મીલેગી. ઓર જીસને બેઠકર પઢા ઊસ્કે લીએ પચાસનેકીયા ઓર જીસને બગેર નમાઝકે વુજુકી હાલત મેં પઢા ઊસ્કે લીએ પચ્ચીસ નેકીયા ઓર જીસને બગેર વુજુ પઢા ઊસ્કો દસ નેકીયા મીલેગી ઓર જો શખ્સ પઢે નહિ બલ્કે સીફ પઢનેવાલેકી તરફ કાન લગાકર સુને ઊસ્કે લીએ હર હરફ કે બદલે એક નેકી હૈ. (ફઝાઈલે કુર્આન મજુદ)

હિદાયત :-

(૧) જો બચ્ચે બગેર વુજુ કે કુર્આન શરીફ લેકર મદસા મેં આતે હૈ. ઓરબગેર વુજુ કે પઢતે હૈ, વો ખિલાફે અદબ હૈ

(૨) અગર કુરાન મજુદ કીસીકે હાથ સે ગીર જાએ તો ઊસ્કે બરાબર અનાજ તોલકર દેને કા કોઈ શરઈ હુકમ નહી હૈ. પહેલે બુજુર્ગોને શાયદતમ્બીહ કે વાસ્તે યે કાઈદા મુકરર કીયા હોગા તાકે ફીર ખ્યાલ રહે. વાકેઈ બડી અચ્છી મસલેહત હૈ. હા. કુર્આન મજુદ કો બે ઝરૂરત તરાજુકે પલ્લે મેં રખનાં અદબ કે ખિલાફ હૈ. ઈસ લીયે અગર અનાજ દેના હોતો જીતની હિમ્મત હો દે દો કુર્આન મજુદ કો તરાજુ મે ન તોલો.

(૩) જબ કુર્આન શરીફ કી તિલાવત કી જાયે તો ઊસી વક્ત અઊઝુબિલ્લાહ ઓર બિસ્મિલ્લાહ દોનોં પઢી જાયે. તિલાવત કે દરમ્યાન જબ એક સુરત ખતમ હોકર દુસરી સુરત શુરૂ હોતો સુરએબરાઅત(પારા-૧૦ રૂકુઅ-૬) કે અલાવહ હર સુરત કે શુરૂમેં બિસ્મિલ્લાહ પઢી જાએ અઊઝુબિલ્લાહ નહી ઓર સુરએ બરાઅત

तिलावत के दरम्यान में आ जाये तो इस पर बिस्मिल्लाह न पढे. और अगर कुरान मश्हद की तिलावत सुरअे बराअतसे शरू कर रहा है तो उसके शुरुमें अजिउबिल्लाह और बिस्मिल्लाह दोनों पढना याहीये.

- (४) नमाज मे पढेली रकात के शुरु में अजिउबिल्लाह के बाद बिस्मिल्लाह पढना सुन्नत है.
- (५) पढली रकात के बाद दुसरी रकातों के शुरु में बिस्मिल्लाह पढना मसनुन है.
- (६) नमाज में सुरअे फातिहा के बाद सुरतको शुरु करने से पढेले बिस्मिल्लाह नही पढना याहीये. नबीअे करीम (स.अ.) और पुलफाअे राशेदीन से साबीत नहि है.
(मआरीफूल कुर्आन ज-१ पेज २०)

सिजदअे तिलावत करने का तरीका :-

- (१) ये है के भडे होकर अल्लाहु अकबर कहेता हुआ सिजदा करे. और सुब्हान-रब्बीयल अअला तीन या पांच भरतबा पढे और डीर अल्लाहु अकबर कहेता हुआ भडा हो जाये.
- (२) अगर कोई बेठे हुअे सिजदे में गया और सिजदे से उठकरबेठ गया जब बी सिजदअे-तिलावत अदा हो गया.
- (३) सिजदअे तिलावत की आयत को जो शप्स पढे उसपर सिजदा करना वाज्जब है. और जो सुने उस पर बी सिजदा करना वाज्जब है. याहे कुरान मश्हद सुनने के धरादे से बेठा हो या कीसी और काम के लीअे. इसलीअे बेहतर हे के सिजदे की आयत को आहिस्ता से पढे ताके कीसी दूसरे पर सिजदा वाज्जब न हो.

कुर्आन मश्हद भत्म करनेका तरीका : हदीस में है के ज्जने कुर्आन मश्हद पढा और उसको भत्म किया अल्लाह तआला अपने पास उसके लीये अेक हुआ लीभेगा जो डीलहाल कबुल हो जाये. या कीसी मसलेहत से बादमें कबुल हो. (बयहकी.)

जब कुर्आन मश्हद भत्म हो तो सुरअे नास पढकर अलहम्दो शरीफ पढे. उसके बाद कुर्आन मश्हदके शुरु में अलीफला ममीमसे मुफलीहुन तक पढे. (गोया कुर्आन मश्हद की तिलावत दोबारा शुरु करने की अलामत है) उसके बाद कुर्आन मश्हद के आभिर की भत्मे कुर्आन की हुआ बी पढे उसके बाद पुदाकी हम्दो सना और जो याहे हुआ मांगे. और डीर दुरूद शरीफ पढे. और तिलावतका सलाब महुमोंकी इलोंको पढोयाये.

ਸਿਭਦੇ ਕੀ ਆਯਤ ਕੇ ੧੪ ਮਕਾਮ ਏ ਹੈ

	<u>ਸੁਰਤ ਕਾ ਨਾਮ</u>	<u>ਪਾਰਾ</u>	<u>ੜਕੁਅ</u>
(੧)	ਸੁਰਓ ਅਅਰਾਫ਼	੮	੧੪
(੨)	ਸੁਰਓ ੨ਅਫ਼	੧੩	੮
(੩)	ਸੁਰਓ ਨਫ਼ਲ	੧੪	੧੨
(੪)	" ਬਨੀਓਸਰਾਓਲ	੧੫	੧੨
(੫)	" ਮਰੀਯਮ	੧੬	੭
(੬)	" ਫ਼ਯੂਜ਼	੧੭	੮
(੭)	" ਫ਼ੁਰਕਾਨ	੧੮	੩
(੮)	" ਨਮਲ	੧੮	੧੭
(੯)	" ਸਿਭਦਲ	੨੧	੧੫
(੧੦)	" ਸੁਵਾਫ਼	੨੩	੧੧
(੧੧)	" ਫ਼ਾਮੀਮ ਸਿਭਦਲ	੨੪	੧੮
(੧੨)	" ਨਯਮ	੨੭	੭
(੧੩)	" ਓਨਸ਼ੀਕਾਕ	੩੦	੮
(੧੪)	" ਅਲਕ	੩੦	੨੧

ਕੁਰਆਨ ਮਜ਼ਦਕੀ ਸੁਰਤੇ ਓਰ ੜਕੁਅ :-

ਕੁਰਾਨ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਮੇਂ ਓਕ ਸੋ ਘੋਂਫ਼ਲ ਸੁਰਤੇ ਹੈ. ਓਰ ਮੰਜੀਲੇ ਸਾਟ ਹੈ. ਓਰ ੜਕੁਅ ਪਾਂਘਸੋ ਘਾਵੀਸ ਹੈ. ਓਰ ਪਾਰੇ ੩੦ ਹੈ.

ਫ਼ਯੂ ਸੁਰਤੋਂ ਕੀ ਖ਼ਾਸ ਫ਼ੀਲੋਂ :-

ਫ਼ੀਲੋਂ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਮੇ ਆਟਾ ਹੈ ਕੇ ਓਕ ਮਰਤਬਾ ਕੁਲ ਫ਼ੁਵਲਾਫ਼ੁ ਅਫ਼ਫ਼ ਪਠਨੇਸੇ ਟੀਫ਼ਾਓ ਕੁਰਾਨ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਕਾ ਸਵਾਬ ਮੀਲਟਾ ਹੈ ਓਰ ਸੁਰਓ ਕੁਲ ਘਾਅਘੁਫ਼ਲ ਕਾਫ਼ੇੜਨ ਓਕ ਮਰਤਬਾ ਪਠਨੇਸੇ ਘੋਘਾਓ ਕੁਰਆਨ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਕਾ ਸਵਾਬ ਮੀਲਟਾ ਹੈ.

ਓਰ ਜੋ ਸੁਰਓ ਘਾਸੀਨ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਓਕ ਮਰਤਬਾ ਪਠੇ ਟੋ ਸ਼ਾਮ ਟਕ ਓਸਕੀ ਫ਼ਾਜ਼ਟੇ ਪੁਰੀ ਫ਼ੋਗੀ

ਜੋ ਰਾਟ ਕੋ ਸੁਰਓ ਘਾਕੇਆ ਪਠੇ ਓਸਕੀ ਕਠੀ ਫ਼ਾਕਾ ਨਫ਼ੀ ਫ਼ੋਗਾ (ਪਾਰਾ -੨੭ ੜਕੁਅ -੧੪)

ਰਾਟਕੋ ਸੁਰਓ ਮੁਲਕ (ਟਬਾਰਕਵਲਜੀ) ਪਠਨੇ ਸੇ ਅਯਾਏ ਕਫ਼ਰਸੇ ਫ਼ਿਫ਼ਾਜ਼ਟਫ਼ੋਗੀ. (ਪਾਰਾ ੩੦)

ਮਸਅਲਾ :- ਏ ਜੋ ਮਸਹੁਰ ਹੈ ਕੇ ਯਵਾਲਕੇ ਵਕਟ ਓਰ ਸੁਰਯ ਨਿਕਲਨੇ ਕੇ

વક્તુ ઔર સુરજ છુપનેકે વક્તુ કુરાન શરીફ પઢના યા ઝિકમે મશગુલરહેના મના હૈ. યે બાત ગલત હૈ. હા ઈન વક્તોમે નમાઝપઢના મના હૈ.

ઈમાન ઔર ઈસ્લામ

ઈમાન કયા હૈ ? હઝરત રસુલે પુદા(સ.અ.)ને હઝરત જિબ્રઈલ (અ.સ.) કે જવાબમે જબકે ઊન્હોને આપ (સ.અ.)કે પાસએક અજનબી શપ્સકી સુરતમે હાજીર હોકર ઈમાનકે મુતઅલ્લીક સવાલ કીયા “ઈમાન કયા ચીઝ હૈ”તો આપ (સ.અ.)ને ફરમાયા કે ઈમાન યે હૈ કે તુમ અલ્લાહ ઔર પયંગમ્બરો ઔર કિતાબો પર રોજે કયામત ઔર મરનેકે બાદ ફીર જંદા હોને પર ઔર તકદીર પર ઈમાન લાઓ (મીશકાત શરીફ)

ઈસ હદીસમે તમામ ઊસુલેદીન ઔર ઈન ચીઝોકોજીન પર ઈમાન લાના ચાહીએ ઈસ્કો બતાયા ગયા હૈ.

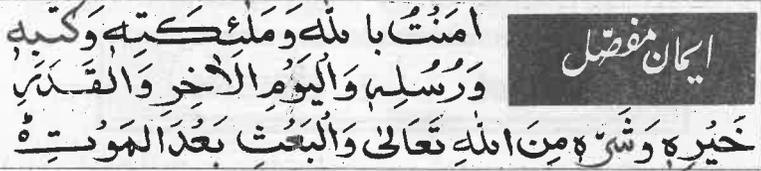
ઈસ્લામ કયા હૈ ? હઝરત ઊમર (રદી.) ફરમાતે હૈ કે મેં રસુલુલ્લાહ (સ.અ.)કી ખીદમતમે હાજીર થા એક શપ્સ આયા વો સફેદ કપડે પહેને હુઆ થા બાલ બહોત કાલે યે સફરકી કોઈ અલામત ઊસ પર ઝાહીર નહી થી હમ ઊસકો પહેચાનતે નહી થે. વો આતેહી હુઝુર (સ.અ.)કે સામને બૈઠ ગયા ઔર અપને ઘુટને હુઝુર (સ.અ.)કે ઘુટનોસે મીલા દીયે. ઔર અપને દોનો હાથ અપને ઘુટનો પર રખ દીયે. ફીર પુછા અય મુહંમદ (સ.અ.) “ઈસ્લામ કયા હૈ ?”આપ (સ.અ.)ને ફરમાયા ઈસ્લામ યે હૈ કે કલીમએ શહાદત પઢે. અશહદુ અલ્લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહુ વ અશહદુઅન્નમુહમ્મદન અબ્દુહુ વરસુલોહું. નમાઝે પંજગાના અદા કરે. ઝકાત અદા કરે. રમજાન કે રોઝે રખે. તાકત હોતો હજ કરે. ઊસ શપ્સને જવાબ દીયા. અય મુહંમદ (સ.અ.) આપને સય ફરમાયા (અહમદ) દીલસે યકીન ઔર જુબાનસે ઈક્રાર કરનેકો ઈમાન લાના કહેતે હૈ. જસ્કી તફસીલ ઈમાને મુજમલ ઔર ઈમાને મુફસસલ હૈ.

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِسَمَاءٍ
وَصِفَاتِهِ وَقَبِلْتُ جَمِيعَ اَحْكَامِهِ

ایمان مجمل

ઈમાને મુજમલ :- આ મન્તુ બિલ્લાહી કમા હુવ બિઅસ્માએહી વસિફાતીહી વકબીલતુ જમીઅ અહકામીહી

ઈમાન લાયામે અલ્લાહ પર જૈસા કે વો અપને નામોં ઓર સિકાતોં કે સાથ હૈ ઓર મૈને ઈસ્કે તમામ અહકામ કબુલ કીયે.


 اٰمَنْتُ بِاٰلِهٖ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَكِتٰبِهٖ
 وَرَسُوْلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ
 خَيْرِ وَشَرِّهِ مِنْ اِلٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

ઈમાને મુફસ્સલ :- આમન્તો બિલ્લાહી વમલાઈકતેહી વકુતુબીહી વરુસોલેહી વલયવમીલ આખીરે વલ કર્હે ખયરીહી વશરીહી મીનલ્લાહી તઆલા વલ બઅસે બઅદલ મૌત

“ઈમાન લાયામે અલ્લાહ પર ઓર ઈસ્કે ફરિશતો પર ઓર ઈસ્કી કિતાબોં પર ઓર ઈસ્કે રસુલો પર ઓર કિયામત કે દીન પર ઓર ઈસ પર કે અચ્છી ઓર બુરી તકદીર ખુદા તઆલાકી તરફસે હોતી હૈ. ઓર મૌતકે બાદ ઊઠાયે જાને પર.

ઈસ્લામકી ગુન્યાદ :- પાંચ ચીજોં પર હૈ.

- (૧) અવ્વલ કલીમા તૈયીબહ યા કલીમએ શહાદતકે મતલબ કો દીલસે માનના ઓર જબાનસે ઈકરાર કરના.
- (૨) નમાઝ પઢના
- (૩) ઝકાત દેના
- (૪) રમજાન શરીફકે રોઝે રખના
- (૫) હજ કરના.

કલીમએ તથ્યબહ

લાઈલાહ ઈલ્લાહાહ મુહમ્મદુરસુલુલ્લાહ.

યે કલીમા બંદેકી તરફસે એક ઈકરાર હૈ. બંદા ઊસ્કો પઢકર અપને રબસે ઈકરાર કરતા હૈ કે અય અલ્લાહ મૈ તેરા બંદા ઓર ગુલામ હું તેરે હુકમોં પર ચલુંગા ઓર જન ચીજોસે મના કિયા હૈ. ઈન્સે બચુંગા ઈસ કલીમે કે મુતાલ્લીક તીન ચીજોંકા ધ્યાન રખના ઝરૂરી હૈ. અવ્વલ ઈસ્કે અલ્ફાઝ સહી યાદ હો. દુસરે ઈસ્કે મતલબ કા ઈલ્મહો તીસરે ઊસ્કે મુતાલીબા ઓર તકાજા કો હર વક્ત ઓર હર હાલતમે પુરા કરના.

બહુતસે લોગ નામકે મુસલમાન હૈ ઊન્કો કલીમા કે અલ્ફાઝબી સહી

યાદ નહી. ઔર તર્જુમા મતલબકી ભી ખબર નહિ. ઔર કલીમાકે તકાજે ઔર મતલબકો ભી નહી જાનતે ઐસે લોગોંકો ઈન ચીજોંસે વાકીફકરાઓ ઈસ્કા તર્જુમા યે હૈ. અલ્લાહકે સિવા કોઈ મઅબુદ નહી હજરત મુહમદ (સ.અ.)અલ્લાહકે રસુલ હૈ.

કલીમા તેચ્ચબહકા મતલબ :-

પુદાતઆલા કે સાથ મુસલમાનોંકોયે અકીદા રખના ચાહિયે કે પુદાતઆલા એક હૈ. વહી ઈબાદત ઔર બંદગી કે લાયક હૈ. ઉસ્કા કોઈ શરીક નહિ વોહર બાતકો જાનતા હૈ. કોઈ ચીજ ઊસ્સે છુપી નહિ. વો બડી તાકત ઔર કુદરત વાલા હૈ. ઊસ્ને ઝમીન ઔર આસ્માન યાંદ - સુરજ - સિતારે - ફરિશ્તે આદમી જિન્નાત ગર્જ તમામ જહાનકો પયદા ક્રિયા હૈ. ઔર વહી તમામ દુનિયા કા માલીક હૈ. વહી મારતા હૈ. વહી જીલાતા હૈ યાની મખ્લુકકી મૌત ઔર ઝિંદગી ઉસીકે હુકમ સે હોતી હૈ. વહી તમામ મખ્લુક કો રોઝી દેતા હૈ વો ન ખાતા હૈ ન પીતા હૈ ન સોતા હૈ વો પુદ બપુદ હંમેશા સે હૈ ઔર હંમેશા રહેગા. ઊસ્કો કીસીને પૈદા નહિ કીયા ન ઊસ્કા બાપ હૈ ન બેટા ન બેટી ન બીવી ઔર કીસીસે ઊસ્કા રિશ્તા નહિ વો તમામ તઅલ્લુકાતસે પાક હૈ. સબ ઊસકે મોહતાજ હૈ વો કીસીકા મોહતાજ નહિ ઔર ઉસ્કો કીસી ચીજ કી હાજત નહિ વો તમામ ઐબોંસે પાક હૈ. વો મખ્લુક જૈસે હાથ-પાવ-નાક-કાન ઔર શકલસે પાક હૈ. ઉસ્ને ફરિશ્તોકો પૈદા કરકે દુનિયાકે ઈન્તેઝામો ઔર ખાસ-ખાસ કામોં પર મુકર્રર કીયા હૈ.

ઊસ્ને અપની મખ્લુકકી હિદાયત કે લીયે પયગંબર ભેજે કે વો લોગોંકો સચ્ચા મઝહબ સિખાએ. ઔર અચ્છી બાતેં બતાએ. ઔર બુરી બાતોંસે બચાએ.

ઈમાન નામા

ઈમાન કે ફર્ઝ :- દો હૈ.

- (૧) કલીમએ તેચ્ચબહ જુબાન સે પઢના
- (૨) ઊસ્કે મતલબ કો દીલસે સચ્ચા જાનના

કલિમા કે ફર્ઝ :- ત્રીન હૈ.

- (૧) જીંદગી મે એકબાર પઢના

- (૨) સહી પઢના
(૩) કોઈ પઢને કે લીએ કહે તો જલ્દી સે પઢના

ઈમાન સલામત રહને કી શર્ત :- ચાર હૈ.

- (૧) ઈમાન વાલા હોનેકી વજહસે ખુશહોના
(૨) ઈમાન કે જાતે રહેનેસે ડરતે રહના
(૩) ઈમાન સે મહરૂમ કરને વાલી ચીઝોં સે દુરરહેના
(૪) મુસલમાનોં પર મહેરબાન રહેના.

ઈમાન કે વાગુબાત :- બારહ હૈ.

- (૧) બિદઅત સે બચના.
(૨) નેક લોગોં કી સોહબત મે રહેના.
(૩) ખરાબ લોગોં સે દુર રહેના.
(૪) અચ્છે ઈન્સાનોં કો દીન કી તાલીમ દેના.
(૫) રિશ્તે દારોં સે મિલાપ રખના
(૬) દો ઝઘડને વાલે મુસલમાનોં મે સુલહ કરાના.
(૭) યતીમોં સે મુહબ્બત કરના.
(૮) ગરીબોં પર રહમ કરના.
(૯) ખ્યાસોં કો પાની પીલાના.
(૧૦) રાસ્તે સે કાટે-પત્થર-ગંદગી દુર કરના.
(૧૧) બિમાર કી ખબર પુછના.
(૧૨) મય્યત કો ગુસલ દેના.

ઈસ્લામ કે ફર્જ :- પાંચ હૈ

અલ્લાહ તઆલા ઓર રસુલેપુદા.(સ.અ.)કી પેરવી કરનેકો ઈસ્લામ કહેતેહૈ.

- (૧) કલિમએ શહાદત
(૨) નમાઝ
(૩) રોઝા
(૪) ઝકાત
(૫) હજજ

ઈસ્લામ કે વાગુબાત :- સાત હૈ.

- (૧) વિત્ર પઢના.

- (२) सड़क से किन्न अदा करना
- (३) कुर्बानी करना
- (४) ग़िम्त करना
- (५) माँ बाप की पेरवी करना
- (६) औरत को शोहरती ताबेदारी करना
- (७) महरम की परवरीश करना

इस्लामकी सुन्नते आठ हैं :-

- (१) पत्ना करना
- (२) सरके बाल कटना
- (३) नाक के बाल
- (४) ब्रुगल के बाल
- (५) मुँछ के बाल
- (६) नाक (दुँटी)के नीचे के बाल साफ़ करना
- (७) नाभुन कटना
- (८) दाढी रचना

नमाज़ का अर्थ

इस्लामकी दूसरी बुनियाद नमाज़ है. नमाज़ को अरबीमें "सलात" कहतेहैं. "सलात" सेलतुनसे बनाहै. सेलतुन अरबीमें तअल्लुक को कहतेहैं. पस. ईस सुरतमें नमाज़ को "सलात" ईसलीये कहतेहैं के नमाज़ पुदातआलाकी ईबादत और बंदगी करनेका अक पास तरीकाहै जो अल्लाह तआलाने और नबीअे अकरम(स.व.) ने बंदोको अल्लाह तआलासे पास तअल्लुक पैदा करनेके लीअे शीभाया. ये तअल्लुक कीसी और ईबादतसे हासिल नही होता.

(१) अल्लाह तआलाका ईशीद है "ईन्ससलात तन्हा अनीव इहशाअे वलमुन्कर."

नमाज़ तमाम बुराईयोसे रोककर ईन्सानको आदमीयतकी उद मे दाभील कर देती है.

(२) हुज़ुर (स.व.) ने ईशीद इरमाया जो शप्स ज़ान जुज़कर नमाज़ छोड दे तो तहकीक के ग़िस्ने कुफ़्र जैसा काम किया.

(३) हुजुर (स.व.)का ईशाद है जस शप्सकी अेक नमाजबी फीत डोगई वो अैसा है के गोया ठिस्की औलाद और माल दौलत सब छीन लीया गया.

(४) अलफरकु-अयनल अब्दी वल कुफरी तरकुस्सलात. "मुसलमान और काफ़ीर के दरम्यान फरक और सरहद नमाज है." (उदीस)

(५) वी कुले शयईन अलमुन व अलमुल ईमाने अस्सलातुं. "हर चीज़की कोई न कोई अलामत डोती है, और ईमानकी भास अलामत यानी पडेयान 'नमाज' है."

नमाजके लीये मस्जिदमें जल्दी जाना याहीये ताके अजानसे पडेले वुजु करके मस्जिदमें डखर रहो. अगर ये न डो सके तो अजान के बाद डोरन मस्जिदमें पडॉयनेकी कोशीष की जाअे

हर आकिल-बालिग मुसलमान मर्द-औरत पर रात दीन मे पांय वक्तकी नमाजे फर्ज है. ये पांय नमाजे ये है.

अवकाते नमाज

(१) नमाजे फ़जर :- ये नमाज सुब्ह सादिकके बादसे सुरज नीकलने के पडेले तक पढी जाती डय. मुस्तअब वक्त जब रोशनी डोजाये यानी सुरज तुलुअ डोनेसे आधा क्लाक पडेले पढनी याहीअे. कुल यार रकारें पढी जाती है.

डो रकात सुन्नत मुअक्कीदा.

डो रकात फर्ज.

मसअला :- फर्ज नमाज पढनेसे पडेले डो रकात सुन्नत पढना जरूरी है. अगर मस्जिदमे आने के बाद देभाके फर्ज नमाज की जमाअतभडी डो गई है. तो जब तक फर्ज नमाजका आभरी काईदा भीलनेकी ठिम्मीद डो तो डो रकअत सुन्नत पढकर जमाअतमे शरीक डो. अगर बिल्कुल जमाअत भीलनेकी ठिम्मीद न डो तो सुन्नत छोड कर जमाअतमें शरीक डो जाअे.

मसअला :- फ़जरकी नमाज पढनेमे ईत्नी देर डो गई के सुरज नीकलने तक सिई डो रकात पढ सकते है. तो सुन्नत छोड कर सिई डो फर्ज पढने याहीअे. सुन्नत सुरज तुलुअ डोने के बाद पढे.

मसअला : अगर सिई सुन्नत छुट गई तो सुन्नत की कज़ा नहीं. तुलुअे आइताबसे पडेले पढ लेना मकरूह है. और आइताब निकलने के बाद

પઢના મકરૂહ તો નહી. મગર વો સુન્નતે ન હોગી. નફીલ હો જાએગી.

મસ્અલા : ફજર કી સુન્નતે અગર ફઝલે સાથ કઝા હો જાએ તો ઝવાલ સે પહેલે ઉન્કો ફઝલે કે સાથ કઝા પઢલેના ચાહિએ. ઓર ઝવાલ કે બાદ પઢે તો સિફ ફઝલે કી કઝા કરે. (તાલીમુલ ઈસ્લામ - ૪)

(૨) નમાઝે જોહર :- યે નમાઝ ઝવાલકે બાદ પઢી જાતી હૈ. ઓર અંસલી સાયે કે અલાવા ડબલ સાયા હોને તક પઢી જા સકતી હૈ.

જોહરકી બારહ રકાતે પઢી જાતી હૈ.

૪ સુન્નતે મુઅકકેદહ, ૪ ફઝલ, ૨ સુન્નતે મુઅકકેદહ, ૨ નફીલ.

મસઅલા :- ફઝલ નમાઝ પઢનેસે પહેલે સુન્નત નમાઝ પઢના જરૂરી હૈ લેકિન અગર ફઝલ નમાઝકી જમાઅત ખડી હો જાએ તો પહેલે ફઝલ જમાઅતસે પઢે ફીર દો રકાત પઢે. ઊસ્કે બાદ ચાર સુન્નત પઢે.

(૩) નમાઝે અસર :- યે નમાઝ અસલી સાયે કે અલાવા ડબલ સાયા હો જાનેકે બાદસે સુરજ ગુરૂબ હોને તક પઢી જા સકતી હૈ. ઓર સુરજ પીલા હોને સે પહેલે પઢના મુસ્તહબ હૈ.

અસરકી આઠ રકાત પઢી જાતી હૈ.

૪ સુન્નતે ગૈર મોઅકકેદહ, ૪ ફઝલ.

મસઅલા :- અગર જમાઅત ખડી હોને મેં દેર હો તો ચાર રકાત સુન્નત પઢે. અગર જમાઅત ખડી હો ગઈ હોતો જમાઅતમેં શરીક હો જાએ સુન્નત નપઢે.

(૪) નમાઝે મગરીબ :- યે નમાઝ સુરજ ગુરૂબ હોને કે બાદ પઢી જાતી હૈ. ઓર સફેદ રોશની ડુબને તક પઢ સકતે હૈ. મુસ્તહબ યે હૈ કે સુરજ ગુરૂબ હોતે હી પઢી જાયે.

મગરીબકી કુલ સાત રકાતે પઢી જાતી હૈ.

૩ ફઝલ, ૨ સુન્નત, ૨ નફીલ

(૫) નમાઝે ઈશાં :- યે નમાઝ સફેદ રોશની ગાયબ હોનેકે બાદસે સુબ્હ સાદિક તક પઢી જા સકતી હૈ. મુસ્તહબ યે હૈ કે એક તિહાઈ (૧/૩) રાત તક પઢી જાએ. ઈશાં કી કુસ સતરહ રકાતે પઢી જાતી હૈ.

૪ સુન્નતે ગૈર મોઅકકેદહ, ૪ ફઝલ, ૨ સુન્નત, ૨ નફીલ, ૩ વિત્ર વાજીબ, ૨ નફીલ.

નમાઝે જુમ્આ :- યે નમાઝબી જોહર કે વક્તકે મુતાબીક પઢી જાતી હૈ. જો સબસે પહેલે જુમ્આકે લીએ જાતા હૈ ઊસ્કી બહોત ફઝીલત હૈ.

જુમ્આકી કુલ ચૌદહ રકાતે હૈ.

૪ સુન્નતે મોઅક્કેદહ, ૨ ફર્જ, ૪ સુન્નતે મોઅક્કેદહ, ૨ સુન્નતે મુઅક્કેદહ, ૨ નફિલ.

મસઅલા :- જુમ્આકે ફર્જ પઢનેસે પહેલે ઈમામ સાહબ મીમ્બર પર બેઠતે હૈ તો દુસરી અઝાન પહેલી સફમૈ ખરે હોકર યા જરા પીછે હટકર દી જાતી હૈ. જબ યે અઝાન શુરૂ હો જાએ તો બાતે કરના, નમાઝ પઢના, પાના-પીના, કીરીસે બાત કરના, કુરાન મજ્હૂદ પઢના, સલામ કરના વગેરહ નાજાઈહ હૈ.

મસઅલા :- ખુત્બેમે જબ હુઝુર (સ.અ.)કા નામ મુબારક આયે તો હાજેરીન દીલ મૈ દુરૂદ શરીફ પઢે. જુબાનસે પઢનેકી ઈજાઝત નહી.

અઝાનકા બયાન

જબ નમાઝકા વક્ત આતા હૈ. તો નમાઝસે કુછ દેર પહેલે એક શખ્સ ખરે હો કર જોર જોરસે અઝાનકે અલ્ફાઝ કહેતા હૈ. જીસ્કી શરૂઆત મદીના મુનવ્વરામૈ હીજરી સન-૧ મે હુઈ જીસ્કા કિસ્સા યું હૈ કે જબ હુઝુર (સ. અ.) હીજરત કરકે મદીના મુનવ્વરા તશરીફ લાયે તો મસ્જીદકી તામીર કી ગઈ. ઔર નમાઝ કે વક્ત એલાંકી જરૂરત હુઈ તો આપસમે મશ્વરા કીયા ગયા કુછ લોગોને કહા શંખ બજાયા જાયે. કુછને ભુલંદ જગાપર આગ જલાને કો કહા. હઝરત ઊમર (ર.દી.)ને રાયદી કે જબ નમાઝ કા વક્ત આ જાએ તો 'અસ્સલાતુ જામેઅતુન' કહેકર લોગોંકો ભુલાયા જાયે લેકિન કીસી બાત પર ઈત્તેફાક નહિ હુઆ.

ઈસી ફિકમૈ હઝરરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને ઝૈદ ઈબ્ને અબ્દીરબ્બેહી (ર.દી.)ને ખ્વાબ દેખા કે એક શખ્સ નાકુસ બજારહા હૈ આપને પુછા યે નાકુસ બેચોગે ?

ઊસ્ને કહા તુમ ઈસ્કો લેકર કયા કરોગે ? આપને કહા "નમાઝકા વક્ત હોગા તો ઈસે બજા કર મુસલમાનો કો નમાઝકે લીયે ભુલાઊગા."

ઊસ્ને કહામૈ ઊસ્સે જ્યાદા અસ્થા તરીકા બતાતા હું યે કહેકર ઊસ્ને નમાઝકે વક્ત કહેજાને વાલે કલેમાત જો આજ કલ અઝાનમે પઢે જાતે હૈ બતા દીયે. જબ આપ બેદાર હુએ તો હુઝુર (સ.અ.)કી ખીદમતે હાજીર હોકર અપના ખ્વાબ બયાન કીયા.

हुजुर (स.अ.)ने कहा ये ज्वाब हक है. और हजरते बिलाव (र.दी.) को बुलाया ताके वो कविमात याद करवे और जोरसे आज्ञान दे. ये सुन कर हजरत उमर (र.दी.) ठिठकर आये और इरमाया के मने ली यही ज्वाब देभा है. ये सुनकर रसुले अकरम (स.अ.)ने अल्लाहका शुक्र अदा किया और बेहद भुश हुअे. विसी वक्तसे अज्ञान की शुरुआत हुई जो आज तक जारी है. और कयामत तक जारी रहेगी. (ईन्शा अल्लाह)

सबसे पहले अज्ञान देनेके लीअे हजरत बिलाव (र.दी.)को मदीना मुनव्वरामें रसुले बुधा (स.अ.)ने इरमाया अय बिलाव ठिठे और अज्ञान दो नमाज के लीये.

अज्ञान के अल्फाज ये हे

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ	اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ	أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ	أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ
حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ	حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ
حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ	حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ	اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर,
 अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
 अशहदु अल्ला ईला-ह ईल्लल्लाह
 अशहदु अल्ला ईला-ह ईल्लल्लाह
 अशहदु अन्न मुहम्मदर्सुलुल्लाह
 अशहदु अन्न मुहम्मदर्सुलुल्लाह
 हय्य अलस्सलाह, हय्य अलस्सलाह,
 हय्य अललफलाह, हय्य अललफलाह,
 अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर,
 लाईलाह ईल्लल्लाह.

- (૧) ફઝરકી અઝાન મેં હય્ય અલલફલાહકે બાદ અસ્સલાતુ ખયરૂમ મિનન્નવમિ દો બાર જ્યાદા કરે.
- (૨) હય્ય અલલસ્લાહ કહેતો મુંહ દાયે તરફ ઓર હય્ય અલલફલાહ કહે તો મુંહ બાયે તરફ ફેરવે સીના ઓર પાવકી ઊન્ગલીયોં કો કિબ્લેકી તરફ સે નફેરે.
- (૩) જબ અઝાનકી આવાઝ સુને તો સુનનેવાલા ભી જવાબમે વહી અઢ્કાઝ દુહરાએજો અઝાનવાલા કહ રહા હૈ. મગર હય્ય અલલસ્સલાહ ઓર હય્ય અલલફલાહ કે જવાબમે “લાહવલ વલા કુવ્વત ઈલ્લા બિલ્લાહીલ અલીયીલ અઝીમ” ઓર ફઝરમે અસ્સલાતુ ખયરૂમ મિનન્નવમકે જવાબમે સદફતવબરરત કહેના ચાહીએ.
- (૪) અઝાનકે વક્ત હર શખ્સકો બાત-ચીત, સલામ ઓર ઊસ્કા જવાબ દેના વગેરહ છોડકર અઝાનકા જવાબ દેના ચાહીએ. હા નાપાંક આદમી ઓર પેશાબ, પાખાના, કરનેવાલેકો અઝાનકા જવાબ દેના દુરૂસ્ત નહીં.

અઝાન દેનેકા સવાબ :-

- (૧) અઝાન દેને મેં જો સવાબ હૈ અગર વો લોગોં પર જાહીર હો જાએ તો લોગ અઝાન દેનેકે લીએ આપસમે કિતાલ કરે.
- (૨) અઝાન કી અવાઝ સુનનેવાલે ઈન્સાન ઓર જાન્નાત ઓર હર ચીઝ કયામતકે દીન અઝાન દેનેવાલે કે લીએ ગવાહી દેંગે.
- (૩) અલ્લાહ તઆલાકા “દસ્તે રહમત” મુઅઝિઝન કે સર પર રહેગા. ઓર જહાં તક ઊસ્કી આવાઝ પહોંચતી હૈ, હર ચીઝ ઊસ્કે લીએ મગફેરતકી દુઆએ માંગતી હૈ.

અઝાનકે બાદ ચે દુઆ પઢો :-

اللَّهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ
التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ

ઝાન દેને કે બેદ
યે દુઆ પઢો

اِتِّحَمَدَ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا
مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ اِنَّكَ لَا تَخْلِفُ الْمِيْعَادَ

અલ્લાહુમ્મ રબ્બ હાઝિહિદ્ દુઆવિતામ્મતિ વસ્સલાતિલ્ કાઈ-મતિ આતિ મુહમ્મદ-નિલ્ વસીલત વલ ફઝીલત વબ્અષુ મકામમ્ મહમુદનિલ્લઝી

वअत्तु - छन्नक लातुष्लिङ्गुल भीआद.

तकबीर या ईकामत :-

- (१) जमाअत पडी छोनेके वक्त अक शप्स अजानकी तरल अड्काज छिन्ने ओरसे पढे के नमाजी सुन सके. ओस्की तकबीर या ईकामत कहेले है. सीई थोडासा ईई है. तकबीर में 'हय्य अललक़लाह' के बाद 'कद कामतिससलाह, कद कामतिससलाह' दो भरतबा केहना याहीअे. ईकामतके अड्काज जल्दी जल्दी पढना याहीअे.
- (२) ईकामत केहने का "हक" मुअज्जिनको छोता है. मुअज्जिनकी ईजाजतसे दूसरा भी केह सकता है.
- (३) अगर ईमाम ईकामत कहे तो कद कामतिससलाहके वक्त आगे बढ जाअे और बाकी ईकामत पुरी करे. (दुई मुप्तार)

पुरुं का ग्यान

इगीलत :-

- (१) हजरत ओस्मान भीन अक़्फ़ान (२.दी.) से रिवायत है के हुजुर रसुले मुदा (स.अ.)ने फरमायाके छस्ने पुरुं कीया और भुब अख़्शी तरल पुरुं क़िया. ओस्के गुनाह ओस्के बदनसे ज़ड (भरी जशे.) जायेगें. यहां तक के ओस्के नाभुनके नीचेसेभी गुनाह ज़ड जायेगें. (मुस्वीम शरीफ़)
- (२) हजरत अबु हुरैर (२.दी.)से रिवायत है के मेंने हुजुर (स.अ.)को ये ईशार्द फरमाते सुना "बेशक कयामतके दीन मेरी ओम्मतको लाया जायेगा और ओन्के चेहरे और हाथ पाव पुरुंकी वजहसे यमक रहें छोंगे. पस तुममे से जो शप्स अपनी पेशानीकी यमक तवील (वंबा) कर सकता है वो अैसा करे (याने पेशानीके छस छिस्सेको धोना पुरुंमें ईई है ओस्से जयादा धोवे.) (बुभारी- मुस्वीम शरीफ़)
- (३) अक हदीसमें ईशार्द है जो शप्स घरसे पुरुं करके सीई नमाजकी नियतसे मस्जिदमे जाये तो ओस्के हर कदमपर अक नेकीका ईजाफ़ा (वधारो) और अक भता (गुनाह)की मुआफ़ी छोती यली जाती है.

- (૪) એક ઓર હદીસમાં આયા છે કે જો શખ્સ ઘરસે વુઝુ કરકે નમાઝકે લીએ જાએ વો એસા છે જેસા ઘરસે એહરામ બાંધકર હજજકો જાયે.

(ફઝાઈલે નમાઝ)

વુઝુકે ચાર ફર્મ હૈ :-

- (૧) પેશાની કે બાલોસે હુઝીકે નીચે તક ઓર દોનો કાનો કે લવ તક મુંહ ધોના.
- (૨) દોનો હાથ કોહનીયો સમેત ધોના.
- (૩) ચોથાઈ સરકા મસહ કરના.
- (૪) ટખનો સમીત દોનો પાવ ધોના.

વુઝુકી સુન્નતોં ગ્યારહ હૈ :-

- (૧) વુઝુકી નિચ્ચત કરના
- (૨) શુરૂમાં બિસ્મિલ્લાહ પઢના.
- (૩) દોનો હાથ કલાઈ તક ધોના.
- (૪) કુલ્લી કરના
- (૫) મીસ્વાક કરના
- (૬) નાકમાં પાની ડાલના.
- (૭) હર ઊજવ (અવયવ)કો ત્રીન બાર ધોના.
- (૮) પુરે સર ઓર કાનોકા મસહ કરના
- (૯) દાઢી ઓર ઊન્ગલીયોંકા ખિલાલ કરના.
- (૧૦) લગાતાર ઈસ તરહ ધોના કે પહેલા ઊજવ ખુશક ન હોને પાવે દૂસરા ધોલીયા જાએ.
- (૧૧) તરતીબસે વુઝુ કરના યાની પહેલે મુંહ ફીર કોહનીયો સમીત હાથ ધોએ. ફીર સરકા મસહ કરે. ફીર પાંવ ધોએ.

ફાયદા :- સુન્નત છુટનેસે વુઝુ હો જાતા હૈ. મગર સવાબમાં કમી હોજાતી હૈ. ઓર આખેરતમાં પકડકા ખૌફ હૈ.

વુઝુકે મુસ્તહબ્બાત :-

- (૧) દાહની તરફસે શુરૂ કરના કુછ ઓલમાને ઊસ્કો સુન્નતોં મેં શુમાર કીયા હૈ. ઓર યહી કવી હૈ.
- (૨) ગરદનકા મસહ કરના.
- (૩) વુઝુકે કામકો ખુદ કરના દૂસરે સે મદદ ન લેના.

- (४) डिब्बेकी तरफ़ मुंह करके बैठना.
 (५) पाक और गिरी जगह पर बैठकर पुरु करना.

नवाकीजे पुरु :- जिन चीजोंसे पुरु टूट जाता है उनको नवाकीजे पुरु कहते है वो आठ है.

- (१) पेशाब-पाभाना करना या इन दोनो रास्ते से किसी और चीजका नीकलना
 (२) रीह यानी हवा का नीकलना.
 (३) बदनसे पुन या पीप का नीकल कर बेह जाना.
 (४) बिमारी या किसी वजहसे बेहोश होजाना.
 (५) मुंह बरके (गिळ्टी) करना.
 (६) सडारा (टेका) लगाकर या बेट कर सोजाना.
 (७) मजनुन यानी पागल हो जाना.
 (८) नमाजमें केहकहा (भडभडाट) मार कर हसना.

(तालीमुल ईस्लाम)

पुरु करनेका तरीका :-

अप्यल नियत करे यानी "अत-वददुलि वीरुई-ल हदस." पढो
 डीर बिस्मिल्लाह पढकर दोनों हाथ पहोंयो तक धोये. डीर तीन बार कुल्ली करो बिस्वाक न होतो गि-गलीसे दात मल लो. डीर तीन बार नाकमें पानी डाले और बाये हाथसे नाक साफ़ करे. डीर तीन भरतभा मुह धुवो. मुह पर पानी जोरसे नमारो. मुहको पेशानी के बालोंसे हुडी के नीचे तक और ईधर गिधर दोनों कानो तक धोना याहीये. डीर कोहनीयो समीतदोनो हाथ धोवो. पहेले दाहना हाथ तीन बार डीर बाया हाथ तीन बार धोना याहीये. डीर हाथ पानीसे बीगो कर सरका मसह करो. डीर कानोंका मसह करो. डीर गरदनका मसह करो. मसह सीई अेक भरतभा करना याहीअे. डीर तीन भरतभा दोनों पाव टपनो समीत धोवो. पहेले दाहना पांव डीर बांया पाव धोना याहीअे. पुरु करने के बाद ये हुआ पढो.

अशहदु अल्लाईलाह ईल्लल्लाहु- वददुदु लाशरी-क लहु वअशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुदुवरसुलोह. अल्लाहुम्मज् अलनी भिनत्वाभीन वज्जअलनी भिनल् मुत-तहडिरी-न.

ईस हुआकी पढनेवालों के लीअे जन्नतके दरवाजे भोल दीये जाअेंगे.

जस दरवाजे से याहे जन्तमें दापील हो.

(बेडशतीजेवर)

हर ईर्ज नमाजके वीअे ताजा वुजु करना बेहतर है. ये वी अङ्गल है के मोनीन हंमेशा वुजुकी डालतमें रहे. कयोके वुजुं मोमीन के वीअे डुथियार कडा गया है. वुजुं की डालतमें शयतान मोमीन के करीब आनेकी छिम्मत नहीं करता.

तयम्मुम का अयान

तयम्मुम कीसको कहेते हैं :- अरबी में ईरादा करने को कहेते है. और शरीयतमें मतलबये होता है के वुजुं या गुसल की जरूरत के वक्त पानी की बजाये पाक भीट्टी ईस्तीअमाव करना - ईस्को तयम्मुम कहेते हैं.

तयम्मुम करने का तरीका :- ये हे के दोनों हाथ पाक जमीनपर मार कर यहेरे पर ईस तरड डेरे के बाव बराबर वी जगा न छुटे. (अगर जयादा भीट्टी लग जाये तो मुंह से हुंक मारकर कम कर दी जाये.) डीर दुसरी भरतबा दोनों हाथ जमीन पर मारकर कडॉनियुं समेत दोनों हाथों पर डेरे

उंगलियों की तरफ से हाथ डेरना शुडू कीया जाये - ईस तरड के पडेले बायें हाथ की चारों उंगलीया सीधे हाथ की उंगलियों के सीरे के नीचे रभकर भीयता हुआ कोडनी तक ले जाये. ईस तरड ले जाने में सीधे हाथके नीचे की तरफका मसल हो जायेगा. डीर बायें हाथ की डथेवी सीधे हाथ के उपर की तरफ रभकर कोडनीसे उंगलीयों तक भीयता हुआ लाये. और बाये हाथ के उपर की तरफ रभकर कोडनीसे उंगलीयों तक भीयता हुआ लायें. और बाये हाथ के अंगुठे के अंदर की जानिब को सीधे हाथ के अंगुठे की पुशत पर डेरे डीर ईसी तरड सीधे हाथ को बाये हाथ पर डेरे.अगर अंगुठी पडेने हो तो उसको उतारना या डीखाना जरूरी है. और उंगलीयोंमे बिलाव करलीया जाये. ताके कोई छिस्सा छुटन जाये तयम्मुमका यही अेक तरीका है.

तयम्मुम के ईर्ज तीन हैं :-

- (१) डदसे असगर या डदसे अकबर से पाक होने की न्थित करना.
- (२) दोनों हाथ पाक भीट्टी पर मार कर मुंह पर डेरना.

- (३) दोनों हाथ पाक मीट्री पर मार कर दोनों हाथों पर कोहनीयों समेत डेरना

तयम्मुम कल कर सकते हैं :- उस वक्त कर सकते हैं जब के

- (१) पानी पोने दो किलोमीटर दूर हो
- (२) अपने तशुरबे (अनुभव) या किसी पक्के हकीम के डेहने से ईस बात का डर होके पानी ईस्तीअमाल करने से बिमारी बढ जायेगी.
- (३) पानी ईत्ना थोडा हो के अगर वुछु करे तो प्यासा रेह जानेका भतरा हो
- (४) कुंवा हो मगर रस्सीडोल न हो.
- (५) पानी मौजूद हो मगर भुद उठकर न ले सकता हो. और कोई देनेवाला मौजूद न हो.
- (६) ईदैन-या नमाजे जनाजा न भीलने का भतरा हो.

वो चीजें जून पर तयम्मुम किया जा सकता है

पाक मीट्री-रेत-पत्थर-युना-मीट्री के क्ये या पक्के भरतन जूनपर रोगन नहो मीट्री की क्ये पक्की ईटे-मीट्री-पत्थर युना या ईटो की दीवार - इन चीजों पर गुबार होना जरूरी नहीं. गुबार न हो तब भी ईस पर तयम्मुम जाईज है.

वो चीजें जूनपर तयम्मुम करना जाईज नहीं

लकडी-लोहा-सोना-यांटी-तांबा-पित्तल-अेल्युमिनियम-शीशा-रांग-जसत-गेहुं-जव और तमाम गल्ले (अनाज) कपडे राभ-इन तमाम चीजों पर तयम्मुम करना जाईज नहीं

यु समजो के जो चीजें आग में न जले और न पीघले वो चीजें मीट्री की कीसम से हैं उस पर तयम्मुम दुरस्त है.

और जो चीजे जलकर राभ हो जाये या पीघल जाये उस पर तयम्मुम करना दुरस्त नहीं.

पुलासा :- (१) जब कोई बताने वाला न हो और कीसी दूररे तरीके से पानी कापता न यले या पानी का पता यले लेकिन पोने दो किलोमीटर से दूर हो तो डीर पानी लाना जरूरी नहीं तयम्मुम कर लेना याहीये. (२) ओक तयम्मुम से जबतक वो न तूटे जल्ने वक्तों की याहों नमाज पढ सकते हो. ईसी तरह ईज नमाज - नईल नमाज - कुआन मज्द की तिलावत जनाजे की नमाज - और सिजदअे तिलावत

ઔર તમામ ઈબાદતે જાઈઝ હૈ.

- (૩) પાની મૌજુદ હો તો કુર્આન શરીફ છુને કે લીયે તયમ્મુમ કરના દુરસ્ત નહીં.
- (૪) પાની પોને દો કિલોમીટર દૂર નહીં. લેકીન વકત તંગ હે. અગર પાની લેને જાયે તો વકત જાતા રહેગા - તો ભી તયમ્મુમ દુરસ્ત નહીં બલકે પાની હાસિલ કરકે. વુઝું કરે અગર વકત નિકલ જાયે તો નમાઝ કઝા પઢે.
- (૫) અગર જમીન પર પેશાબ વગેરહ કોઈ નાપાકી ધુપસે સુક ગઈ ઔર બદબુ ભી જાતી રહી તો જમીન પાક હો ગઈ. ઉસ પર નમાઝ પઢના દુરસ્ત હૈ. લેકીન તયમ્મુમ કરના દુરસ્ત નહીં.
- જબ માલુમ હો જાયે કે જમીન પાકહે તો દુરસ્ત હૈ અગર માલુમ ન હો તો વહેમ ન કરે.

જ્યાદા મસાઈલ દૂસરી બડી કીતાબોં મેં દેખે.

ફરાઈઝે નમાઝ

નમાઝકે ચૌદહ (૧૪) ફર્ઝ હૈ. જન્મે સે ચંદ એસે હૈ કે જન્કા નમાઝ સે પહેલે હોના જરૂરી હૈ. ઊન્કો પારજી ફરાઈઝ કહેતે હૈ. ઔર શરાઈતે નમાઝ ભી કહેતે હૈ. ઔર ચંદ ફરાઈઝ એસે હૈ જો દાખીલે નમાઝ હૈ. ઊન્કી ફેહરિસ્ત યે હૈ.

(૧) બદન કા પાક હોના. (૨) કપડોં કા પાક હોના. (૩) સતરકા છુપાના. (૪) જગા કા પાક હોના. (૫) નમાઝ કા વકત હોના. (૬) કિબ્લેકી તરફ મુંહ કરના (૭) નમાઝકી નિયત કરના. (૮) તકબીરે તહરીમા કેહના (૯) કિયામ યાની પડા હોના (૧૦) કીરાઅત કરના યાની એક બડી આયત યા તીન છોટી આયતે યા એક છોટી સુરત પઢના. (૧૧) રૂકુઅ કરના. (૧૨) સિજદા કરના. (૧૩) કાઈદે અખીરહ કરના. (૧૪) અપને ઈરાદે સે નમાઝકા પતમ કરના.

* અગર ઈન્મેસે કોઈભી ચીજ જાન કર યા ભુલસે રહ જાયે તો સિજદાએ સહવ કરને સે ભી નમાઝ નહીં હોગી. બલકે નમાઝકા લોટાના લાઝીમ ઔર ફર્ઝ હોગા.

વાઝુજાતે નમાઝ :- નીચે લીખી હુઈ ચીઝે નમાઝમે વાજબ હૈ.

- (१) सुरअे फातिहा पढना (२) सुरअे फातिहा के बाद कोई दूसरी सुरत मिलाणा (३) फर्ज की पहेली दो रकतों में किराअत करना
 (४) सुरअे फातिहा को सुरत से पहेले पढना.
 (५) रुकुअके बाद सीधा पडा होना (६) दोनों सिजदो के दरम्यान बेठना.
 (७) पहेला कायदा करना. (८) अत्तहिय्यात पढना
 (९) लङ्गे सलाम से नमाज पत्न करना.
 (१०) जहोर और असरमे किराअत आहिस्ता करना.
 (११) ईमाम के लीये मगरिब और ईशांकी पहेली दो रकतोंमें और फजर - जुम्मा - ईदैन - तरावीह की सब रकतों में किराअत बुलंद अवाज से करना.
 (१२) वित्र मेंदुआअे कुनुत पढना.
 (१३) दुआअे कुनुत से पहेले तकबीर केहना.
 (१४) ईदैन में छे ज्यादा तकबीरें केहना.

ईन वाज्जबातमें अगर कोई वाज्जब तुलसे छुट जाअे तो सिजदअे सहव करना वाज्जब है. और अर जान बुजकर वाज्जबको छोड दे तो नमाज दोबारा पढना वाज्जब है.

सिजदअे सहवका तरीका : कीसी वाज्जब का तुलसे छुटजाने से या दो भरतबा अदा हो जाने या कीसी फर्जमे ताभीर होने से सिजदअे सहव वाज्जब होता है.

सिजदअे सहव का तरीका ये है के आपरी कायदे में तशलहुद पढकर अेक तरफ सलाम फेरकर दो सिजदे करें. उसके बाद बेठकर अत्तहिय्यात और दुवद शरीफ और दुआ पढकर सलाम फेरें. दोनों ईदों की नमाज और हर बडी जमाअतमें सिजदअे सहव मआफ हो जाता है.

(नमाज की बडी किताबा)

नमाज पढनेकी तरकीब

जब नमाज पढनेका ईरादा करो तो पहेले अपना बदन छोटी बडी नापाकीसे पाक करलो और पाक कपडे पहन कर पाक जगा पर किब्ले की तरफ मुंह करके ईसतरह पडे हो के दोनों कदमों के दरम्यान यार गिन्गलया उसके करीब करीब फासला रहे. फीर जो नमाज पढनी है. उसके निम्नत

દીલસે કરો ઔર જબાનસે કેહલો તો અચ્છા હૈ. ફીર દોનોં હાથ કાનો તક ઊઠાઓ હાથો કી ઊન્ગલીયાં ઔર હથેલીયાં કિબ્લારૂમ રહે ઔર અંગુઠે કાનોકી લવ તકહો. ઔર ઊન્ગલીયાં ખુલી રહેં ઊસ વક્ત “અલ્લાહુ અકબર” કહેકર દોનોં હાથ નાફકે નીચે. બાધ લો. સીધે (જમણા) હાથકી હથેલી બાયે હથેલી કી પુશ્ત પર રહે. ઔર અંગુઠે. ઔર ઉનગલીયોંસે હલ્કા કે તૌર પર ગટ્ટે (કાંઠે કો પકડ લો ઔર બાકી તીન ઊન્ગલીયા કલાઈ પર રહે. નજર સિજદેકી જગા પર રહે. હાથ બાધકર આહિસ્તાસે સના પઢો ફીર અઊઝુબિલ્લાહ. ફીર બિસ્મિલ્લાહ પુરી પઢકર અલ્હમ્દુ શરીફ કી સુરત પઢો જબ વો પુરી હો જાયે તો આહીસ્તાસે આમીન કહો ફીર કોઈ સુરત યા બડી એક આયત યા છોટી તીન આયત પઢો (અગર ઈમામકે પીછે નમાઝ પઢતે હો તો સના પઢકર ખામોશ ખડે રહો) (અઊઝુબિલ્લાહ બિસ્મિલ્લાહ સુરએ ફાતિહા વગેરહ કુછ ન પઢો) કીરાઅત સાફ ઔર સહી પઢો જલ્દી ન કરો ફીર અલ્લાહુ અકબર કહતે હુએ રૂકુઅ મે જાઓ ઊન્ગલીયોકો ખોલકર ઊન્સે ઘુટનોંકી પકડો પીઠ કો ઐસા સીધા કરલો કે અગર પાનીકા ધ્યાલા રખ દીયા જાએ તો ઠીક રખા રહે. સર કો પીઠકી સીધમે રખો ઊંચા નીચા નરખો. હાથ પસલીયોંસે અલાહિદા રખો. ઔર પીઠલીયા સીધી ખડી રહે. ફીર રૂકુઅકી તસ્બીહ તીન યા પાંચ મરતબા પઢો ફીર સમીઅલ્લાહુ લીમન હમિદહ કહેતે હુએ સીધે ખડે હો જાઓ ઔર રબ્બના લક્લહમ્દ ભી પઢલો.

અકેલા નમાઝ પઢનેવાલા દોનોં કહે. ફીર તકબીર કહેતે હુએ સિજદે મેં જાઓ. પહેલે દોનોં ઘુટને ફીર દોનોં હાથ ફીર નાક ફીર પેશાની યાની (માથા ઔર નાક દોનો) રખો (સિજદે મેં કુલ સાત ચીજે જમીન પર રખો) ચહેરા દોનોં હથેલીયોં કે દરમ્યાન ઔર અંગુઠે કાનકે બરાબર રહે. હાથોં કી ઊન્ગલીયા મીલી હુઈ રખો તાકે સબકે સીરે કિબ્લે કી તરફ રહે. કોહનીયાં પસલીયોંસે ઔર પ્લેટ રાનોંસે અલાઈદા રહે પાંચ મરતબા સુબ્હાન રબ્બિયલ આ'લા પઢો ફીર પહેલે પેશાની ફીર નાક ફીર હાથ ઊઠાકર અલ્લાહુ અકબર કહેતે હુએ ઊઠો. ઔર સીધે બેઠ જાઓ ફીર અલ્લાહુ અકબર કેહકર દુસરા સિજદા કરો ફીર અલ્લાહુ અકબર કહતે હુએ ઊઠો. ઊઠને સે પહેલે પેશાની ફીર નાક ફીર હાથ ફીર ઘુઠને ઊઠાકર પંજો કે બલ સીધે ખડે હો જાઓ ઔર ખડે હોકર હાથ બાંધલો. ઔર બિસ્મિલ્લાહ ઔર સુરએ ફાતિહા ઔર કોઈ સુરત પઢો (અગર ઈમામકે પીછે હો તો કુછ ન પઢો) ફીર ઈસી કાએદેસે રૂકુઅ -કવમા- સિજદા-જલ્લા દુસરા

सिजदा करो दूसरे सिजदेसे उठकर बाया पाव बिछाकर जिस पर बैठे जाओ दाहना पाव पडा रहो दोनोपावकी उंगलीयोके सर किब्लेकी तरफ रहे. और दोनो हाथ रान पर रहो. (और अत्तखियात पढोजब अशहदुअल्लाईलाह पर पढोयो तो सीधे हाथ के अंगुठे और भीयकी उंगलीसे हलका बांध लो और उंगलीयोके सर किब्लेकी तरफ रहे. और दोनो हाथ रान पर रहो और अत्तखियात पढोजब अशहदुअल्लाईलाह पर पढोयो तो सीधे हाथ के अंगुठे और भीयकी उंगलीसे हलका बांधलो और छुंगलीया और जिसके आस-पास वाली उंगलीको बंद करलो और कल्माकी उन्ली बंद करलो और कल्माकी उंगली उठा कर ईशारा करो लाईलाहा पर उंगली उठाओ और ईल्लल्लाह पर जुका दो.और ईसी तरह हलका बांधे रहो. तशहहुद पतम करके अगर दो रकात वाली नमाज़ है तो दुदुद शरीफ पढो ईस्के बाद हुआ पढो डीर पहले दाहनी तरफ डीर बाई तरफ सलाम डेरो. दोनो तरफ सलाम डेरने में दोनो तरफ मुंड डेरो. दाहनी सलाममे दाहनी तरफके इरिशतो और नमाज़ीयोकी नियत करो और बाई सलाममे बाई तरफके इरिशतो और नमाज़ीयोकी नियत करो और जोस तरफ ईमाम हो उस तरफके सलाममे ईमामकी ली नियत करो. और ईमाम दोनो सलामोमे मुकतदीयोकी नियत करे.

और अगर तीन या रकात वाली नमाज़ है तो तशहहुद के बाद दुदुदशरीफ न पढे. बढे तकबीर कहते हुअे पडे हो जाओ. और तीसरी और चौथी रकात अगर इन् नमाज़ है तो ईस्के काअेदेसे और वाज्जब या नफील है तो ईस्के काअेदेसे पुरी करके सलाम डेर हो.सलाम केबाद.

अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु वमिन्कस्सलामु तभारकत या जल जलालि वल ईकराम. और

अल्लाहुम्म अईन्नी अला जिक्रीक वशुक्रिक वहुस्नि ईबादति-क पढो और ये ली मसनून है.

लाईलाह ईल्लल्लाहु वहदहु ला शरीकलहु लहुलमुल्कु वलहुल हम्दु वहुवअला कुल्लीशयईन कदीर.

अल्ला हुम्म ला मानीअ लीमा आ'तयत वला मु'अतीय लिमा मनरत वला यनईउि जल्लु जददे मिनकल जददी

ईमामके पीछे : नमाज़ की नियत करते वक्त ईमाम के पीछे नमाज़ पढने की नियत जरूर की जाये. नमाज़ का कोई अमल ईमाम से पहले हरगीज़ न किया जाये. हर बातमें ईमामकी पेरवी करना जरूरी है.

નમાઝ કે આદાબ

નમાઝ મે ઈધર ઉધર મત દેખો બલકે કિયામતી હાલમે સિજદેકી જગા પર ઓર રૂકુઅ મે કદમ પર ઓર સિજદેમે નાક પર ઓ કાગટેમે ગોદ પર ઓ સલામ ફેરતે વક્ત કંધો પર નજર રખો. અદબસે પડે રહો. હરકત ન કરો અલ્લાહ કી તરફ ધ્યાન રખા. (ઈસ્લામીતઅલીમ)

નમાઝે વિત્ર

વિત્રકી નમાઝ વાજબ હૈ ઈસકે પઢનેકી તાકીદ ફર્જ નમાઝો કે બરાબરહૈ. ઓર છુટ જાએ તો કજા વાજબ હૈ. બગેર ઊઝરકે જાન બુઝકર છોડના ગુનાહ હૈ.

નમાઝે વિત્રકી ત્રીન રકાતે હૈ. નમાઝ કા જો તરીકા હૈ ઊસી તરીકે સે નમાઝ પઢી જાતી હૈ. મગર ફર્ક ઈતના હૈકી ત્રીસરી રકાતમે અલહમ્દુ શરીફ કે બાદ કોઈ સુરત પઢે ફીર દોનો હાથ કાનોં તક ઊઠા કર તકબીર કહે ફીર હાથ બાંધકર દુઆએ કુનુત પઢે.

وَعَارِفَاتٌ يَهِي

اللَّهُمَّ إِنَّا سَتَعِينُكَ
 وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِي
 عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنُحْلَعُ
 وَنَتْرُكَ مَنْ يَفْجُرُكَ اللَّهُمَّ أَيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ
 نَصَلِي وَنَسْجُدُ وَالْيَاكَ نَسْعِي وَنُحْفِدُ وَنَرْجُو رَحْمَتَكَ
 وَنُخْشِي عَذَابَكَ إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَفَّارِ مُلْحِقٌ

અલ્લાહુમ્મ ઈન્ના નસ્તઈનુ-ક વનસ્તઈફરુક વનુઅમિનુબિક
 વન-તવક્કલુ અલયક વનુખી અલયકલ્-ખર વનશ્કુરુ-ક વલા નક્ફરુ-ક

વનખલગિ વનતુકુ મંચૂફજરુ-ક, અલ્લાહુમ્મ ઈથ્યા-ક નઅબુદુ વલ-ક નુસલ્લી
વનસ્જુદુ વ ઈલયફ નસ્આ વનહફિદુ વનર્જુ રહમત-ક વનખ્શા અઝાબક
ઈન્ન અઝાબ-ક બિલ્કુફફારિ મુલ્હક

કીસીકો દુઆએ કુનુત યાદ ન હોતો

રબના આતિના ફિદ્ દુન્યા હસનતંવ વફીલ આબેરતિ હસનતંવ વકિના
અઝાબન્નાર પઢના ચાહીએ.

રમજાન શરીફમેવિત્ર કી નમાઝ જમાઅતસે પઢી જાતી હે. અગર
મુકતદીને પુરી દુઆએ કુનુત નહી પઢી હે ઔર ઈમામને રૂકુઅ કર દીયા
તો મુકતદી દુઆએ કુનુત પઢના છોડ દે. ઔર રૂકુઅમે ચલા જાએ.

નમાઝે તરાવીહ

નમાઝે તરાવીહ મદે ઔર ઔરતોં દોનોકે લીએ સુન્નતે મુઅક્કિદા
હે ઔર જમાઅતસે પઢના સુન્નતે કિફાયા હૈ. યાની અગર મહેલ્લેકી
મસ્જીદમે નમાઝે તરાવીહ જમાઅતસે પઢી જાએ ઔર કોઈ શખ્સ અકેલા
ઘરમે પઢલે તો ગુનેહગાર ન હોગા. લેકીન અગર તમામ મહેલ્લેવાલે
જમાઅતસે ન પઢે તો સબ ગુનેહગાર હોગે.

નમાઝે તરાવીહ કા વક્ત ઈશાકી નમાઝકે બાદસે ફજર તક હૈ.
નમાઝે વિત્ર સે પહેલે ભી ઔર ઈસ્કે બાદભી ઊસકા વક્ત હૈ. અગર
કીસીકી તરાવીહ કી કુછ રકાતે રહ ગઈ હો ઔર વિત્રકી નમાઝહોને લગે
તો યે શખ્સ ઈમામકે સાથ વિત્રમે શરીક હો જાએ વિત્રકે બાદ તરાવીહકી
છુટી હુઈ રકાતે પુરી કરલે તો જાઈઝ હે.

તરાવીહકી બીસ (૨૦) રકાતે દસ સલામોકે સાથ મસનુન હૈ. યાની
દો-દો રકાતોસે પઢે. તરાવીહ કી નમાઝ મે ખડે હોનેકી તાકત હોતે હુએ
સુસ્તીમે બેઠકર પઢના મકરૂહ હૈ. કુછ લોગ બેઠે રહેતે હૈ જબ ઈમામ રૂકુઅ
કરતા હૈ તો યે નમાઝમે શરીક હોતે હૈ. યે મકરૂહ હૈ શુરૂ રકાતસે શરીક
હોના ચાહીએ.

અગર કીસીકો ઈશાં કી ફર્જ નમાઝ જમાઅતસે નહી મીલી તો તન્હા
ફર્જ પઢકર તરાવીહમેશરીક હોના જાઈઝ હૈ. (તાલીમુલ ઈસ્લામ)

હર તરાવીહ કે બાદ યાની ચાર રકાતોકે બાદ થોડા આરામ કર લેના
મુસ્તહબ હૈ. જીતની દેર બેઠે તો ચાહે ખામોશ રહે. યા કુર્આન મજીદ

પઢે. યા તસ્બીહ પઢે અગર યાદ હો તો યે તસ્બીહ પઢે.

سُبْحَانَ ذِي الْمَلِكِ وَالْمَلَكُوتِ وَسُبْحَانَ
ذِي الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ
وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبْرُوتِ وَسُبْحَانَ الْمَلِكِ
الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَلَا يَمُوتُ سُبُوْحٌ قُدُّوسٌ
رَبُّ أَرْبَابِ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ وَاللَّهُمَّ
أَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مَجِيْرُ يَا مَجِيْرُ

સુબ્હાનઝીલ મુલકી વલ્-મલકુતિ-સુબ્હાન ઝીલ ઈઝતિ- વલઅઝમતિ-
વલહયબતિ- વલ-કુદરતિ-વલ - કિબ્રીયાઈ વલ જબરૂત. સુબ્હાનલ મલિકીલ
હયીલ્લઝી લા યનામું વલા યમુતુ સુબ્હુલુન કુદ્દુ સુન-રબુના વરબુલ
મલાઈકતિ વરૂહ. અલ્લા હુમા અજરના મિનનાર - યામુજૂર યા મુજૂર યામુજૂર
નોટ :- તમામ ઓલમાએ કિરામ કા ફત્વા હૈ કે નાબાલિગ બચ્ચે કો
તરાવીહમે ઈમામ બનાના જાઈઝ નહિ.

નમાઝે ઈદેન

ઈદકે દીન યે કામ સુન્નાત ઓર મુસ્તહબ હૈ. ગુસ્લ કરના. મિસ્વાક
કરના. અચ્છા લિબાસ પહેનના. ખુશ્બુ લગાના. ઓર ઈદૂલ ફિત્ર મેં
ઈદગાહ જાને સે પહેલે ખુજુર યા મીઠી ચીઝખાના સદકએ ફિત્ર અદા
કરનાં. ઓર ઈદૂલ અદહામે નમાઝ કે બાદ અપની કુર્બાનીકા ગોશત ખાના.
ઈદગાહમેં ઈદકી નમાઝ પઢના. પેદલ જાના. ઈદકી નમાઝ પઢનેસે પહેલે
ઘરમેં યા ઈદગાહમેં નફીલ નમાઝ ન પઢના ઓર ઈદકી નમાઝ કે બાદ
ઈદગાહમે નફીલ નમાઝ ન પઢના ઈદગાહમેં તકબીર પઢતે હુએ જાના
મુસ્તહબ હૈ. તકબીર યે હે. અલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર લાઈલાહા
ઈલ્લલ્લાહુ વલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર વલિલ્લાહીલ હમ્.

તરકીબે નમાઝ :- નમાઝે ઈદકા વક્ત ઈશરાક સે લેકર ઝવાલ તક હૈ.
દોનોં ઈદોંકી નમાઝ કે લીયે અઝાન ઓર તકબીર નહી હૈ. પહેલે નિચ્ચત

કરે “મેં ઈદુલકિત્ર યા ઈદુલ અદલા કીવાજીબ નમાઝ છે ઝાઈદ તકબીરોં કે સાથ ઈસ ઈમામકે પીછે પઢતાહું ફીર તકબીર કેહકર હાથ બાંધલે. ઔર “સના” પઢે ફીર દોનોં હાથ કાનોં તક ઊઠાતે વક્ત “અલ્લાહુ અકબર” કેહકર દોનોં હાથ છોડ દે. ફીર દુસરી બાર હાથ કાનોં તક ઊઠાતે હુએ “અલ્લાહુ અકબર” કહે ઔર હાથ છોડ દે. ફીર તીસરી બાર હાથ કાનોં તક ઊઠાકર અલ્લાહુ અકબર કેહકર હાથ બાંધલે ફીર ઈમામ એક રકાત પુરી કરકે દુસરી રકાત કે લીએ જબ ખડા હો તો ઈમામ પહેલે કિર્મત કરે કિર્મત સે ફારીગ હોકર દોનોં હાથ કાનોં તક ઊઠાતે હુએ અલ્લાહુ અકબર કહે ઔર હાથ છોડ દે. ફીર દોનોં હાથ કાનોં તક ઊઠાતે હુએ અલ્લાહુ અકબર કેહકર હાથ છોડ દે ફીર તીસરી બાર કાનોં તક હાથ ઊઠાએ ઔર અલ્લાહુ અકબર કેહકર હાથ છોડ દે. ફીર રૂકુઅકી તકબીર કહેતે હુએ રૂકુઅમે જાંએ ઔર બાકી નમાઝ કો પુરી કરે.

ફીર ઈમામ ખડે હોકર ખુલ્બા પઢે ઔર તમામ લોગ ખામોશ બેઠકર સુને. ઊસ્મે ભી દો ખુલ્બે હૈ. ઔર દોનોં કે દરમ્યાન બેઠના મસનુન હૈ. ફાયદા :- શવ્વાલ કી પહલી તારીખ કો “ઈદુલકિત્ર” કહતે હૈ. ઔર જહજ કી દસવી તારીખકો ઈદુલ અદલા કહતે હૈ.

મસાઈલ :- (૧) ઈદુલ અદલા મેં ઈદગાહ મેં જાતે હુએ. બુલંદ આવાઝસે ઔર ઈદુલ કિત્રમેં આહિસ્તા આવાઝસે “તકબીરે તશરીક” પઢના સુન્નત હૈ.

અલ્લાહુ અકબર, અલ્લાહુ અકબર, લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહુ વલ્લાહુ અકબર, અલ્લાહુ અકબર વલિલ્લાહીલ્હમ્દુ.

(૨) ઈદગાહમેં સીફ એક મરતબા જમાઅત હો સકતી હૈ દુસરી મરતબા મકરૂહ હૈ.

(શામી)

(૩) કોઈ બીમાર યા કમઝોર આદમી ઈદગાહ મેં પૈદલ ન જા સકે તો સવારી મે જા સકતા હૈ. (ઈમદાદુલ ફતવા)

ફાયદા :- ઈદકી નમાઝકી તકબીરોંમેં હાથ ઊઠાને કે બારે મે બહોત લોગ ગલતીયા કરતે હૈ. ઈસ લીએ એક ઊસુલ (નિયમ) યાદ રહે કે જસ તકબીર કે બાદ કુછ પઢના નહી હૈ ઊસ્મે હાથ છોડ દીયે જાયે ઔર જસ તકબીરકે બાદ પઢના હૈ ઊસ્મે હાથ બાંધ લીએ જાયે.

मर्द और औरत की नमाज़ का इर्क

- (१) मर्द : कियाम में दोनों कदमों के दरम्यान इस्ला रहे.
 औरत : कियाम में दोनों कदम साथ रह्ये.
- (२) मर्द : हाथ उठाने में कानों तक उठाये.
 औरत : हाथ उठाने में कन्धों तक उठाये
- (३) मर्द : हाथ बांधने में बाये हाथ की हथेली की पुशत पर
 दाये हाथ की हथेली रहे और तीन उंगलीया क्लाई
 पर रहे. और अंगुठे और छोटी उंगलीसे गटों
 को पकड ले.
 औरत : हाथ बांधने में बाये हाथ की हथेली की पुशत पर
 दाये हाथ की हथेली रहे. पकडे नहीं.
- (४) मर्द : हाथ बांधने में नाक के नीचे बांधे
 औरत : हाथ बांधने में सीने के उपर रहे - बाधे नहीं.
- (५) मर्द : इकुअमें (१) हाथ की उंगलीया पुली रभकर घुटनों
 को पकडे.
 (२) बाजुओंको पसलीयों से अलाईदा रहे
 औरत : (१) उंगलीया मीलाकर गुटनों पर रहे.
 (२) बाजुओं को पसलीयों के साथ मिलाटे.
- (६) मर्द : सिजदे मे जानेकी डालत में
 (१) जमीन पर पहले दोनों घुटनों को रहे डीर
 दोनों हाथ डीर नाक डिर पेशानी ईस तरड
 रहे के अंगुठे के सामने आभे रहे.
 (२) बाजु पसलीयों से पेट रानों से कोहनिया
 जमीन से अलग रहे (यानी भुज भुलकर
 सिजदा करे)
 (३) पेर भडा रहे. और उंगलीयां डिब्लेकी तरड रहे.
 औरत : सिजदे में जाने की डालत में :
 (१) जमीन पर पहले दोनों गुटनों को डीर दोनों
 हाथों को डीर पेशानी को ईस तरड रहे के

अंगुठे के सामने आभें रहे.

(२) बाजू पसलीयो से पेट रानों से कोहनियां जमीन से मिलादे. (यानी आजा (अवयव) को भुज मिलाकर सिजदा करे.

(७) मर्द : जस्से में :- बायें परे पर बेठे दाहने परे को भडा रभे. और पैर की उगलीया डिब्बे की तरफ़ रभे.

औरत : जस्से में :- दोनों पैर दाहनीतरफ़ निकाल कर बेठे.

(८) मर्द : काअदेकी डालत में :- हाथ की उगलीया रानों पर अपनी डालत में रभे.

औरत : काअदेकी डालत में :- दोनों हाथ की उगलीया रानों पर मिलाका कर रभे.

(९) मर्द : सिजदे से भडे डोने की डालत में :

पहले पेशानी उठाअे डीर नाक डीर हाथ डीर गुटनों के उपर दोनों हाथ रभकर भडे डो. जमीन पर न रभे.

औरत : सिजदे से भडे डोने की डालत में :

पहले पेशानी उठाअे. डीर नाक डीर हाथ डीर जूककर हाथ गुटनों पर रभकर भडी डो. के हयअत (पोजीशन) बढलने न पाये. (ईस्लामी तअलीम)

अहम सुन्नतसे गइलत

आजकल ईदकी नमाज "ईदगाह"में अदा करनेकी अहम सुन्नतको मुसलमानों ने छोड दीया है. बखीत से शहरो और कस्बो में ईदकी नमाज ईदगाह के बढले मस्जिदों में पढते है. डालांके ईदगाहमें नमाज पढनेकी बखीत इजीलत है. डुरुर (स.अ.) और सडलभा (र.दी.) दोनों ईदोंकी नमाज के लीअे पैदल यलकर जाते थे मस्जिदेनब्वी में अेक नमाजका पयास डजार नमाजों के बराबर सवाब डोने के बावजूड ईदगाहमें पढते थे ईससे साबीत डोता है ईदकी नमाज ईदगाह में पढना ज्यादा सवाब है.

"अडूल मआद" मे है के नबीअे करीम (स.अ.) दोनों ईदोंकी नमाज ईदगाह में अदा करते रहे

“શામી” મે હૈ કે બગૈર મજબુરી કે યે સુન્નત છોડનેવાલા મલામત કે મુસ્તહીક હૈ. હમેશા કી આદત બનાનેવાલા ગુનેહગાર હૈ.

(સુરૂલ મુસ્લેમીન)

જુમ્હાકા દિન ઓર નમાઝકી ફઝીલત

(૧) હુઝુર નબીયે કરીમ (સ.અ.)ને એક જુમ્હાકો ઈર્શાદ ફરમાયા અય મુસલમાનો! ઈસ દીન કો અલ્લાહ તઆલાને ઈદ મુકરર ક્રિયા હૈ. પસ ઈસ દિન ગુસ્લ કરો. ઓર જીસ્કે પાસ ખુશુ હો વો ખુશુ લગાએ. ઓર મિસ્વાક કો ઈસ દિન લાઝીમ કર લો.

(૨) નબીયે કરીમ (સ.અ.) ને ફરમાયા જુમ્હાકે દિન ફરિશ્તે ઊસ મસ્જીદ કે દરવાઝે કે પાસ ખડે હોતે હૈ જહાં જુમ્હા હોતા હૈ. જો શખ્સ સબસે પહેલે જુમ્હા કે લીએ આતા હૈ ઊસ્કો એસા સવાબ મીલતા હૈ. જીતના અલ્લાહ કે રાસ્તે મેં ઊટકી કુરબાની કરનેવાલેકો મીલતા હૈ. ઊસ્કે બાદવાલેકો ગાયકી કુરબાની કે બરાબર ઊસ્કે બાદવાલેકો મુરઘી જુબ્હ કરને કે બરાબર ઊસ્કે બાદવાલે કો અલ્લાહ કી રાહમેંઅંઝા સદકા કરનેકે બરાબર સવાબ મીલતા હૈ. જબ ખુત્બા હોને લગતા હૈ તો ફરિશ્તે દફતર બંદ કર લેતે હૈ ઓર ખુત્બા સુનને મેં મશગુલ હો જાતે હૈ. (બુખારી-મુસ્લિમ શરીફ)

(૩) નબીયે કરીમ (સ.અ.)ને ફરમાયા કે જો શખ્સ જુમ્હા કે લીએ ગુસ્લ કરે ઓર અપને બાલોં મેં તેલ લગાએ ઓર ખુશુ લગાએ ઊસ્કે બાદ નમાઝ કે લીએ ચલેજબ મસ્જીદમે આયે તો કીસીકો અપની જગાસે ઊઠાકર ન બેઠે ફીર જીસ કદર હો સકે નવાફીલ પઢે ફીર જબ ઈમામ ખુત્બા પઢને લગે તો ખામોશીસે સુનને લગે તો પીછલે જુમ્હાસે લેકર ઈસ જુમ્હાતક કે ગુનાહ મુઆફ હો જાયેગે (બુખારી શરીફ)

(૪) નબીયે કરીમ (સ.અ.) કા ઈર્શાદ હૈ જો શખ્સ જુમ્હા કે દીન ગુસ્લ કરે ઓર સવેરે મસ્જીદમે જાએ ફીર ખુત્બાસુને દરમ્યાન મે કોઈ બેકાર કામ ન કરે તો ઊસ્કો હર કદમ કે બદલે એક સાલકી કામીલ ઈબાદતકા ઓર એક સાલ કે કામીલ રોઝોં કા ઓર એક સાલકી નમાઝોકા સવાબ મીલેગા.

(તિર્મીઝી શરીફ)

(૫) નબીયે કરીમ (સ.અ.) ને ઈર્શાદ ફરમાયા જુમ્હામેં એક ઘડી એસી હોતી હૈ અગર કોઈ મુસલમાન ઊસ વક્ત અલ્લાહ તઆલા સે દુઆ કરે

તો જરૂર કબુલ હોતી હૈ.

(બુખારી, મુસ્લિમ શરીફ)

(દ) જુમ્આ કે દિન: ચાહે નમાઝ સે પહેલે યા બાદમં સુરએ કહક પઢને કા બહોત સવાબ હૈ.

નબીયે કરીમ (સ.અ.) કા ઈર્શાદ હૈ કે જુમ્આ કે દિન કોઈ સુરએ કહક પઢે ઊસ્કે લીયે અર્શ કે નીચે સે આસ્માન કે બરાબર બુલંદ એક નુર જાહીર હોગા જો કિયામત કે અંધેરે મેં ઊસ્કે કામ આયેગા. ઓર જુમ્આસે જુમ્આ તક જીન્ને ગુનાહ હોગેં મુઆફ હો જાયેગેં

ઊલમાને લીખા હૈ કે ઈસ હદીસ મેં ગુનાહે સગીરહ (છોટે ગુનાહ) મુરાદ હૈ ઈસલીયે કે કબીરા ગુનાહ બગેર તૌબાકે મુઆફ નહી હોતે. (અલ્લાહુ અ'અલમ)

જુમ્આ છોડને કી વર્ષદ

(૧) હઝરત અબુ હુરૈરહ(ર.દી.) ફરમાતે હૈ કે હમને નબીયે કરીમ (સ.અ.) કો યે ઈર્શાદ ફરમાતે સુનાકે લોગ "જુમ્આ છોડને સે બચે" વરના અલ્લાહ તઆલા ઊન્કે દીલોં પર મહોર લગા દેગા ફીર વો સપ્ત ગુફુલમે પડ જાયેગેં.

(મુસ્લિમ શરીફ)

(૨) નબીયે કરીમ (સ.અ.)ને ઈર્શાદ ફરમાયા જો: શપ્સ તીન જુમ્આ બગેર ઊજર (મજબુરી)કે સુસ્તીમે છોડ દે તો અલ્લાહ તઆલા ઊસ્કે દીલ પર મહોર લગા દેતા હૈ.

(તિમીઝી)

(૩) એક રિવાયત મે હૈ કે પુદાવંદ તઆલા ઈસસે બેઝાર હોતા હૈ.

ઈન હદીસો પર સરસરી નઝર કે બાદ યે નતીજા બખુબી નિકલ સકતા હૈ કે શરીઅત મે નમાઝે જુમ્આકી સપ્ત તાકીદ હૈ ઓર ઊસ્કે છોડને પર સપ્ત સે સપ્ત વર્ષદે આઈ હૈ કયા ? અબલી કોઈ શપ્સ ઈસ્લામકા દાવા કરનેકે બાદ ઈસ ફર્જકો છોડને કી હિમ્મત કર સકતા હૈ. ?

જુમ્આકા ખુલ્આ :- જબ સબ લોગ જમાઅતમં આ જાયે તો ઈમામકો ચાહીયે કે મીઅર પર બેઠ જાયે ઓર મુઅઝિઝન ઈન્કે સામને અઝાન કહે અઝાનકે બાદ ઈમામ ફોરન પડા હોકર ખુલ્આ શુરૂ કરે.

(૧) જબ ઈમામ ખુલ્આકે લીએ પડે હો તો ઊસ વક્ત કોઈ નમાઝ પઢના યા આપસ મેં બાતચીત કરના મકરૂહે તહરીમી હૈ

(૨) જબ ખુલ્આ શુરૂ હોજાયે તો તમામ હાજેરીન કો ઊસ્કા સુન્ના વાજબહૈ.

ચાહે ઈમામકે નજદીક બેઠે હો યા દુર. ઔર કોઈ કામ કરના જો ખુલ્ખા સુનનેમે ખલલ કરે મકરૂહે તહરીમી હૈ. ઔર ખાના પીના બાત ચીત કરના. સલામ કરના જવાબ દેના તસ્બીહ પઢના. કીસીકો મસઅલા બતાના યે સબ મના હૈ.

(૩) અગર સુન્નત નમાઝ પઢનેમે ખુલ્ખા શુરૂ હોજાયે ઔર નમાઝ સુન્નતે મુઅકકેદા હૈ તો પુરી કરે ઔર નફીલ હો તો દો રકાત પુરી કરેકે સલામ ફેરદે.

(૪) ખુલ્ખેમે નબીયે કરીમ (સ.અ.) કા નામ મુબારક આયે યા દુરુદશરીફકી આયત આયે તો સુનને વાલો તો દીલ મેં પઢના જાઈઝહૈ. (બહેશ્તીઝેવર)

જુમ્આકી નમાઝ :- નમાઝે જુમ્આ “ફર્જ ઐન” હૈ

કુઆનમજ્હદ ઔર અહાદીસે મુતવાતિર ઔર ઈજમાએ-ઉમ્મત સે સાબીતહૈ ઔર ઈસ્લામકી બડી નિશાનીયો મેં સે હૈ. ઈસ્કા ઈનકારકરનેવાલા કાફિર હૈ. ઔર બગૈર ઊજરૂ (મજબુરી)કે છોડનેવાલા ફાસીક હૈ.

જુમ્આ કે દીન ઝોહર કી નમાઝ નહી હૈ જુમ્આકી નમાઝ ઊસ્કે કાઈમ મુકામ (બદલેમે) કરદી ગઈ હૈ.

જુમ્આકી નમાઝ “દો રકાત ફર્જ હૈ” ચાહે શુરૂનમાઝસે શરીક હો ચાહે એક રકાત યા કાઈદએ-અખીરહમે શરીક હો દો રકાતહી પુરી કરે

જુમ્આકી નમાઝમે ઈમામકે સિવા કમસે કમ ત્રીન આદમી હોના જરૂરી હૈ અગર ત્રીન ન હોંગે તો જુમ્આકી નમાઝ સહી ન હોગી.

(તાલીમુલ ઈસ્લામ)

નફીલ નમાઝે

(૧) નબીયેકરીમ (સ.અ.) કા ઈશાદ હૈ કે ક્રિયામત કે દીન આદમી કે આમાલમે સબસે પહેલે ફર્જ નમાઝ કા હિસાબ કીયા જાયેગા. અગર નમાઝ અચ્છી નિકલ આઈ તો વો શખ્સ કામ્યાબ ઔર બા મુરાદ હોગા ઔર અગર નમાઝ બેકાર સાબિત હુઈ તો વો ના મુરાદ ઔર નુકસાનમે હોગા. ઔર અગર કુછ નમાઝમે કમી પાઈ ગઈ તો ઈશાદિ ખુદાવંદી હોગા. કે દેખો ઈસ બંદેકે પાસ કુછ “નફીલ નમાઝો”ભી હે ? જન્સે ફર્જો કો પુરા કર દીયા જાયે. અગર નિકલ આઈ તો ઊન્સે ફર્જોકો પુરા કરદીયા જાયેગા ઊસ્કે બાદ ફીર ઈસી તરહ બાકી આમાલ રોઝા. ઝકાત વગેરહકા

हिसाब होगा

(तिर्माजी)

शायदा :- इस हदीससे मालुम हुआके आदमीको नकिलोंका जपीरा (बंडोर) भी अपने पास कांड़ी रचना याहीये के अगर इर्जों में कुछ कोताही निकले तो भिजान(वजन) पुरी होजायगी. बड़ोतसे लोग कहे दिया करते है अज्? हमसे इर्ज ही पुरा हो जाय तो बड़ोत गनीमत है. नइलें पढना तो बडे आदमीयोंका काम है. जिस्में शकनही के इर्जही अगर पुरेपुरे होजाये तो बड़ोत कांड़ी है. लेकिन ईन्का बिलकुल पुरापुरा अदा होजाना कोनसा आसान काम है. जब थोडी बड़ोत कोताही होतीहै तो जिस्को पुरा करने के लीअे नइलों के बगैर यारअेकार (इष्टका) नही.

(२) तमाम सुन्नते और नइल नमाज घरमें पढनीबेइतर है सिवाय खंड सुन्नतों और नइलों के के जिन्को मस्जिद में पढना अइजल है जैसे नमाज तरावीह तहीयतुलमस्जिद सुरज गहैन की नमाज वगेरह.

(१) तहीयतुल वुजु :- वुजुके बाद हो रकात नईल नमाज पढना मुस्तहबहै. रसुलेअकरम (स.अ.) का ईशादि है के जो मुसलमान अखी तरह वुजु करके हो रकात नमाजपढे तो जिस्के लीअे जन्नत वाज्जब होगी.
(मिशकात शरीफ)

(२) तहीयतुल मस्जिद :- इस नमाज का मकसद मस्जिद की तअजीम (ईजजत) है. जो दर इकीकत पुदा की तअजीम है क्युं के मकान की तअजीम मकान वाले की तअजीम के प्यालसे हुआ करती है. रसुले अकरम (स.अ.) ने ईशादि इरमाया जब तुम मे से कोई मस्जिदमें दाभील होतो याहीये के बेठनेसे पहेले हो रकात नई पढे.
(बुपारी शरीफ)

मस्जिदा :- अगर मस्जिदमें अैसे वक्त दाभील हुआ के उस वक्त नमाज पढना मकइह है. जैसे के जवालका वक्त है तो बगैर नमाज पढे बेठ जाये इस वक्त तहीयतुलवुजु और तहीयतुल मस्जिद न पढे. अगर मकइह वक्त हो तो सिई यार भरतबा ईन कवीमातको पढे. सुब्हानव्लाही वलहम्दो विल्लाही वलाईलाह ईल्लव्लाहु वल्लाहु अकबर, और जिस्के बाद कोई इइद शरीफ पढे.

(बेइश्ती जेवर)

(३) ईशाराक :- जब सुरज निकलकर बुलंद हो जाये और अखी तरह साई सईह मालुम होने लगे तो हो या यार रकाअत नईल नमाज

પઢો ઈસ્કો "ઈશરાક"કી નમાઝ કહતે હૈ.

ઈશરાકકી નમાઝકા તરીકા યે હૈ કે જબ ફજરકી નમાઝ પઢ ચુકે તો અપની જગા બેઠે બેઠે દરૂદ શરીફ યા કલમા ઔર કોઈ વઝીફા પઢતા રહે અલ્લાહ કી યાદમે લગા રહે દુનિયાકી કોઈ બાત ચીત ન કરે ન દુનિયા કા કોઈ કામ કરે. જબ ઈશરાક કા વક્ત હો જાએ તો દો ચાર રકાત પઢલે. તો એક હજ ઔર એક ઊમરહકા સવાબ મીલતા હૈ.

(તિમીઝી શરીફ)

અગર ફજરકે બાદ દુનિયાકા કોઈ કામ કર લીયા ફીર ઈશરાક કે વક્ત પર નમાઝે ઈશરાક પઢી તો ભી દુરૂસ્ત હૈ. લેકીન સવાબ કમ હો જાયેગા.

(૪) **યાશત** :- ઈશરાકકી નમાઝ કે ત્રીન ઘંટે કે બાદ દો યા ચાર યા આઠ રકાત નફીલ નમાઝ પઢે. ઊસ્કો યાશતકી નમાઝ કહતે હૈ.

રસુલે અકરમ (સ.અ.) કા ઈશાદ હૈ કે જન્મતકે દરવાજોં મેં એક દરવાજે કા નામ દોહા હૈ (યાશત)કી નમાઝ પઢને વાલોંસે કહા જાયેગા. યે તુમહારા દરવાજા હૈ ઈસ્સે જન્મતમેં સલામતી કે સાથ દાખીલ હો જાઓ. (તીબરાની)

(૫) **અવ્વાબીન** :- નમાઝે મગરીબ કે બાદ છે રકાત નફીલ નમાઝ પઢો ઊસ્કો "અવ્વાબીન" કહતે હૈ. રસુલે અકરમ (સ.અ.)કા ઈશાદ હૈ કે જીસ્ને મગરીબકે બાદ છે રકાતે પઢી ઊસ્કો (૧૨) બારહ સાલકી ઈબાદતકે બરાબર સવાબ મીલેગા. (મીશકાત)

(૬) **તહજુદ** :- રાતકે પીછલે હિસ્સેંમેં યાની આઘી રાતસે લેકર સુબહ સાદીક હોને તક દો રકાતસે લેકર બારહ રકાત તક જો નફીલ પઢી જાતી હૈ ઊસ્કો નમાઝે તહજુદ કહતે હૈ.

રસુલે અકરમ (સ.અ.)કા ઈશાદ હૈ કે મધ્દાને હશરમેં એક પુકારનેવાલા પુકારેગા કે કહાં હૈ ? વો લોગ જો રાતોકો ઈબાદત કરનેકે લીએ અપને બિસ્તરોસે અલગ રહતે થે યે આવાઝ સુન કર તહજુદ પઢનેવાલે બંદે એક જગા જમા હો જાયેગેં ઉન્કો બગૈર હીસાબકે જન્મતમેં દાખીલ કર દીયે જાયેગે. (બયહકી)

(૭) **નમાઝે ઈસ્તિખારહ** :- જબ કોઈ કામ કરનેકા ઈરાદા કરો તો અલ્લાહ તઆલાસે મશ્વરા લો ઈસ સલાહ લેનેકો "ઈસ્તિખારહ" કહતે હૈ. નબીએ કરીમ (સ.અ.)કા ઈશાદ હૈ કે અલ્લાહ તઆલાસે સલાહ

लेनां ईस्तिभारह न करना बहबन्ती और कम नसीबी की बात है।
 कही मंगनी (सगाई) करे या सफ़र करे या और कोई काम करे तो
 ईस्तिभारह कीये बगैर न करें ईन्शाअल्लाह कभी परेशानी न होगी
 ईस्तिभारह की नमाज़ का तरीका ये हैके पढेले दो रकात नमाज़
 पढे ईस्के बाद पुब दील लगा कर ये हुआ पढे.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ
 بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ
 فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ
 وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ اللَّهُمَّ إِن كُنْتَ تَعْلَمُ
 أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَتِي
 أَمْرِي فَأَقْدِرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ
 وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي
 دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَتِي أَمْرِي فَأَصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي
 عَنْهُ وَاقْدِرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِي بِهِ

अल्लाहुम्मा ईन्नी अस्तखिरुक बिईल्मेक वअस-तकदीरुक बिकुदरतिक
 वअस-अलुक मीन इदविकल अज़ीम. इईन्नक तकदीरो वलाअकदीरो
 वतअलमु वला अअलमो वअन्त अल्लामुल गुयुब. अल्लाहुम्म ईन कुन्त
 तअलमु अन्न हाज़ल अम्र भयइल्ली ई दीनी व माआशी वआकेबत-अम्री
 इकदीर होली वयसीरहो ली अम्री सुम्म भारीकली ईही वईन कुन्त
 तअलमु अन्न हाज़ल अम्र शरइल्ली ई दीनी व मआशी व आकीबती
 अम्री इअसरीइकु अन्नी वसरीइनी अन्हु वकदीर लीयल भयर हयसो
 कान सुम्भरहेनी बिही.

और "हाज़ल अम्र" पर पढ़ुंये जिसपर लकीर बनी हुई है तो उसके
 पढते वक्त ईसी काम का ध्यान करे जिसके लीअे ईस्तिभारह करनायाहता
 हो. ईस्के बाद पाक साफ़ बिद्योने पर डिब्बा तरफ़ मुंह करके पुरु की
 डालत में सो जाअे जब सो कर ठीके ठीस वक्त जो बात दील में मजबुती
 से आये वही बहेतर है. उसको करना याहीअे.

અગર એક દિનમેં માલુમ ન હો ઔર દીલકા ખલજાન ઔર તરદુદ બાકી રહે તો દુસરે દીનભી એસા કરે ઈસી તરહ સાત દીન તક કરે ઈન્શાઅલ્લાહ જરૂર અચ્છાઈ યા બુરાઈ માલુમ હો જાયેગી.

(બેહશતી ઝેવર)

નોટ :- ઈસ્તિખારહમેં ખ્વાબ નજર આના જરૂરી નહી બસ દીલમેં જો ખ્યાલ મઝબુત હો જાયે ઊસ પર અમલ કરે.

(૮) સલાતુત્તસ્બીહ :- (તસ્બીહકી નમાઝ)

હદીષ શરીફમે ઈસ્કા બહુત સવાબ બતાયા ગયા હૈ. રસુલે અકરમ (સ.અ.) ને અપને ચયા હઝરત અબ્બાસ (રદી.) કો યે નમાઝ સિખાઈ થી ઔર ફરમાયા થા કે ઈસ્કે પઢનેસે તુમ્હારે સબ ગુનાહ પહેલે ઔર પિછલે પુરાને ઔર નઅે છોટે ઔર બડે ગલતીસે કીઅે હુઅે ઔર જાન - બુઝકર કિઅે હુઅે સબહી મુઆફ ફરમા દેગેં ઔર ફરમાયા થા કે અગર હો સકે તો યે નમાઝ રોઝા ના એક મરતબા પઢ લીયા કરો. યહ ન હો સકે તો હર જુમ્હકો એક મરતબા પઢ લીયા કરો યહભી ન હો સકે તો ઊમ્મલરમે એક મરતબા તો પઢહી લો. (તિર્મિઝી)

નમાઝ કી તરકીબ :-

ચાર રકાત નફીલ (સલાતુત્તસ્બીહકી નિચ્યત બાંધકર) પઢે. ઔરહર રકાતમે સના ઔર અલહમ્દુ ઔર સુરેત પઢ ચુકો તો રૂકુઅસે પહેલે "સુબ્હાનલ્લાહી વલહમ્દુલિલ્લાહી વલાઈલાહા ઈલ્લાલ્લાહુ વલ્લાહુ અકબર"

- ૧૫ મરતબા પઢો.
- ફીર જબ રૂકુઅ કરો તો..... ૧૦ મરતબા પઢો
- જબ રૂકુઅસે ખડે હો તો ૧૦ મરતબા પઢો
- ફીર સિજદેમેં ૧૦ મરતબા પઢો
- સિજદેસે ઊઠ કર બેઠો તો..... ૧૦ મરતબા પઢો
- ફીર દુસરે સિજદેમે જાઓ તો ૧૦ મરતબા પઢો
- ફીર જબ દુસરે સિજદેસે ઊઠો તો
- દુસરી રકાતમેં ખડે હોનેસે પહેલે ૧૦ મરતબા પઢે
- ઈન સબકી મીઝાન (ગીનતી)૭૫ મરતબા હુઈ ઈસી તરહ હર રકાતમેં (૮૫) મરતબા હોગા. જબ દૂસરી રકાતમેં અત્તહિયાત કે લીયે બેઠે તો પાંચો દસ મરતબા પઢે ફીર અત્તહિયાત પઢે. ઈસી તરહ ચાર રકાતમે પુ. કરે ઈન સબ રકાતોમેં જો સુરત ચાહે પઢે કોઈ સુરત મુકરર નહી.

ફાઈદા :- સલાતુત્તસ્બીહ બડી અહમ નમાઝ હૈ ઓર દીનો-દુનિયામૈં કાર આમદ ઓર મુફીદ હૈ. હુજુરે અકદસ (સ.અ.)ને ઊસ્કી ફઝીલત કી વજહસે એક ખાસ નમાજકી તરગીબ ફરમાઈ જો સલાતુત્તસ્બીહ કે નામસે મશહુર હૈ ઓર વજહ ઈસ નામકી યે હૈ કે યહ તસ્બીહાત ઊસમે તીનસો (૩૦૦) મરતબા પઢી જાતી હૈ. ઊલમાએ ઊમ્મત મુહદિધીન ફુકહાઅ સુફીયહ હર ઝમાનેમૈં ઊસ્કા એહતિમામ ફરમાતે રહે અબુ ઊસ્માન (ર.હ.)જો બડે ઝાહિદોમૈં સે હૈ કહેતે હૈ કે મેને મુસીબતો ઓર ગમો કે દુર કરને કે લીએ સલાતુત્તસ્બીહ જેસી કોઈ ચીઝ નહી દેખી.

હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને અબ્બાસ (રદી.) હર જુમ્આકો પઢા કરતે થે.
(ફઝાઈલે ઝિક)

મસ્અલા :- યે નમાઝ મકરૂહ વક્તકે અલાવા બાકી દીન-રાતકે તમામ અવકાતમે પઢના જાઈઝ હૈ. અલબત્તા ઝવાલકે બાદ પઢના જ્યાદા બહેતર હૈ. દિનમૈં કિસી વક્ત ફીર રાતકો
(ફઝાઈલે ઝિક)

ઈસ નમાઝકે બાકી મસાઈલદૂસરી કિતાબોમૈં પઢે. યા જરૂરતકે મોકે પર એહલે ઈલ્મસે પુછકર માલુમ કરે.

(૯) નમાઝે તવબહ :- અગર કોઈ બાત શરીઅત કે ખિલાફ હોજાએ યાની ગુનાહહો જાએ. તો દો રકાત નફીલ નમાઝ પઢકર અલ્લાહ તઆલા કે સામને ખુબ ગિડગિડા કર ઊસ્સે તવબહ કરે ઓર અપને ગુનાહ પર પછતાએ ઓર અલ્લાહ તઆલાસે મુઆફી માંગે ઓર આઈન્દા કે લીએ પક્કા ઈરાદા કરે કે અબ કબી ન કરૂંગા ઈસ્સે ખુદાકે ફઝલસે વહ ગુનાહ મુઆફ હો જાતા હૈ.

(૧૦) સલાતુલહાજત :- જબ કોઈ ખાસ જરૂરત પેશ આયે જસ્કા તઅલ્લુક અલ્લાહતઆલાહસે હો યા કીસી ઈન્સાનસે હો તો સબસે પહેલે વુજુ સુન્નત કે મુવાફીક કરે. ફીર દોરકાત નમાઝ નફીલ ખુબ ઈત્મીનાન ઓર સુકુન સેપઢે ફીર અલ્લાહ તઆલાહકી હમ્દો સના કરે ફીર દુરૂદશરીફ પઢે ફીર યે દુઆ એક મરતબા યા જ્યાદા જસકદર પઢનાયાહે પઢે ઓર અપની ખાસ હાજત કેલીએ દુઆકરે. ઈન્શાઅલ્લાહ હાજત પુરી હોગી.

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ سُبْحَانَ اللَّهِ
رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزْلَ بُرْمٍ مَغْفِرَتِكَ
وَالْغَنِيمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ
لَا تَدْعُرْنِي ذَنْبًا إِلَّا اغْفِرْتَهُ وَلَا هَمًّا إِلَّا فَرَجْتَهُ
وَلَا كَرْبًا إِلَّا نَفَسْتَهُ وَلَا ضُرًّا إِلَّا كَشَفْتَهُ وَلَا حَاجَةً
هِيَ لَكَ رِضَى إِلَّا أَقْضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

वाघवाडा धल्लल्लाहुल उलीमुल करीम सुब्धानल्लाही रब्भुल अरशील अजीम. अलउभु दिल्लाही रब्बील आलमीन. अस अलुक मुज्जाते रहमतीक वअजाधिम भगडीरतीक वलगनीमत मिन कुल्ली बिररीरिव वस्सलामत मीन कुल्ली धस्मीन वातदअली जंभन धल्ला गररतहु वला उभन धल्ला इररतहु वला करभन धल्ला नफ़सतल वला दुर्न धल्ला करशकतहु वला डाजतन डीय लक रीदन धल्ला कदयतडा या अर-उमर राडेमीन.

नोट :- बेहतर ये है के नमाज़ पढने से पहले दो रकात नमाज़े तवबल पढकर गुनाहोंसेभी मुब तौबाधस्तिगफ़ार करे कयुके जस“करीम” से कोध नेअमत लेना डोती है. पहले उसको राख करना जरूरीहै. उसके बाद डीर दोरकात नमाज़े डाजत पढकर उपरवाली दुआ पढे और अपनी डाजत केलीअे दुआ करे.

मुसाफ़ीर की नमाज़

शरीअत में मुसाफ़ीर उसको कहते जो धली दुर जाने का धरादा करे जडा छोटे धीन में दरभ्यानी यालसे यलकर पहुंचे दरभ्याननी दरजेकी याल से पैदल आदमी की यालकी तीन मंजील की मसाफ़त मोअतभरहै. लेकीन आसानीके लीअे अउतालीस (४८) मील (माधल) की मसाफ़त को तीन मंजिल के बराबर समज लीया गया है. इसलीये अगर कोध शप्स रेल या मोटर मे या और कोध तेज रफ़तार सवारी पर सवार डोकर याडे कीत्नाडी जल्दी पडोंय जाअे ये मुसाफ़ीर डो गया.

आजकल कीलो मीटर के डीसाबसे ७८-८४ की.मी. का सफ़र करने वाला आदमी मुसाफ़ीर समजा जायेगा. उसको नमाज़मे “कसर” करना याडीअे

यानी मुसाफ़ीरको जोहर-असर और ईशांमें यार रकातके बजाओ दो रकात पढना है. और इज़र और मगरीब और वित्र की नमाज़े अपनी डाल पर रहेती है. उन्मे कोई इर्क नही होता.

(१) सफ़र शुर्ज़ करनेवाला मुसाफ़ीर जब अपनी बस्तीकी आबादीसे बाहर निकल जाओ उस वक्तसे "कसर" करने लगे. यानी ज़स नमाज़ का वक्त आ जाये उस्मे अगर जोहर असर या ईशां में से कोई नमाज़ हो तो इर्ककी रकातोमें कसर करे यानी दो रकात इर्क पढे. जान बुज़कर यार रकात पढनेवाला गुनेहगार होगा. अगर लुलसे यार रकात पढी तो गुनेहगार न होगा.

(२) मुसाफ़ीर जब तक सफ़रमें रहे और कीसी शहर या कस्बे या गांवमें पंदरह दिन ठहरनेकी नियत न हो उस वक्त नमाज़ "कसर" करता रहे. और जब कीसी जगह पंदरह दिन ठहरनेकी नियत करली तो नियत करतेही पुरी नमाज़ पढने लगे.

(३) जब तक एक साथ पंदरह दिनकी नियत न करे. नमाज़ कसर पढना याहीओ. और इस डालमें पंदरह दिनसे ज्यादह ली हो जाओ तबली कसर नमाज़ पढे.

(४) डां, अगर मुसाफ़ीर बननेके बाद मुकीम (वतनमें रहनेवाला) ईमाम के पीछे नमाज़ पढे तो मुसाफ़ीर परली यार रकातें इर्क हो जाती है.

(५) अगर मुसाफ़ीर ईमाम बने और मुकतदी मुकीम हो. तो मुसाफ़ीर ईमाम अपनी दो रकात पढकर सलाम फ़ेरदे. और डेह डे के "तुम अपनी नमाज़ पुरी कर लो में मुसाफ़ीर हुं" मुकतदी बगैर सलाम फ़ेरे भडे हो जाओ और दो रकात पुरी करले. और दोनो रकातोमें फ़ातेहा और सुरत न पढे और सहव हो जाओ तो सिजद-ओ-सहवली न करे.

(तालीमुल ईस्लाम)

(६) अगर चलती रेलमें या जहाज़में नमाज़का वक्त हो जाओतो यक्कर आने या गीरनेका डर न हो तो भडे हो कर पढना ज़रूरी है और अगर भडे हो कर न पढ सके तो बेठ कर पढे और नमाज़ के दरम्यान रेल या जहाज़के घुमनेसे मुंह डिब्ले तरफ़ न रहे तो फ़ोरन डिब्ले डि तरफ़ डीर जाना याहीये वरना नमाज़ नही होगी.

(तालीमुल ईस्लाम)

(७) जो शरीअत से मुसाफ़ीर हो वो जोहर असर और एशांकी इर्ज नमाजों की दो दो रकात पढे. और सुन्नतोंका हुकम ये है के अगर जल्दी हो तो इर्जकी सुन्नतके सीवा और सुन्नतें छोड देना बहेतर है. इससे कुछ गुनाह न होगा. और अगर जल्दी न हो और साथीयोंसे रेह जानेका डर न हो या सवारीके छुटनेका भतरा न हो तो सुन्नतें पुरी पढे जिन्में कमी नहि है.

(बहेश्ती जेवर)

(८) बाज लोगोंको पुरी नमाज की जगा "कसर" पढनेमें दीलमें गुनाह का वसवसा पैदा होता है. ये सही नही है. इसलीये के "कसर"बी शरीअतका हुकम है जस्की ताअमील (पेरवीमे) पर कोई गुनाह नही होता. बल्के सवाब भीलता है.

(मआरीकुल कुर्आन ७-२ पेज ५३४)

सूरज ग्रहण और याँद ग्रहणकी नमाज

सूरज ग्रहण को कुसुफ़ और याँद ग्रहण को भुसुफ़ कहेते है.

नमाजे कुसुफ़ : सूरज ग्रहण के वकत दो रकात नमाज मसनुन है. नबीये करीम (स. अ.) ने फरमाया के सूरज ग्रहण और याँद ग्रहण अल्लाह की कुदरत की निशानयां है. इससे मकसुद बंदो को भौंफ़ दीवाना है. बस ! जबतुम इसे देभो तो नमाज पढो दोनों नमाजे पढने का वही तरीकां है. जो नवाफ़ील का है. सूरज ग्रहण की नमाज जमाअतसे अदा की जाअे. एमामे जुम्मा या हाकीमे वकत या इसका नाएँब एमामत करे. भुत्बा एस नमाज में नही पढा जाता अजान और ईकामत भी नही. छोती लोगों को नमाजके लीअे जमा करना हो तो भबर देने के लीअे अेलान कर दीया जाअे. नमाज में बडी बडी सुरतें जैसा के सूरअे बकरह वगैरह पढना और इकुअ और सजदों का बहोत देर तक करना मसनुन है कीराअत आहीस्ता करनी याहीये. नमाज के बाद एमाम को याहीये के हुआमें मशगुल हो जाअे और मुक्तही सब आमीन कहे. जब तक ग्रहण भत्म नहो हुआमें मशगुल रहेना याहीये हा, अगर अैसी हालतमें सुरज गुर्ब होजाये या कीसी नमाज का वकत आ जाये तो अलबत्ता हुआ भौकुफ़ करके नमाज में मशगुल होना याहीये.

નમાઝ ખુસુફ : ચાંદ ગ્રહન કે વકત ભી દો રકઅત નમાઝ પઢના મસનુન હૈ. મગર ઈસ્મે જમાઅતસે પઢના મસનુન નહી. ઈસી તરહ જબ કોઈ ખૌફ યા મુસીબત પેશ આયે તો નમાઝ પઢના મસનુન હૈ. જૈસે કે સપ્ત આંધી ચલે, યા ઝલઝલા (ધરતીકંપ) આયે, યા બીજલી ગીરે યા, સિતારે બહોત ટૂટે, યા બહોત બરફ ગીરે, યા બારિશ જ્યાદા બરસે, યા કોઈ આમ બિમારી ફેલે, યા દુશ્મન કા ખૌફ હો લેકિન ઐસે મૌકે પર જો નમાઝ પઢી જાયે ઉસ્મે જમાઅત ન હો. હર શખ્સ અપને ઘરમેં અકેલા પઢે.

નખીયે કરીમ સલ્લલ્લાહો અલયહી વસલ્લમ કો જબ કોઈ મુસીબત યા રંજ હોતાં તો નમાઝમેં મશ્ગુલ હો જાતે. (નમાઝકી બડી કિતાબ)

બિમાર કી નમાઝ

(૧) **મસઅલા :-** જબ બિમારીમેં બિલ્કુલ ખડે હોને કી તાકત ન હો યા ખડે હોને સે સપ્ત તકલીફ હોતી હો. યા બિમારીકે બઢ જાનેકા અંદેશા (ડર) હો યા સરમેં ચક્કર આકર ગીર જાનેકા ખૌફ હો યા ખડે હોનેકી તાકત તો હો લેકિન રૂકુઅ-સિજદહ નહિ કર સક્તા તો ઈન સબ સુરતોમેં બેઠકર નમાઝ પઢના જાઈઝ હૈ. ફીર અગર રૂકુઅ-સિજદહ કર સક્તા હૈ. તો રૂકુઅ સિજદેકે સાથ ઓર નહિ કર સક્તા તો રૂકુઅ સિજદોકે ઈશારોસે નમાઝ પઢ લો. રૂકુઅ ઓર સિજદેકે ઈશારે સર ઝુકા કર કરે. ઓર રૂકુઅ કે ઈશારેસે સજદે કે ઈશારેમેં સરકો જ્યાદા ઝુકાએ.

(૨) **મસઅલા :-** અગર કોઈ શખ્સ પુરા કિયામ નહી કર સક્તા લેકિન થોડી દેર ખડા હો સક્તા હૈ ઊસ્કો ઈતની દેર ખડા હોના જરૂરી હૈ.

(૩) **મસઅલા :-** અગર બિમારકો બેઠકર નમાઝ પઢનેકી તાકત નહો તો લેટે લેટે નમાઝ પઢ લે. લેટ કર નમાઝ પઢનેકી સુરત યે હૈ કી ચીત (છતા) લેટે ઓર પાવ કિબ્લેકી તરફ કરે લેકિન ફેલાના નહી ચાહીએ. ઘુટને ખડે રખે. ઓર સરકે નીચે તકિયા વગેરહ રખકર જરા ઊંચા કર લે ઓર રૂકુઅ સિજદેકે લીએ સર ઝુકા કર ઈશારેસે નમાઝ પઢે. યે સુરત તો અફઝલ હૈ.

ઓર જાઈઝ યેભી હૈ કે શિમાલ (ઊત્તર)કી જાનીબ સર કરકે દાહીની કરવટ પર યા જુનુબ (દક્ષિણ)કી જાનીબ સર કરકે બાયે

કરવટ પર લેટે ઓર ઈશારેસે નમાઝ પઢલે ઈન દોનોં સુરતો મેં દાયે કરવટ પર લેટના અફઝલ હે.

- (૪) અગર બિમારમેં સરસે ઈશારા કરનેકી ભી તાકત ન હો તો નમાઝકો મુઅખ્ખર (લેટ) કરે ફીર અગર એક રાત દિનસે ઝિયાદા ઊસ્કી યહી હાલત રહી. તો છુટી હુઈ નમાઝોંકી કઝાભી ઊસ્કે ઝિમ્મે નહિ. હાં, અગર એક રાત દિન યા ઊસ્સે કમમે ઊસે સરસે ઈશારા કરનેકી ભી તાકત આ ગઈ. તો છુટી હુઈ નમાઝોં કી (જો પાંચ નમાઝે યા ઈસ્સે કમ હોગી) કઝા ઊસ્કે ઝિમ્મે લાઝિમ હોગી.

(તાલીમુલ ઈસ્લામ)

- (૫) મસઅલા :- રૂકુઅ ઓર સિજદા ઈશારેસે કરને કે લીએ તકીયા વગેરહ કોઈ ઊચી ચીઝ રખ લેના. ઓર ઊસ પર સિજદા કરના બહેતર નહી. જબ સિજદહ કરનેકી તાકત ન હો તો બસ ઈશારા કરલીયા કરે. તકીયા પર સિજદહ કરનેકી ઝરૂરત નહી.

- (૬) મસઅલા :- અગર બિમારકા બિસ્તર નાપાક હે. લેકીન ઊસ્કે બદલનેમેં તકલીફ બહોત હો તો ઊસી પર નમાઝ પઢ લેના દુરસ્ત હે.

(બેહશ્તી ઝેવર)

અવકાતે મમનુઅ

તીન વક્ત એસે હે કે ઊન્મે કોઈ નમાઝ જાઈઝ નહિ. ઊન્કો અવકાતે “મમનુઆ” કહતે હે.

- (૧) સુરજ નિકલનેકા વક્ત (યાની તુલુએ આફતાબ કે વક્ત)
 (૨) ઝવાલકા વક્ત યાની ઠીક દોપહરકા વક્ત જબ કે આફતાબ બીચ આસ્માનમેં હો.
 (૩) ગુરૂબે આફતાબ કે વક્ત યાની સુરજ છુપનેકા વક્ત. ઈન તીનો વક્તોમેં સિજદએ તિલાવતભી મકરૂહ ઓર મનાહે. લેકીન અભી અસર કી નમાઝ ન પઢી હો તો ઊસ્કો પઢ લેના ચાહીએ.

અવકાતે મકરૂહ

જબ ચાહે નફીલ નમાઝ પઢ સકતે હે. લેકીન ચંદ અવકાત એસે હે જીસ્મે નમાઝ પઢના મકરૂહ હે.

- (૧) સુબ્હ સાદીક સે લેકર સુરજ તુલુઅ હોને તક
- (૨) નમાઝે અસરકે બાદસે સુરજ છુપને તક ઈસી તરહ મગરીબકી નમાઝ પડનેસે પહેલે ઈસી તરહ અસરકે ફર્જો કે બાદ આફતાબ મુતગયર (પીલા) હોનેસે પહેલે નમાઝ મકરૂહ હૈ.

લેકર ઈન તીનો વક્તોમેં ફર્જ નમાઝકી કઝા ઓર નમાઝ જનાઝા, સિજદએ તિલાવત બગૈર કરાહત જાઈઝ હૈ.

(તાલીમુલ ઈસ્લામ)

નમાઝકે બાદકી દુઆએ

- (૧) હર ફર્જ નમાઝકે બાદ યે દુઆ પઢો :-

હઝરત અબુ હુરૈરહ (ર.દી.)સે રિવાયત હૈ કે રસુલે અકરમ (સ.અ.)ને ફરમાયા જો શખ્સ હર ફર્જ નમાઝકે બાદ ૩૩ મરતબા

سُبْحَانَ اللَّهِ ۳۳ مَرَّةً وَالْحَمْدُ لِلَّهِ ۳۳ مَرَّةً وَاللَّهُ أَكْبَرُ
أَوْ رَايَكَ مَرَّةً لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ

‘સુબ્હાનલ્લાહ’ ૩૩ મરતબા ‘અલહમ્દુ લિલ્લાહ’ ૩૪ મરતબા ‘અલ્લાહુ અકબર’ ઓર એક મરતબા ‘લાઈલાહ ઈલ્લાહુલ્લાહુ વહદહુ લા શરીક લહુ લહુલ મુલ્હુ વલહુલ હમ્દુ વહોવ અલા કુલ્લે શયઈન કદીર’ પઢ લીયા કરે તો ઊસ્કી ખતાએ મુઆફ કર દી જાએગી. અગર યે દરિયાકી મોજોંકે બરાબર હો.

(બુખારી - મુસ્લિમ)

- (૨) હઝરત અબુ ઐયુબ અન્સારી (ર.દી.) સે રિવાયત હૈ કે રસુલે કરીમ (સ.અ.)ને ફરમાયા જો શખ્સ હર ફર્જ નમાઝકે બાદ આયતુલ કુર્સી (પારા-૩ રૂકુઅ-૧) ઓર યે આયત

શહીદલ્લાહુ અન્નહુ લાઈલાહા ઈલ્લાહુવ વલ મલાઈકતુ વઝીલુલ ઈલ્મે હાઈમમ્ બિલ્કીસ્તી. લાઈલાહ ઈલ્લાહુવલ અઝીઝુલ હકીમ.

કુલિલ્લા હુમ્મ માલિકલ મુલકે તુઅતીલમુલક મન તશાઝિ વતન્ઝીઝિલ મુલ્ક મીમન તશાઝિ વતુંઈઝઝો મન તશાઝિ વતન્ઝીલ્લુ મનતશાઝિ બિન્દીકલખયર ઈન્નક અલા કુલ્લે શયઈન કદીર.

લયલ ફીન નહારી વતુલીજુન નહાર ફીલ લઈલી વતુપરીજુલ અથ
મીનલ મથ્યેતી વતુપરીજુલ મથ્યેતી મીનલ હથ્યે વતરઝૂક મન તશાહિ
બિગયરે હિસાબ.

પઢે તો અલ્લાહ તઆલા ઊસ્કે સબ ગુનાહ મુઆફ ફરમાયેગેં ઓર
જન્નતમેં જગા દેગેં. ઓર ઊસ્કી સત્તર (૭૦) હાજતેં પુરી ફરમાયેગેં.
જન્મેસે કમસેકમ હાજત ઊસ્કી મગફેરત હૈ. (રૂહુલમઆની)

- (૩) હઝરત સૌબાન (ર.દી.)સે રિવાયત હૈ કે હુઝુર (સ.અ.) જબ નમાઝસે
ફારિગ હોતે તો ત્રીન મરતબા અસ્તગફીરૂંદલાહ પઢતે ઓર ફીર યે
દુઆ પઢતે.

અલ્લાહુમ્મ અન્તસ્સલામું વમિન્કસ્સલામું તબારકત યાઝલ જલાલી વલ
ઈકરામ. (મુસ્લીમ)

- (૪) હઝરત મુગીરહ બિન શોઅબા (ર.દી.) સે રિવાયત હૈ કે હુઝુરે
અકરમ (સ.અ.) જબ નમાઝ સે ફારિગ હોતે ઓર સલામ ફેરતે તો
યે પઢતે.

“લાઈલાહા ઈલ્લ્લાહુ વહદહું લાશરીક હલું લહુલ મુલુ વલહુલ
હમુ વહુવ અલા કુલ્લે શૈયઈન કદીર. અલ્લાહુમ્મા લા માનીઅ
લિમા અઅતયત વલા મુઅતિય લિમામનઅત વલા યફ્ઝિ જલ જદ્દે
મિન્કલ જદ્દ. (બુખારી-મુસ્લિમ)

- (૫) હઝરત સઈદ બિન અબી વક્કાસ (ર.દી.)સે રિવાયત હૈ કે હુઝુર
(સ.અ.) હર નમાઝ કે બાદ યે કલીમાત પઢતે યે.

અલ્લાહુમ્મ ઈન્ની અઝિઝૂબિક મિનલ જુબ્ની વલ બુખ્લી વ અઝિઝૂબિક
મિન અન અરૂદ્દ ઈલા અરજલીલ ઊમુરી. વઅઝિઝૂબિક મિન
ફિત્નતીદદૂન્યા વ અઝિઝૂબિક મિન ફિત્નતીલ કબર. (બુખારી)

- (૬) હઝરત મુઆઝ (ર.દી.) સે રિવાયત હૈ કે હુઝુર (સ.અ.)ને ફરમાયા
અય મુઆઝ (ર.દી.) હર ફર્ઝ કે બાદ યે દુઆ પઢના.

اللَّهُمَّ اَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحَسَنِ عِبَادَتِكَ

અલ્લાહુમ્મ અઈન્ની અલા ઝિક્રક વ શુકરીક વ હુસ્ન ઈબાદતિક.

(અબુદાવુદ)

તસ્બીહે ફાતિમહ :-

યે હૈ કે સુબહાનલ્લાહ ૩૩ મરતબા અલ્હમ્દુલિલ્લાહ ૩૩ મરતબા
 ઓર અલ્લાહુ અકબર ૩૪ મરતબા પઢો.

હુસુર (સ.અ.) ને અપની સાહબઝાદી હઝરત ફાતિમહ (ર. દી.)
 કો યે તસ્બીહ ખાસ તૌર પર સીખાઈ થી. ઈસી વજહ સે ઈસ્કો
 “તસ્બીહે ફાતિમહ” કેહતે હૈ.

પાંચો નમાઝો કે બાદ યે તસ્બીહ પઢની યાહીયે ઓર રાતકો જબ
 સોને કે લીયે લેટો તબ ભી યે તસ્બીહ પઢવો. (ઈસ્લામી તઅલીમ)

રોઝોં કા બચાન

ઈસ્લામકી તીસરી બુન્યાદ રોઝા હૈ : રમઝાનુલ મુબારકકે રોઝે રખના
 ઈસ્લામકા તીસરા ફર્ઝ હૈ. જો ઈસ્કે ફર્ઝ હોનેકા ઈન્કાર કરે વો મુસલમાન
 નહિ રહેતાં. ઓર જો ઈસ ફર્ઝકી અદા નકરે. વો સખ્ત ગુનેહગાર ઓર
 ફાસિક હૈ.

અગર ચે ના બાલિગ બચ્ચો પર રોઝા ફર્ઝ નહિ. લેકીન આદત
 ડાલને કે લીએ બાલિગ હોનેસે પહેલે હી રોઝા રખવાને ઓર નમાઝ
 પઢાનેકા હુકમ હૈ.

હદીસ શરીફમે હૈ કે જબ બચ્ચા સાત સાલકા હો જાએ તો નમાઝકા
 હુકમ કરો. જબ દસ સાલકા હો જાએ તો ઈસે નમાઝકે લીયે (જરૂરત હો
 તો) મારનાભી યાહીએ ઈસી તરહ જબ રોઝા રખનેકી તાકત પૈદા હો
 જાએ તો જીત્ને રોઝે રખ સકતા હો ઈત્ને રોઝે રખવાને યાહીએ.

રોઝેકી નિયત :- નિયત કસ્દ ઓર ઈરાદા કરનેકો કહેતે હૈ. દિલ સે
 ઈરાદા કરવેનાભી કાફી હૈ. જુબાનસે કેહલે તો બહેતર હૈ. રોઝેકે લીએ
 નિયત જરૂરી હૈ. અગર રોઝેકા ઈરાદા ન કીયા ઓર તમામ દીન કુછ
 ખાયા-પીયા નહી તો રોઝા નહી હોગા.

રમઝાનકે રોઝેકી નિયત રાતસે કરવેના બેહતર હૈ. અગર રાતકો
 નહી તો દીનમે ભી જવાબસે કેહ ઘંટા પહેલે કર સકતા હૈ. બશર્તે કુછ
 ખાયા-પીયા ન હો. અગર કોઈ અપની જબાનસેભી કેહ દે કે યા અલ્લાહ
 કલમે તેરા રોઝા રખુંગા યા અરબીમેં યે કહે “બિસૌમી ગદીન નવયતુ મીન
 શહરે રમઝાન” તો યેભી બેહતર હૈ.

રોજેકી ફઝીલત :

રમજાન શરીફ કે રોજોં કા બહોત બડા સવાબ હૈ. ઓર બહોતસી ફઝીલતેં હદીસોંમેં આઈ હૈ.

૧. હુઝૂર સલ્લલ્લાહો અલયહી વસલ્લમને ઈશાદિ ફરમાયા જો શપ્સ અલ્લાહકી રઝામંદી કે લીએ રોઝા રખે. તો ઉસ્કે પીછલે સબ ગુનાહ મગાફ હો જાએગે.

૨. હુઝૂર સલ્લલ્લાહો અલયહી વસલ્લમ ને ઈશાદિ ફરમાયા કે રોઝેદાર કે મુંહકી ભક (બદબુ) (જો ભુખકી વજહસે પેદા હોતી હૈ) અલ્લાહ તઆલા કે નજદીક મુશકકી ખુશ્બુ સે ભી જ્યાદા બેહતર હૈ.

૩. અલ્લાહ તઆલા ફરમાતે હૈ કે રોઝા ખાસ મેરે લીયે ઓર મેં ખુદ ઈસ્કી જઝા યાની બદલા દુંગા ઈસી તરહ ઓર બહોત સી ફઝીલતે આઈ હૈ.

જન ચીજોં સે રોઝા ટૂટ જાતા હૈ : (દો કિસ્મકી હૈ.)

૧. જન્સે સિર્ફ કઝા વાજબ હોતી હૈ વો ૧૩ હૈ.

(૧) કિસીને જબરદસ્તી રોઝેદાર કે મું સે કોઈ ચીઝ ડાલદી ઓર વો હલક મેં ઉતર ગઈ. (૨) કુલ્લી કરતે વકત બગૈર ઈરાદેકે પાની હલક મેં ઉતર ગયા. (૩) મુંહ ભરક કે (ઉલ્ટી) કર ડાલી (૪) કે (ઉલ્ટી) આઈ ઓર જાનબુઝ કર હલક મેં લોટાઈ. (૫) ઐસી ચીઝ જાનબુઝકર નિગલ ગયા કંકરી-પત્થર કા ટૂકડા-મીઝી-કાગઝ કા ટૂકડા વિગૈહ. (૬) દાંતો મેં રહી હુઈ ચીઝ યને કે બરાબર હો મુંહ કે બહાર કીયે બગૈર ખાલેના. (૭) કાનમેં યા નાક મેં તેલ યા દવા ડાલના. (૮) નાસ લેના. (૯) દાંતોસે નિકલા હુવા ખુન નિગલ લેના જબકે થુંક પર ખુન ગાલિબ આ જાએ. (૧૦) ભુલ સે કુછ ખા-પી લેના. (૧૧) યે સમજકર કે અભી સુબહ-સાદિક નહી હુઈ સહેરી ખાલી. ફિર માલુમ હુઆ કી સુબહ સાદિક હો ચુકી થી. (૧૨) રમજાન શરીફ કે સીવા દૂસરે દીનોં મેં કોઈ રોઝા જાનબુઝકર તોડ ડાલના (૧૩) બાદલ યા ગુબાર કી વજહ સે યે સમજકર કે આફતાબ ગુરૂબ હો ગયા રોઝા ઈફતાર કર લીયા હાલા કે અભી દીનથા.

૨. જન્સે કઝા ઓર કફફારા દોનોં વાજબ હોતે હૈ. તીન હૈ.

(૧) વો ચીજોં જો ખાઈ જાતી હૈ યા દવાકે તૌર પર યા લઝઝત કે લીયે ઈસ્તેમાલ કી જાતી હૈ જાન બુઝકર ખા-પી લેના. (૨) જાન બુઝકર સોહબત કરના. (૩) ફસ્હ ખુલવાઈ યા સુરમા લગાયા ફીર યે સમજકર કે રોઝા ટૂટ ગયા જાન બુઝકર ખા-પી લેના.

જન ચીજોં સે રોઝા મકરૂહ હો જાતા હૈ :

(૧) બિના જરૂરત કીસી ચીઝ કો ચખાના. (૨) નમક વગૈરહ ચખકર થુંક દેના. (૩) ટૂથ-પેસ્ટ, મંજન સે દાંત સાફ કરના. (૪) કિસી બીમાર કો અપના ખુન દેના.

(૫) ગીબત કરના (૬) રોઝે મે લડના, ઝઘડના, ગાલીદેના, ચાહે ઈન્સાન હો યા જાનવર કો યા કીસી ઓર ચીજકો. ઈન્સે રોઝા મકરૂહ હો જાતા હૈ.

જીન ચીઝોં સે રોઝા મકરૂહ નહી હોતા :

(૧) મિસ્વાક કરના. (૨) સરમેં તેલ લગાના. (૩) આંખોમે દવા યા સુરમા ડાલના. (૪) ખુશ્બુ સુંઘના. (૫) ગરમી કી વજહસે ગુસ્લ કરના. (૬) કીસી કીસ્મકા ઈજેક્ટશન યા ટીકા લગાના. (૭) ભુલકર પાના-પીના. (૮) ગલે મેં બગેર ઈખ્તીયાસકે ગરદો ગુબાર યા મખ્ખીકા ચલા જાના (૯) કાનમેં પાની ડાલના (૧૦) ખુદ બખુદ “કે” (ગિલ્ટી) હોના (૧૧) દાંતો સે ખુન નિકલના-મગર હલક મે ન જાએ તો રોઝે મે ખલલ ન હોગા.

સહેરી :- રોઝેદાર કો આખરી રાત મેં સુબ્હ સાદિક સે પહેલે સહેરી પાના મસ્નુન હૈ ઓર બાઈસે સવાબ વ બરકત હૈ હુઝુર (સ. અ.) કા ઈર્શાદ હૈ કે હક તઆલા શાનહુ ઓર ઉસકે ફરિશ્તે સેહરી પાનેવાલોં પર રહમત નાઝિલ ફરમાતે હૈ. એક જગા ઈર્શાદ હૈ. કે સહેરી ખાયા કરો ઊસ્મે બરકત હૈ. એક જગા ઈર્શાદ હૈ ત્રીન ચીઝોં મેં બરકત હે. જમાઅત મે, સરીદમે, ઓર સહેરી મે, એક હદીસ મે ઈરશાદ હૈ કે સહેરી ખા કર રોઝે પર કુવ્વત હાસીલ કરો કિસ કદર અલ્લાહ કા એહસાન ઓર ઈનઆમ હૈ, કે રોઝે કી બરકતસે ઈસસે પહેલે પાનેકો જિસ્કો સહેરી કહેતે હૈ. ઊમ્મત કે લિએ સવાબ કી ચીજ બનાયા ઓર ઉસ્મે ભી રોઝેદારોકો અજર દિયા જાતા હૈ આઘી રાતકે બાદ જીસ વક્તભી ખાયે સહેરી કી સુન્નત અદા હો જાએગી લેકિન આખરી રાત મેં પાના અફઝલ હૈ યાની જબ તક સુબ્હ સાદિક ન હો જાયે સહેરી સે ફારીગ હોકર રોઝે કી નિચ્ચત કર લેના કાફી હૈ. ઓર જબાન સે યે અલ્લાહ કહે તો અચ્છા હૈ.” બિસૌમી ગદીન નવયતું મિન શહરી રમઝાન.”

રોઝે કી કફ્ફારા :- ત્રીન તરીકો સે અદા હોતા હૈ.

(૧) ગુલામ આઝાદ કરે (અબ ગુલામ કા દૌર) (પ્રથા) ખત્મ હો ગઈ ઈસ લિયે સિર્ફ દો તરીકો સે કફ્ફારા દીયા જા સકતા હૈ.

(૨) દો મહીને લગાતા રોઝે રખે

(૩) અગર તાકત ન હોતો ૬૦ મિસ્કીનો (ગરીબા કો પાના ખિલાયે (દો વક્ત પેટ ભરકર) યા ૬૦ મિસ્કીનો કે સદકએ ફિત્રકે બરાબર યાની ૬૩૬ ગ્રામ ઘેહું યા ઈસકી કિમત હર મિસ્કીનકો અદા કરે.

તરાવીહ :- કા બચાન પછી નમાઝ કે બચાન મે ગુજર ચુકા હૈ.

ઈફતાર :- આફતાબ ગુરૂબ હોને કા યકીન હો જાને કે બાદ ઈફતાર મે દેર.

करना मक़रूह है। हा बादल हो तो दो बार भीनीट ईन्तेज़ार कर लेना बेहतर है। और तीन भीनीट का एहतीयात बहरहाल करना याहीये।

भजुर से ईक़तार करना अक़रब है। और कीसी दूसरी चीज़से ईक़तार करे तो उसमें कोई क़राहत नहीं। ईक़तार के वक़्त ये हुआ मसनुन है।

اللَّهُمَّ لَكَ صَبْتُ وَعَلَى رِشْقِكَ أَفْطَرْتُ

“अल्लाहुम लक़ सुभु वअला रीज़कीक अफ़तरतु”

और ईक़तार के बाद ये हुआ पढ़े।

ذَهَبَتِ الظُّمَأُ وَأَبْتَلَتِ العَرُوقُ وَثَبَّتِ الأَجْرُ إِزْ شَاءَ ائِلَهُ

“जड़भतीज-जम्बु वभतल्लील ग़िज़कु वसभतल अज़रु ईन्शाअल्लाह”
भाज़ रिवायत में आया है के ईक़तार के वक़्त हुआ कुबुल होती है। मगर हमलोग़ जाने पर ईस तरह तुटते है के हुआ मागने की क़ुरसह कहां? ईक़तारकी हुआ त्नी याद नहि रहती।

उहीस में ये हुआ मुप्तसर मीलती है उज़रत अब्दुल्लाह ईब्ने ग़िभर (र.दी.) ईक़तार के वक़्त ये हुआ पढा करते थे।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْ تَغْفِرَ لِي

“अल्लाहुम्म ईन्नी असअलुक़ बिरहमतीक़ वसिअत कुल्ल शयईन अन तग़ ड़ीरली।”

भाज़ क़िताबों में मुह हज़ुर (स.अ.) से ये हुआ मनकुल है।

“या वासिअल इहली ईज़ीरली” और वाईलाहा ईल्लल्लाह नस्तग़ीरल्लाह नसअलुक़ल जन्नत वन उज़ुबिक़ ग़िनन्नार और कोई पास हुआ ज़री नहीं अपनी अपनी ज़रतके लीये हुआ इरमाये। याद आ जाये तो ईस गुनेहगारकोली अपनी हुआमे शामिल इरमावे के साईल हुं सईल का उक़ होता है।

(इज़ाईले रमज़ान)

એતિકાફકા બયાન

(૧) ઈસ્કો કહતે હૈ કિ એતિકાફકી નિચ્ચત કરકે મસ્જીદમં રહે. ઓર એસી હાજત કે જો મસ્જીદમં પૂરી ન હો સકે (જૈસે પેશાબ, પાખાના, ગુસલકી ઝરૂરત. ઓર વુજુકી ઝરૂરત વિગેરહકે સિવા) બાહર ન જાયે

(૨) એ'તિકાફ રમઝાન કે આખરી અશરહ મં યાની આખરી દસ દીનો કા સુન્નતે મુઅકકેદહ હૈ. ઊસ્કી ઈબ્તેદાઅ ૨૦ રોઝે કો ગુરૂબે આફતાબસે શુરૂ હોતી હૈ. ઓર ઈદકા ચાંદ દેખતેહી પાત્મ હો જાતી હૈ.

યે એ'તિકાફ સુન્નતે મોઅકકીદા અલલ કિફાયહ હૈ. યાની બાઝ લોગોં કે કર લેનેસે સબકેઝિમ્મેસે અદા હો જાતા હૈ. એ'તિકાફ એસી મસ્જીદમં કરે જહાં નમાઝ જમાઅતસે હોતી હો.

એ'તિકાફ કે ફાઈદે

(૧) એ'તિકાફ કરનેવાલા ગોયા. અપના તમામ બદન ઓર તમામ વક્ત અલ્લાહ તઆલાકે લીએ વક્ફ કર દેતા હૈ.

(૨) દુનિયા કે ઝખડો ઓર બહોતસે ગુનાહોસે મહફૂઝ રહતા હૈ.

(૩) એ'તિકાફ કી હાલતમં ઈસે હર વક્ત નમાઝ કા સવાબ મીલતા હૈ.

(૪) મસ્જીદ ચુંકે અલ્લાહ તઆલા કા ઘર હૈ ઈસલિયે એ'તિકાફમં મુઅતફિક અલ્લાહ તઆલા કા પડોસી બલકે ઊસ્કે ઘરમં મહેમાન હોતા હૈ.

ચુંકે એ'તિકાફ કરનેવાલા ઘર કારોબાર ઓર સબ લોગોંકો છોડકર ખુદાકે દર પર પડા હૈ. ઈસલિયે ઈસ્કો ઈબાદત ઓર રમઝાન કી બરકતોંસે ફાઈદા ઊઠાનેકા મૌકા ઝિયાદહ મિલતા હૈ. ઈસલિયે ઊસ્કો અપના કિંમતી વક્ત નેક કામોંમે કુર્આન શરીફ કી તિલાવતમં, દુરૂદ શરીફ પઢને મં., દીન કી બાતે સિખને સિખાનેમં., દુઆએ કરને, વગયરહમં લગાના ચાહીયે.

શબોહ :

ઈસ ઊમ્મતકી ઊંમરે (જંદગી) પહેલી ઉમ્મતોં કે મુકાબલેમે છોટી હૈ. ઈસલિયે અલ્લાહ તઆલાને અપને ફઝલો કરમસે એક રાંત એસી મુકર્રર ફરમાઈ કે ઊસ્મે ઈબાદત કરનેકા સવાબ એક હઝાર મહીનોંકી ઈબાદતસે જયાદહ હૈ.

લેકીન અલ્લાહ તઆલાને ઈસ રાતકી પોશીદહ રખ્યા. તાકે લોગ ઊસ્કો તલાશ કરનેમે કોશીષ કરે. ઓર જિયાદા સવાબ હાસિલ કરે.

રમઝાનકે આખરી દીનોં કી રાતોંમે શબેકદ્ર કે હોનેકા જિયાદા એહતીમાલ હૈ. યાની ૨૧-૨૩-૨૫-૨૭-૨૯ ઓર સત્તાઈસવી રાતકી જિયાદા એહતીમાલ હૈ. ઈન રાતોંમે બહુત જિયાદા ઈબાદત ઓર તૌબા વ ઈસ્તિગફાર ઓર દુઆ મે મશગુલ રહના ચાહીયે.

અગર તમામ રાત જાગનેકી તાકત યા ફુરસત ન હો તો જીત્ના હોસકે જાગે ઓર નફીલ નમાઝે. તિલાવતે કુર્આન મજીદ, ઓર ઝિક્રો તસ્બીહ, મેં મશગુલ રહે ઓર કુછ ન હો સકે તો ઈશાં ઓર ફજર જમાઅતસે અદા કરનેકા એહતીમામ કરે હદીસમે હે કે યે રાતભર જાગનેકે હુકમમેં હૈ.

ઈનરાતોંકો સિફ જલ્સો ઓર તકરીરોંમે સફ કરકે સો જાના બડી મહરૂમી હૈ. તકરીરે ફીરબી હો સકતી હૈ ઈબાદતકા યે વક્ત ફીર હાથ ન આયેગા.

અલબત્તા જો લોગ રાત ભર ઈબાદતમેં જાગનેકી હિમ્મત કરે વો શુરૂંમે કુછ વાઅઝ સુન લે. ફીર નવાફીલ ઓર દુઆમેં લગ જાયે તો દુરસ્ત હૈ. (ઝવાહીરૂલ ફિકહ)

હઝરત આઈશા (રદી.)ને હુઝુર (સ.અ.)સે પુછા, યા રસુલુલ્લાહ (સ.અ.)અગર મુજે શબેકદ્ર કા પતા ચલ જાયે તો કયા દુઆ માગું ? હુઝુર (સ.અ.)ને ઈશાદ ફરમાયા. અલ્લાહુમ્મ ઈન્નક અહુવ્વુન તુહીબ્બુલ અફવ ફઅફુ અન્ની. (ઈબ્નેમાજા)

નિહાયત જામેઅ દુઆ હૈ હકતઆલા અપને લુલ્હો કરમસે આખેરતકે મુતાલીબેસે મુઆફ ફરમા દે તો ઈસ્સે બઢકર ઓર કયા ચાહીયે ?

સદકએ ફિત્ર

પુદા તઆલાને અપને બંદો પર સદકા મુકરર ફરમાયા હૈ કે રમઝાન શરીફ કે ખત્મ પર રોઝા ખુલ જાનેકી ખુશીમે શુક્રિયા કે તૌર પર અદા કરે ઊસે “સદકએ ફિત્ર” કહતે હૈ. ઓર રોઝા ખુલને કી ખુશી મનાને કા દીન હોનેકી વજહસે ઈસ ઈદકો “ઈદૂલફિત્ર”કહતે હૈ.

જો મુસલમાન ઈત્ના માલદાર હો જિસ પર ઝકાત વાજબ હો યા

जिस पर जकात तो वाजब नहि. लेकिन ज़रतसे जियादा ईत्ना सामान है के ईस पर जकात वाजब हो जाती है तो ईस पर ईदके दीन सदकअे फ़ित्र देना वाजब है. याहे ज़रत से जियादा माल तिजारतका हो या नहोऔर याहे जिस पर साल पुरा गुजरा हो या न गुजरा हो अगर कोई कर्जदार है तो कर्ज की रकम जोउकर जिस्मे से निकाल दो. देभो अगर बाकी माल निसाब से कम रहेता है तो सदकअे फ़ित्र वाजब नहि.

सदकअे फ़ित्र अपनी तरफ़से और अपनी नाबादिग औलाद की तरफ़से अदा करना वाजब है.

मशहूर है के "जिस्ने रोजे नहि रफ़्हे" जिस पर सदकअे फ़ित्र वाजब नहि. ये बात गलत है.

ईदके दीन ईदकी नमाज़में जानेसे पहले अदा करना बेहतर है. अगर नमाज़ से पहले अदा न करे तो नमाज़ के बाद अदा करे. जब तक अदा न करेगे जिस पर वाजब रहेगा.

सदकअे फ़ित्रका वजन :- सदकअे फ़ित्रमें गेहुं या आटा आधा साअ यानी १ किलो इदर ग्राम अेक शब्स का सदकअे फ़ित्र है. और ईदतीयातन (दो किलो) देना याहीये. अगर किमत देना हो तो दो किलो गेहुं की किमत बाज़ार भावसे अदा करे.

सदकअे फ़ित्र जिन्हीं लोगोको देना ज़रूज है. जिन्को जकात देना ज़रूज है. (यानी गरीबको जिस्के पास निसाब तक माल नहो)

जिस्को जकात देना ज़रूज नहि जिसको सदकअे फ़ित्र देनाभी ज़रूज नही.

कोई इर्ज या वाजब सदका जैसे लोगोको देना ज़रूज नही जिन्के पास सदकअे फ़ित्र का निसाब मौजूद हो.

नफील रोजे

आशुरह का रोजा :-(१) मुहर्रम की दसवी तारीखका रोजा रचना मुस्तहब है इदीष शरीफ़में आया है आप (स.अ.)ने ईर्शाद फ़रमाया मुजे जिम्मीद है के आशुरे के दीन रोजा रचना पीछले सालके तमाम छोटे गुनाहोंका कफ़ारा हो जाता है. (मुस्लिम)

आशुरा के रोजे के साथ अेक रोजा मिलावो बेहतर ये है के नवमी और दसवी का रोजा रफ़्फो अगर कीसी वजहसे नवमीका रोजा न रफ़्फ

सके तो ईर दसवी के साथ ग्यारहवी का रोजा रभले.

सिर्फ़ दसवीं मोहर्रमका अक रोजा रभना मक़रूह है.

(२) **अरफ़ह** :- यानी नवमी ज़ल्जलाका रोजा रभनेका बहोत सवाब है युनाये हुज़ुर (स.अ.)का ईर्शाद है में पुढासे ज़िम्मीद करता हुं के अरफ़हका रोजा रभना अक साल के अगले पीछले गुनाहों का कफ़ारह हो जाता है (मुस्लिम)

इर्षाद :- ज़ल्जली नवमी तारीख जस दीन अरफ़ात के मयदानमें ७४४के लीये जमा होते है. उस दीनको "अरफ़ह" कहते है. शरीअतमें साल बरमें यही अक दीन अरफ़हका है. ज़हील लोगोंने और भी कई दीनोंके नाम अपनी तरफ़से "अरफ़ह" रभदीया है जो गलत और बे असल है.

पंदरवी शाबानका रोजा :- शाबानकी पंदरवी रातको ईबादत करना. और दीनको रोजा रभना मुस्तहब है. हुज़ुर (स.अ.)का ईर्शाद है के जब शाबानकी पंदरवी रातहो तो उसमे जागो (ईबादतके लीअे)और ईस्के दीनमें रोजा रभो. क्युंके अल्लाह तआला शबेबरातमें आइताब गुज़ब होने के वक्तसे आस्मानसे दुनिया की तरफ़ नुज़ुल (यानी पास रहमतें) फ़रमाते है और फ़रमाते है क्या?कोई मग़ीरत याहंनेवाला है. के में उसको बपशदुं क्या कोई रोजी मांगनेवाला है ? मुसीबत ज़हद है ? के में उसको तंदुरस्ती हुं ? क्या कोई औसा है ? क्या कोई औसा है ?(रात बर यही रहमत का दरिया बेहता रहता है यहां तकके सुब्ह सादीक हो जाये.) (ईबनेमाजा)

इर्षाद :- शबे बरातकी असल ईत्नी है के रातको ईबादत के लीये जागे. और दीन को रोजा रभे. के ये काम बहुत बुरुगी और बरकतके है. हमारे नबी (स.अ.)ने भी इस रातमें ईबादत करनेकी और दीनको रोजा रभनेकी तरगीब (शोक) दिलाया है. इस रातमें हमारे नबी (स.अ.)ने क़ब्रस्तान जाकर मुर्दों के लीअे मग़ीरतकी दुआ मागी है ईसलीअे हमबी ईस तारीखमें मुरदोको सवाब बपश दीया करे. याहे कुरान शरीफ़ पढ़कर. याहे पाना बिलाकर याहे सदका करके. याहे दुआअे मग़ीरत करके. तो ये सब तरीके सुन्नतके मुताबीकहै. ईस्से ज़ियादह ज़त्ने बभेउ लोग करते है.और इसमे हलवेकी केद लगा रभी है. और ईस्की पाबंदी हो रही है. ये सब गलत और बे असल बातें है. (बडेशती ज़ेवर)

शव्वालके छे रोजे :- माहे शव्वालमें छे नकील रोजे रपनेकी इजीलत दुसरे नकील रोजों से जियादा है. जस्की "शशाईद" के रोजे कइते है.

उजरत अबु अय्युब अन्सारी (रही.)से रिवायत है के हुजुर (स.अ.)ने ईशाईद इरमाया जस्ने रमजानके रोजे रप्पे और ईस्केबाद शव्वालके छे रोजे रप्पे. तो गोया जस्ने सारा जमाना रोजे रप्पे.

(मुस्लिम शरीफ)

इर्षाद :- बाज लोग ये समजतें है के अगर जिनको ईद के बाद दुसरे दीन फोरन शुर्ज करे दे तबतो सवाब मिलेगा. वरना नहि मिलता- ये भ्याल गलत है. बल्के अगर महीना त्तर में ली पुरा कर लीया तो ली सवाब भीलेगा. याहे ईद के बाद फोरन शुर्ज करे या बादमें याहे लगातार छे रोजे रप्पे. या मुतफर्रिक तौर पर (अलग अलग) रप्पे. बहरहाल जस्को सवाब भीलेगा.

अय्यामे बीज के रोजे :- अइजल ये है के हर महिने की तेरह, चौदह, पंद्रह तीन दीनके जन्की "अय्यामे बीज" कइते है. रोजा रप लीया करे. तो गोया जस्ने सालत्तर बराबर रोजे रप्पे. हुजुर (स.अ.) ये रोजे रप्पा करते थे जैसे ही पीर और जुमेरात के दीन ली रोजा रपते थे. अगर कोई छिम्मत करे तो बहुत सवाब है.

उजरत अबु हुदैरह (र. दी) से रिवायत है के मुजे मेरे पलील सल्लल्लाहु अल्यहे वसल्लमने तीन रोजोंकी वसीयत इरमाई- हर महीना तीन रोजें रपनेकी याशतकी दो रकातें अदा करनेकी और इस बातकी के में सोनेसे पहले वित्र अदा कर लिया कइं (बुभारी-मुस्लिम शरीफ)

पांच दिनोंमें रोजा रपना हराम है

(१) ईदुल फ़ित्र (२) ईदुल अदहा. (३) ११-१२-१३ जल्लज्ज ईन पांच दिनों में रोजा रपना हराम है.

ईदन की रातों की इजीलत :- नबीये करीम (स.अ.) का ईशाईद है के जो शप्स सवाब की निथ्यत करके दोनों ईदोंकी रातों में जागे. और ईबादत में मशगुल रहे जस्का दील जस दीन नहि भरेगा. जस दिन सबके दील मर जायेगें (यानी कीत्ने इसाद के वक्त जब लोगों के दीलो पर मुईनी छाती है) जस्का दील जिन्दा रहेगा और मुमकीन है सुर हुके

જાનેકા દીન મુરાદ હો કે ઊસ્કી રૂહ બેહોશ ન હોગી.

એક હદીસ મેં ઈશાદ હૈ કે જો શપ્સ પાંચ રાતોં મેં ઈબાદત કેલીયે જાગે ઈસ્કે લીયે જન્નત વાજબ હો જાયેગી.

- (૧) લયલતુત્તરવિય્યહ. યાની આઠવી ઝીલ્હઝા કી રાત.
- (૨) લયલતુલ અરફહ- યાની નવમી ઝિલ્હજ કી રાત
- (૩) લયલતુન્નહર-યાની દસ ઝિલ્હજ કી રાત
- (૪) ઈદુલ ફિત્ર કી રાત
- (૫) શબે બરાત યાની પંદરવી શાબાન કી રાત.

(ફઝાઈલે રમઝાન)

ઝકાતકા બયાન

ઈસ્લામકા ચોથા રૂકન ઝકાત હૈ :- “ઝકાત” માલકે ઈસ હિસ્સેકો કહેતે હૈ. જીસ્કો ખુદાકે હુકમ કે મુવાફીક ફકીરોં મોહતાજોં વગયરહ કો દેકર ઊસ્કા માલીક બના દીયા જાયે. યું સમજો નમાઝ રોઝા બદની ઈબાદત હૈ. ઔર ઝકાત માલી ઈબાદત હૈ. માલદારોકો ઝકાત નિકાલના ફર્ઝ હૈ. કુર્આન શરીફકી આયતોં ઔર હુઝુર (સ.અ.) કી હદીસો સે ઈસ્કી ફર્ઝિયત સાબિત હૈ. જો શપ્સ ઝકાત કે ફર્ઝ હોનેકા ઈન્કાર કરે વો કાફીર હૈ. ઝકાત હિજરત કે દુસરે સાલ ફર્ઝ હુઈ.

જન માલોં મેં ઝકાત ફર્ઝ હૈ. શરીઅતને ઊન્કી ખાસ ખાસ મિકદાર મુકર્રર ફરમાઈ હૈ. જબ ઈન્ની મિકદાર કિસીકે પાસ પુરી હો જાએ ઔર એક સાલ ઈસ પર ગુઝર જાએ તો ઝકાત ફર્ઝ હોતી હૈ. ઈસ મીકદાર કો “નિસાબ” કહેતે હૈ.”

ઝકાત કી તાફીદ ઔર ફઝાઈલ

(૧) હુઝુર (સ.લ.) ને ઈશાદ ફરમાયા જો શપ્સ માલકી ઝકાત અદા કરે તો ઊસમાલ કા શર ઊસ્સે જાતા રહતા હૈ. (તિબરાની)

યાની માલકે શરસે હિફાઝત રહતી હય અબિરતકે એઅતબારસે તો ઝાહીર હૈ. કે અઝાબ નહી હોગા. ઔર દુનિયાકે એઅતબારસે ઊસ્કા ફાઈદા માલકા આફતોસે મહફુઝ રહેના હૈ.

- (૨) હુજુર (સ.અ.) કા ઈશ્દિ હૈ કે અપને માલકો ઝકાતકે ઝરીયે મહફુઝ બનાઓ. ઓર અપને બિમારોંકા ઈલાજ સદકાસે કરો. બલા ઓર મુસીબતોં કા ઈલાજ દુઆ ઓર અલ્લાહ તઆલા કે સામને અજીઝી સે કરો
- (૩) હુજુર (સ.અ.)ને ફરમાયા કે ઝકાત ઈસ્લામકા (બહોત બડા) પુલ હૈ. (તિબરાની)

ઝકાત ન દેને પર અઝાબ

જસ શખ્સકે પાસ માલ હો ઓર ઊસ્કી ઝકાત ન નિકાલે તો ક્રિયામતકે દીન ઊસ્કો બહુત સખ્ત અઝાબ હોગા.

(૧) રસુલે અકરમ (સ.અ.)ને ઈશ્દિ ફરમાયા જીસ્કે પાસ સોના ચાંદી હો ઓર ઊસ્કી ઝકાત ન દેતા હો તો ક્રિયામત કે દીન ઊસ્કે લીયે આગકી તપ્તીયા બનાઈ જાયેગી ફીર ઊન્કો દોઝબકી આગમે ગરમ કરકે ઊસ્કી દોનોં કરવટે ઓર પેશાની ઓર પીઠ પર દાગ દીયે જાયેગે. જબ ઠંડી હો જાયેગી તો ફીર ગરમ કરલી જાયેગી. (મુસ્લિમ શરીફ)

(૨) હુજુર (સ.અ.) કા ઈશ્દિ હૈ કે જીસ્કો અલ્લાહને માલ દીયા હો ઓર ઊસ્કી ઝકાત અદા નહી કી તો ક્રિયામતકે દીન ઊસ્કા માલ ઝેહરીલા ગંજા સાપ બનાયા જાયેગા. જો ઈસકી ગરદનમે લીપટ જાયેગા વો ઈસ્કે દોનોં જબડે નોયેગા ઓર કહેગા મેં હી તેરા માલ હું તેરા ખઝાના હું.

(બુખારી શરીફ)

પુદાકી પનાહ ભલા ઈત્ને બડે અઝાબકો કોન બરદાશત કર સકતા હૈ. થોડીસી લાલચ કે લીએ ઈત્ને બડે અઝાબ કો ભુગતના બડી બેવકુફી હૈ. પુદાકા દિયા હુવા માલ પુદાકે નામ પર ન દેના કિત્ની બુરી ખાત હૈ.

ઝકાત રોકને સે કાલ પડતા હૈ

રસુલે અકરમ (સ.અ.) કા ઈશ્દિ હૈ જો લોગ ઝકાત રોક લેતે હૈ. અલ્લાહ ઈન પર કહત યાના કાલ કી મુસીબત ડાલ દેતે હૈ. દુસરી હદીસમેં હૈ કે જો લોગ ઝકાત રોક લેતે હૈ. ઊન પર બારિશ રોક લી જાતી હૈ.

મરખલા :- (૧) અગર કિસીકી મીલકીયતમે પર-૧/૨ (સાડે બાવન) તોલા ચાંદી યા સાડે સાત તોલા સોના હો યા ઊસ્મે કીસી એક કી કિંમત

- के बराबर रुपिया या नोट हो तो उस पर झकात ईर्ज है।
- (२) तिजारत का सामान अगर ५-१/२ (साडी बावन) तोला यांटीकी किंमत के बराबर हो तो उस पर भी झकात ईर्ज है।
- (३) कारभाने और मशीनों पर झकात ईर्ज नहीं लेकिन जो माल उसमें तैयार होता है उस पर झकात ईर्ज है।)ईसी तरह जो कय्या माल कारभानेमें सामान बनानेके लीअे रभ्या है उस पर झकात ईर्ज है।
- (४) सोना यांटी की दर थीज पर यानी जेवर -बरतन -अस्वीजरी -सोने यांटी के बटन वगेरह इन सब पर झकात ईर्ज है।
- (५) कीसीके पास थोडा रुपिया थोडा सोना यांटी और थोडा तिजारत का सामान है। लेकिन अलग अलग कोई सामान निसाब तक नहीं तो सबको मिलाकर देपो इन सब कि किंमत साडे बावन तोला यांटी के बराबर हो जाअे तो झकात ईर्ज होगी। और इससे कम रहे। तो झकात ईर्ज नहीं।
- (६) झकात अदा करने में जस कदर माल है। या रुपिया है। या सोना यांटी है। ईस्का यावीसवा हिस्सा देना ईर्ज है। और झकात देने के वक्त जो त्वाव होगा। ईस हिस्सासे देनी पडेगी। (परीद किंमत न लगेगी।)
- (७) झकात की रकम जस मुस्तलिकको दी जाअे तो कीसी महेनत या पिदमत के बदलेमें न दे। अगर बदले मे देगा तो झकात अदा नहीं होगी।
- (८) झकात की रकम मुस्तलीक को देकर उसको ईस रकमका मालीक बना देना जरूरी है। जस्मे उसको दरतरहका ईप्तियार हो कब्जे बगैर झकात अदा नहि होगी।

(जवाबिद्वल किंकड)

नोट :- झकात कितने लोगों पर ईर्ज है उसकी तफ्सील लोगों के डालात के लिहाज से बहुत लम्बी है इसलिये मौका और डालात के लिहाज से मालुम करे और उस पर अमल करे जस्की तफ्सील बाकी किताबोमे मौजूद है।

वो लोग जुन्को झकात देना जरूरत है

झकात देते वक्त या झकात की रकम या माल अलाहिदा करते वक्त ये निश्चत करना जरूरी है के "ये माल में झकात मे देता हुं" अगर बगैर निश्चत के दे दीया फिर झकातमें गीन लीया तो झकात अदा नहि होगी।

(१) इकीर को यानी वो शप्स जस्के पास थोडा माल व अस्बाब है।

लेकिन निसाब के बराबर नहि. उसकी ज़कात देना ज़ाईज है.

(२) कर्ज़ दार को यानी वो शम्स ज़स्के ज़म्मे लोगो का कर्ज़ हो. और उसके पास निसाब के बराबर माल न हो तो उसकी भी ज़कात देना ज़ाईज है.

(३) वो मुसाफ़िर जो हालते सफ़रमें तंगदस्त हो गया तो उसकी भी ज़रूरतके मुताबीक दे सकते है.

(४) मदारिस के मोहतमीमों को तालीबे एल्मो पर भर्य करने के लीये देनेमे कुछ मुज़ाईका (वांधा) नहि.

वो लोग ज़ुन्को मक़ात देना ज़ाईज नहि

(१) मालदार को ज़स्के पास निसाब के बराबर माल हो या ईसकी किंमत के बराबर कोई माल हो जैसे तांबे के बरतन वगेरह जो उसकी ज़रूरतसे ज़ियादा हो उसकी ज़कात का माल देना ज़ाईज नहि.

(२) सैयद को यानी बनीहाशीम. हज़रत जअफ़र (रदी.) और हज़रत अबी (रदी.)की औलाद मुराद है.

(३) अपने बापको मा, दादा-दादी, नाना-नानी, बेटा-बेटी, पोता-पोती, नवासा-नवासी वगेरह को ज़कात नही दे सकते.

(४) पाविंद अपनी बीवीको और बीवी अपने पाविंदको ज़कात नहि दे सकती.

(५) काफ़ीर और मालदार आदमी की ना बाकिग औलाद को भी नहि दे सकते.

(६) ज़कातकी रकम जैसे कामोंमे नहींभर्य कर सकते ज़न्मे कोई मालीक न बन सकता हो. जैसे मथ्यतके कइन दइनमें मथ्यैत के कर्ज़ को अदा करना. या मश्हदकी तअमीरमे या इर्श और लोटे वगेरह लानेमे ज़कातकी रकम भर्य करना ज़ाईज नही.

कीसको मक़ात देना अइज़ब है

अव्वल अपने रिश्तेदारों को जैसे भाई-बडेन- भतीजे- भतीज्या- भान्जे- भान्ज्या- यया- कुई- भाला- मामुं- सास- ससुर- दामाद- वगेरहमें जो हाज़तमंद हो उनको अपने पड़ोसीयोको या अपने शहरे के लोगोमें जो ज़ियादा हाज़तमंद हो उनको देना अइज़ब है. फ़ीर ज़से देने मे दीनका

નફા ઝિયાદા હો. જૈસે તાલીબે ઈલ્મ.

(તાલીમુલ ઈસ્લામ)

ઈર્શાદ :- ઝકાતકો અદા કરનેકે અલાવહ દુસરે સદકાત ઔર ખૈરાત કે કામ ઐસે હૈ કે મુસલમાન સિર્ફ ઝકાત અદા કરકે તમામ ઝિમ્મેદારીયો સે સુબુક દોશ નહિ હોતા. ઝકાતકે અલાવહ ઔરભી દુસરેકામ ઐસે હૈ. જીન્મે માલ ખર્ચ કરના લાઝીમ ઔર ઝરૂરી હૈ. કીસી જગા મસ્જીદ નહી. ઔર મસ્જીદકી તામીર ઔર દીની તાલીમ કે લીયે હુકુમત અગર ઈન્તિઝામ નહિ કરતી તો દીની તાલીમ કા ઈન્તિઝામ મુસલમાનો પર લાઝીમ હૈ બસ ફર્ક ઈત્ના હૈ કે ઝકાત ફર્જે ઐન હૈ ઔર યે કામ ફર્જે કિફાયહ હે.

ફર્જે કિફાયહ કે મઅના યે હૈ કિ કૌમ કે ચંદ લોગોને યા કિસી જમાઅતને ઈન ઝરૂરતો કો પુરા કર દીયા તો દુસરે મુસલમાન સુબકદોશ હો જાતે હૈ. ઔર કીસીને નહિ કીયા તો સબ ગુનેહગાર હોતે હૈ.

(મઆરિફુલ કુર્આન જલ્દ - ૩ પેજ - ૭૯)

હજ કા બયાન

જીસ્કે પાસ ઝરૂરત સે ઝિયાદા ઈત્ના માલ હો કે સવારી પર દરમ્યાની ગુઝરાનસે ખાતા પીતા ચલા જાએ. ઔર હજ કરકે આ જાએ ઊસ્કે જીમ્મે હજફર્જ હો જાતા હૈ. હજકી બહુત ફઝીલત આપી હૈ.

(૧) રસુલે અકરમ (સ.અ.)ને ઈર્શાદ ફરમાયા હજ ઔર ઊમરહ ગુનાહો કો મીટા દેતે હૈ જૈસે ભટ્ટી લોહે કે મૈલ કો દુર કરતી હૈ.

(૨) ઔર જીસ્કે જીમ્મે હજ ફર્જ હો ઔર વો ન કરે ઊસ્કે લીએ સપ્ત ધમકી આપી હૈ.

(૩) રસુલે અકરમ (સ.અ.)ને ઈર્શાદ ફરમાયા જીસ્કે પાસ ખાને-પીને ઔર સવારી કા ઈત્ના સામાન હો કે વો શખ્સ બયતુલ્લાહ શરીફ તક જા સકે ઔર ફીર વહ ન જાએ તો વો ચાહે પહુદી હો કર યા નસરાની હો કર મરે (નઊઝુબિલ્લાહ) ઈત્ની સપ્ત વઈદ લોગો કો મઅલુમ હે ફીરભી બાઝ લોગ ઊસ્મે ગફલત કરતે હૈ.

(૧) બાઝ લોગોકો હજ કરનેકી ગુંજાઈશ હોતી હૈ. લેકીન મકાનકી તઅમીર યા શાદી વગેરહ કેકામોમે ખર્ચ કરનેકો મુકદ્દમ (પહેલા) સમઝકર અપનેકો હજસે મફરૂમ કરતે હૈ. ઊસ્કે લીયે મસઅલા યે હૈ કે અપને પાસ કી જમા રકમ હજકે દીનો (શવ્વાલ)કે આનેસે પહેલે ખર્ચ હો ગઈ તો હજ ફર્જ

नहीं होगा. और रकम मौजूद है और हजका जमाना आ गया तो हज फर्ज होगा फिर वो रकम मकानकी तामीरमें या शादी वगैरहमें खर्च करना ज़ाईज नहीं. अगर मकानकी तामीर की ज़रूरत हो अगर हज छोड़कर मकान बनाया या शादीमें रकम खर्च करदी तो हज उसके जिम्मे बाकी रहेगा और उसके मा -बाप -मना करते हो तबभी हज को जाना फर्ज है. उसमें वादेदैनकी ईताअत ज़ाईज नहीं.

(३) इसी तरह जिस औरत पर हज फर्ज हो और उसके साथ उसका मरहम भी हो मगर उसका शौहर मना करे तो शौहरका कहेना मानना ज़ाईज नहीं.

(४) आज औरतें बगैर महरमके दूसरी औरतों के साथ खली जाती हैं. या दूसरे मर्दाने के साथ खली जाती है ये ज़ाईज नहीं.

(५) आज लोग अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के लीअे वहांसे तबईकात लानेको ऐसा ज़रूरी समझते हैं के जब तक उसको परीदनेका खर्च न हो हजको नहीं जाते या इसी तरह हजसे पहले या वापस आकर पानेकी दअवत को लाज़ीम समझते हैं. बस इन तमाम कामों की वजहसे मुलतवी रचना हराय है.

मदीनह मुजप्परहकी हाजरी

हुज़ुर रसुले पुदा (स.अ.)ने ईर्शाद फरमाया के ज़स्ने मेरी कब्रकी ज़ियारतकी उसके लीअे मेरी शिफ़ाअत ज़रूरी होगी और ये भी फरमाया ज़स्ने हज किया और मेरी ज़ियारत नहीं की उसने मुज़ पर जुल्म किया.

इर्शाद :- ज़न्को गुंजाईश हो वो हज के साथ ज़ियारते मदीनह का शर्फ़ ज़रूर हासिल करे. इसकी बहुत फ़ज़ीलत वारीद हुई है. बल्के ताकीद भी आयी है. इस रिवायतसे ये भी मालुम हुआ के कब्र शरीफ़की ज़ियारत की नियतसे जानेमें भी मुज़ाईफ़ा (वांछा) नहीं है.

बस यहां हजके बयानको पत्तम किया जाता है. ज़स्को हजका तरीका और मसाईल मालुम करना हो वो हजकी किताबों के ज़रीये हासिल करे जैसे के "मुअद्विमुल हुज़ज़ाज़" आसानहज, रफ़ीकेहज, और हजजतुलविदाअ या और कोई मुअतबर किताब भील ज़ाअे उसमें. पढे.

અશરએ જીલ્લજ

જીલ્લજ કે પહેલે અશરેકી ફઝીલત :-

કુઆન શરીફમે ઈશાદિ પુદાવંદી હૈ “વલફઝરી વલયાલીન અશર” “કસમહૈ ફઝર” (કે વક્તકી) ઓર જીલ્લજકી દસ રાતો કી. (દુર્રે મન્સુર)

મુફ્તિસરીનને દસ રાતોંકી તફ્સીરમે જીલ્લજકી દસ રાતોં મુરાદ લી હૈ.

હઝરત અબુ હુરૈરહ (રદી.) બયાન કરતે હૈ કે રસુલે અકરમ (સ.અ.)ને ફરમાયા કે જીલ્લજ કે પહેલે અશરમે હર નેક અમલ અલ્લાહકો ઈન્તીહાઈ મેહબુબ હૈ. ઈન દીનોમે હર દીન કા રોઝા એક સાલકે નફીલ રોઝેકે બરાબર ઓર હર રાતકા કિયામ (રાતકી ઈબાદત) લયલતુલ કદ્ર કે કિયામકે બરાબર હૈ. (તિરમઝીઝી)

મસ્અલા :- હઝરાતે ફુકહાને ઈન દીનો કે રોઝોકો મુસ્તહબ ઓર શબબેદારીકો મન્દુબ ફરમાયા હૈ. (નુરુલ ઈઝાહ)

અરફહકે દીનકી ફઝીલત

જીલ્લજ કી નવમી તારીખકો અરફહ કહેતે હૈ. ઈસ દીનમે રોઝા રખનેકી બહુત ફઝીલત આઈ હૈ.

હુઝુર (સ.અ.)કા ઈશાદિ હૈ કે અરફહ કે દીનકા રોઝા ગુઝિશ્તા એક સાલકે ઓર આઈન્દા એક સાલ કે ગુનાહો કા કફ્ફારહ બન જાતા હૈ. (મુસ્લિમ શરીફ)

નીઝ ઈશાદિ ફરમાયા કે જીને અરફહકા રોઝા રખ્યા ઊસ્કે પે દરપે દો સાલ કે ગુનાહ બખ્શ દીયે જાતે હૈ. (તરગીબ)

નીઝ હુઝુર (સ.અ.) કા ઈશાદિ હૈ કે ઈસ દીનસે ઝયાદા કીસી દીન ભી લોગ જહન્નમસે આઝાદ નહી હોતે. (મિશકાત શરીફ)

તકબીરાતે તશરીફ

(૧) અરફહ કે દીન ફઝર કી નમાઝસે લેકર તેરહવી તારીખકી અસર તક (યાની ર૩ નમાઝો તક)મુકીમ હો યા મુસાફિર મદ્દ હો યા

ઔર શહેર હો યા ગાવ હર ફઝ નમાઝ કી સલામ ફેરકર એક મરતબા અલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહું વલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર વલિલ્લાહીલહમ્દ પઢના વાજબ હૈ. (નુરૂલ ઈઝાહ)

(૨) તન્હા નમાઝ પઢનેવાલા ઔર ઔરત દોનોં પર વાજબ હૈ. અલબત્તા ઔરત તકબીર આહિસ્તા પઢે. ઈસી તરહ છુટી હુઈ રકાતેં પુરી કરને કે બાદ કહે જો ઈમામ કે પીછે નમાઝ પઢતે હૈ.

(૩) અગર ઈમામ તકબીર પઢના ભુલ જાએ તો મુક્તદી ફોરન કહે. ઈમામ કા ઈન્તેઝાર ન કરે.

નોટ :- ઈદકી રાતકી ફઝીલત ઔર નમાઝકી તરકીબ પીછે નમાઝે ઈદકે બયાનમેં ગુજર ચુકી હૈ.

કુર્બાની કી ફઝીલત

હઝરત જેદ બિન અકરમ (રદી.)ને દરયાફત કીયા યા રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) “કુર્બાની ક્યા ચીઝ હૈ ?” આપ (સ.અ.)ને ફરમાયા સુન્નત હૈ તુમ્હારે બાપ હઝરત ઈબ્રાહિમ (અ.સ.)કી સુન્નત હૈ. સહાબા (રદી.)ને પુછા કે ઊસ્મે હમારે લીયે ક્યા અજર હૈ ? ફરમાયા ઊસ્કે હર બાલકે બદલેમે એક નેકી હૈ સહાબા (રદી.)ને પુછા- સુફમેં ? ફરમાયા સુફ કે હર બાલકે બદલેમે એક નેકી હૈ. (ઈબ્ને માઝા)

સુબ્હાનલ્લાહ ! કિત્ના બડા સવાબ હૈ ઈત્ના ઝિયાદા સવાબ સુનકર તો જીસ પર વાજબ નહિ વો ભી કુર્બાની કરનેમે પીછે ન રહેગા

કુર્બાની ન કરનેકી વર્થ :- જીસ આદમી પર કુર્બાની વાજબ હો જાએ ફીરભી વો કુર્બાની ન કરે વો બડા મહરૂમ ઔર બદનસીબ ઈન્સાન હૈ. ઈસ્કે મુતઅલ્લીક હુઝુર (સ.અ.)ને ફરમાયા કે જો આદમી કુર્બાની કરનેકી તાકત રખતા હો ફીરભી કુર્બાની ન કરે વો હમારી ઈદગાહકે પાસ ન આયે.

મતલબ યે હૈ કે વો આદમી બારગાહે રબ્બુલ ઈઝઝતમે હાઝરીકે કાબિલ નહી.

કુર્બાની કીસ પર વાજબ હૈ :- કુર્બાની સાહીબે નિસાબ પર વાજબ હૈ. ઔર જો સાહિબે નિસાબ ન હો ઊસ્કે લીયે મુસ્તહબ હૈ. (ફઝાઈલે હજ)

(૧) સબસે પહેલે “ફરાખ દસ્તી” કા હોના યાની જીસ પર સદકએ ફિત્ર વાજબ હો ઔર સદકએ ફિત્ર ઊસ પર વાજબ હૈ. જીસકે પાસ ૮૭-૧/૨

ग्राम सोना हो, या ६१२ग्राम - ३५० मीलीग्राम यांटी हो या ईत्नी किंमत का सामान जरूरतसे जियादा हो यानी रहनेका घर सवारी और कामके ओजार और पहनने के कपडों के अलावह की चीजें हो तो उस पर कुर्बानी वाजब है.

(२) थोडा सोना थोडी यांटी हो और उसकी किंमत ईस जमानेमें यांटीके निसाब के बराबर पहोंय जाये तो ईस पर कुर्बानी वाजब है.

(३) थोडा सोना थोडी यांटी और थोडा रुपिया हो तो सबको मीलाकर ५२-१/२ तोला यांटी की किंमतको पहोंय जाये तो उस पर भी कुर्बानी करना वाजब होगी.

(४) उस पर कुर्बानी वाजब है वो जींदा जानवरको सदका करते तो वाजब अदा न होगी. कयुंके कुर्बानीमें असल बात "जूबुह" करना है जो यहाँ नही पाया जाता.

कुर्बानी का जानवर :- (१) बडे जानवरमे उसकी उमर दो सालकी हो जैसे गाय-भैंस-वगेरह उसमे सात आदमी शरीक हो सकते है. मगर शर्त है के कीसीका हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो और सबकी नियत कुर्बानी या अकीकह करनेकी हो गोशत पानेकी न हो.

(२) छोटे जानवरमें - बकरा - बकरी - भेडा (घेडा) - दुम्बाकी कुर्बानी दुरुस्त है ईस्के अलावह नहि. छोटे जानवरकी उमर एक सालकी पुरी होनी याहीये. और एक आदमीकी तरफसे कुर्बानी होगी दुसरा शीर्कत नही कर सकता(३) भान्ज (वांज) जानवरकी कुर्बानी दुरुस्त है.

(४) उसके पेदाईशी कान छोटे हो उसकी कुर्बानी जाईज है.

(५) उस बकरीके दात न हो लेकीन यारह भाती हो उसकी कुर्बानी जाईज है.

(६) भस्सीवाले जानवरकी कुर्बानी दुरुस्त है.

(७) अगर जानवर बेयने वाला उसकी उमर पुरी बताता है और जानवरकी डालतसेभी जाहीर होता हो तो उसकी बातका अतेवार कर लेना याहीये.

(८) कुर्बानीके जानवर पर भोज न लादे - सवारी न करे - उसको डिराये पर न दें. उसका दूध ईसतिमाव न करे. बडके उसको सदका कर दे. ईसी तरह उसके बाल और उन कतरना मकड़ह है. अगर कतरलीये तो सदका कर दे. डा-दूध और उन बेयकर ईस्का यारह ईसी जानवर के लीये भसीद लीआं तो जाईज है.

(आलमगरी)

कुर्बानी के औष

- (१) जिस जानवरके पैदाईशी सिंग न हो या बादमें तुट गये हो तो उसकी कुर्बानी जाईज है. अगर बिलकुल जइसे तुट गये हो तो जाईज नहि. (शामी)
- (२) अगर जानवरके थोड़े थोड़े कान कटे हुअे हो या कानमें कोई सुराप हो जो जमा करनेसे तिहाईसे ज्यादा हो जाते हो तो अहत्तियात ये है के ईस्की कुर्बानी न करे. ईसी तरह दुम या कान तिहाईसे ज्यादा कटी हुई हो तो कुर्बानी नाजाईज है. (शामी)
- (३) अगर जानवरके पैदाईशी कान नहो या अेक कान पुरा कटा हुआ हो तो उसकी कुर्बानी दुरइस्त नही.
- (४) जो जानवर ईत्ना लंगडा हो के इकत तीन पावसे यलता हो योथा पाव जमीन पर नही रभ सकता. या रभता है. मगर ईस्के बल पर नही यल सकता. तो उसकी कुर्बानी नाजाईज है. अगर योथा पाव टेक कर यलता है तो जाईज है. (शामी)
- (५) मुस्तलब कुर्बानी ये है के कुर्बानी के जानवरमें जाईज औषो मे से भी कोई औष न हो (शामी)
- (६) जिस जानवरके कान को लंबाईमें बीचमें से चीर दीया गया ते उसकी कुर्बानी दुरइस्त है.

मुंढ के मसाईल

- (१) मुस्तलब ये है के कुर्बानीका जानवर अपने हाथसे मुंढ करे अगर मुंढ मुंढ न कर सके तो दुसरे को हुकम करे और मुंढ मुंढके वक्त हाजिर रहे.
- (२) मुंढ करनेका तरीका ये है के जानवर का मुंढ किंभले की तरफ करके तेज छुरीहाथमें लेकर "बिस्मिल्लाही अल्लाहु अकबर" कहेकर उसके गले को काटे यहा तकके उसकी चार रगे कट जाअे. अेक रग नरभरह जइसे सांस लेता है. दुसरी वो रग जइसे दाना पानी जाता है. और दो रगे जो नरभरह के दाअे बाअे होती है. अगर इन चार मे से तीन रगे कटी

तबभी गूढ दुरस्त है, जिसका जाना उलाल है, अगर छो रगे कटी तो जानवर मुरदार हो गया जिसका जाना दुरस्त नहीं।

(३) गूढ करते वक्त "बिस्मिल्लाह" पढना लुल गया तो जिसका जाना दुरस्त है, अगर जान लुलकर छोड दीया तो डराम है।

(४) कुर्बानीका जानवर डिब्बा रूभ लीटाये तो पहले ये हुआ पढे।

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِذِي فَطَرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
 حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي
 وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَيْءَ لَكَ مِنِّي وَلَا
 أَمْرٌ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۚ اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ

"ईन्नी वजहू उतुं वजहीय विल्लजी-फतरसमावाती-वल्लरदी-हनीकंव-वमा अना मिनल मुशरकिन-ईन्न सलति वनुसुकी वमहयाय व ममाति विल्लाही रब्बील आलमीन. ला शरीकलहुं वबिजालिक जिमीरतुं वअना मीनल-मुखिलमीन-अल्लाहुम्म मिक वलक. ईर-बिस्मिल्लाहे अल्लाहु अकबर"केउकर गूढ करे और गूढ करनेके बाद ये हुआ पढे।

اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتِ مِنْ حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ
 وَخَلِيلِكَ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ ۝

"अल्लाहुम्म तकब्बलहुं मीन्नी कमा तकब्बलत मिन हबीबिक मुहम्मदीन वखली-लेक-ईब्राहिम अलैही सलाम"।

(प) कुर्बानी करते वक्त दीवसे नियत करली के में कुर्बानी करता हूं तो भी कुर्बानी हो गई जमानसे पढना जरूरी नहीं।

(द) अगर कुर्बानी के जानवरमे कीसीका छिस्सा है तो गूढ करने से पहले ईन्की ईजाजत ले ले. बगैर ईन्की ईजाजत के गूढ कर दीया तो कुर्बानी अदा न होगी।

आम तौर पर घर का बड़ा आदमी अपने घरवालोंकी तरफसे भी कुर्बानी करता है अगर जिन्की ईजाजत नहीं लेते. यु समजते हैं के जिन्की पुछनेकी क्या जरूरत है? तो जिस्के बारे में ये समजलो के अगर तुम्हारा ईरादा जिन्की तरफ से नहींल कुर्बानी करनेका है तो जिन्की ईजाजत की जरूरत नहीं और अगर जिन्की कुर्बानी वाज्जब है. तो बगैर ईन्की ईजाजत के कुर्बानी दुरस्त न होगी यानी कुर्बानी करनेवाले की और

દુસરા કોઈ અગર શરીક હૈ. તો ઊન્કી ભી ન હોગી. (આલમગીરી)

(૭) કુર્બાનીકા ગોશ્ત ખુદ ખાએ અપને રિશ્તેદારોં કો ઓર મોહતાજોં કો ભી દે બેહતર યે હૈ કે કમસેકમ તિહાઈ હિસ્સા ખયરાત કરે અગર કીસીને ઈસ્સે કમ કિયા તો ગુનાહ નહિ.

(૮) અગર કિસીકે ઈસાલે સવાબ કે લીએ કુર્બાની કરે તો ઊસ્કે ગોશ્ત કો ખુદ ખાના ઓર તક્સીમ કરના સબ દુરસ્ત હૈ.

(૯) અગર કીસીને કુર્બાની કી મન્નત માની ફીર વો કામ પૂરા હો ગયા તો કુર્બાની કરના વાજીબ હૈ યાહે માલદાર હો યા ગરીબ. મન્નતકી કુર્બાની કા ગોશ્ત સબકા સબ ખયરાત કરદે અગર ખુદ ખાયા યા માલદાર કો દીયા હો તો જીત્ના ખાયા ઓર દિયા હો ઊત્ના ફીર ખયરાત કરના પડેગા.

(૧૦) કુર્બાની કી રસ્સી વગરહ ખયરાત કરદે.

(૧૧) કુર્બાની કી મજદુરી મેં કસાઈકો ગોશ્ત ચમડા વગેરહ ન દે બલ્કે અપની તરફ સે અલગ દે.

(૧૨) કુર્બાની કા ગોશ્ત કાફીર કો ભી દે સકતે હૈ.

કુર્બાની કી ખાલ

(૧) કુર્બાની કી ખાલ કો અપને ઈસ્તિમાલ મેં લાના જૈસે મુસલ્લા બનાના યા ઓર કોઈ ચીજ બનાઈ તો જાઈજ હૈ.

(૨) અગર કુર્બાની કી ખાલ કો બેચ દીયા જાયે તો ઊસ્કી કિમત કા સદકા કરના વાજીબ હૈ.

(૩) કુર્બાની કા ગોશ્ત મજદુરી મેં દેના જાઈજ નહી.

(૪) ઈસી તરહ ઈમામ ઓર મુઅઝ્ઝીન કો ઊન્કી ખિદમત કે હકમેં દેના યા મસ્જીદ કે મરામત કે લીયે યા મદ્રસે મેં તનખ્વાહ કે લીએ ચમડા બેચકર ઊસ્કી રકમ દેના દુરસ્ત નહી ખયરાત કરના જરૂરી હૈ.

અકીકહ કા બયાન

(૧) જબ લડકા લડકી પૈદા હો તો સાતવે દીન ઊસ્કાં નામ રખકર અકીકહ કરે. ઈસસે બચ્ચેં કી અલા-બલા દુર હો જાતી હૈ. ઓર આફતોં

से डिफ़ाउट रहेती है.

(२) उजरत एबने अब्बास (२.दी) से रिवायत है के रसुल अकरम (स.अ.)ने उजरत एमाम हसन (२.दी) और उजरत एमाम हुसैन (२.दी.) का दो-दो मेंदो से अकीकल करमाया (अबुदाउद)

(३) अगर लडका हो तो दो बकरे या घेरे और बडकी हो तो अेक बकरी या अेक घेरा जूबल करे. अगर कीसीने मजबुरी मे लडके के अकीकलमें अेक बकरा जूबल किया तो भी जाईज है.

(४) बच्चों के बाल मुडाकर उस्के वजनके बराबर अपनी हैसियत के मुताबिक सोना या चांदी गरीब-इकीर-मोहताजकी सडका कर दे.

(५) अकीकल के जानवर का गोशत मा बाप, दादा-दादी नाना-नानी वगेरह सब भा सकते है. अलबत्ता उस्मे से अेक रान (जांग) दया (दायश) को दे. बाकी गोशत रिशतेदारों दोस्तो पडोशीयों और इकिरों को तकसीम कर दे. या पकाकर उन्की महेमानी करे.

(६) अकीकल का जानवर कुर्बानी के जानवर की तरह तंदुरस्त और ताजा होना चाहीये जिस जानवर की कुर्बानी दुरस्त नहीं उस्का अकीकल भी जाईज नहि.

(७) सातवे दीन अकीकल करना अइजल है. अगर न कर सके तो जब आंसानी हो करे. लेकीन भ्याल रहे के जिस दीन बय्या पैदा हुआ है. उस्के अेक दीन पहले करे. यानी अगर जुम्आको पैदा हुआ है तो जुमेरातको अकीकल करे हिसाबसे सातवा दीन पडेगा. ये बेहतर है.

मौत का अर्थ

अल्लाह तआला का ईशाद कुर्आन शरीफ मे है "इला तमुतुन
 एल्ला वअन्तुम मुस्लिमुन"

तरजुमा :- तुम ईस्लाम के सिवा और कीसी हालत पर जान मत देना
 (पारा-४ इकुअ-२)

सय्या ईस्लाम ये है कि ईन्सान अपनी ज्वालीशको छोडकर इस
 बातकी ईक में लगा रहे के अल्लाह तआलाकी रजामंदी कीस काम में है.
 पुदा का इरमान मेरे लीअे क्या है? ईस्को मालुम करके अेक गुलाम की
 तरह इरमाबरदारी करे. जिस्से पुदा उस्से राजी हो और ये अल्लाह

તઆલા કા મકબુલ બંદા બને ઈસીકા નામ ઈબાદત ઔર બંદગી હૈ.

ઈસ આયતમે હઝરત ઈબ્રાહીમ (અ.લ.) ને અપની ઔલાદકો વસીયત ફરમાઈ ઔર ઈન્સે અહદ લીયા કે ઈસ્લામ કે સિવા કિસી ઔર હાલત મેં ઔર કીસી દૂસરે મઝહબ પર ન મરના. ઈસ્સે મુરાદ યે હૈ કે અપની જીંદગી મેં ઈસ્લામ ઔર ઈસ્લામી તઅલીમાત પર મઝબુતીસે અમલ કરતે રહો. તાકે અલ્લાહ તઆલા તુમ્હારા ખાતેમા (યાની મૌત)બી ઈમાન પર ફરમાવે.

બાઝ રિવાયત મેં આયાં હૈ કે તુમ ઝિંદગી મેં જીસ હાલત કે પાબંદ રહોગે ઈસી હાલતમે મયદાને મહશરમે ખરે કીયે જાઓગે.

અલ્લાહ તઆલાકી આદત યહી હૈ કે જો બંદા નેકીકા ઈરાદા કરતા હૈ ઔર ઊસ્કે લીએ કોશીષ કરતા હૈ તો અલ્લાહ તઆલા ઊસ્કો નેકીકી તૌફીક દેતે હૈ ઔર યે કામ ઊસ્કે લીયે આસાન કર દેતે હૈ.

ખુલાસા યે કે જો આદમી નેક કામમેં મશગુલ રહે ઊસ્કો અલ્લાહ તઆલા કે વાઅદેકી બિના પર યહી ઊમ્મીદ રખનાચાહીયે કે ઊસ્કા ખાત્મા બી નેકી પર હોગા. (મઅરિફુલ કુર્આન જલ્દ-૧ પેજ ૨૮૮)

મસ્અલા :- (૧) જબ આદમી મરને લગે તો ઊસ્કો ચીત લિટા દો ઔર ઊસ્કે પાંવ કિબ્લે કી તરફ કર દો ઔર સર ઉચા કરદો તાકે મુંહ કિબ્લેકી તરફ હો જાયે. ઔર ઊસ્કે પાસ બેઠકર આવાઝ સે કલેમા પઢો જીસ્સે યે બી સુનકર પઢને લગે. ઊસ્કો કલેમા પઢનેકા હુકમ ન કરો. કયુંકે યે વક્ત બડા મુશ્કિલ હૈ. કયા માલુમ મુહસે કયા નિકલ જાયે.

(૨) જબ વો એક મરતબા કલેમા પઢલે તો તુમ યુપ રહો. યે કોશીષ ન કરો કે બરાબરકલેમા જારી રહે. ઔર પઢતે પઢતે દમ નિકલ જાએ. બસ મંતલબ સિફ ઈત્ના હૈ કે આખરી ખાત જો ઈસ્કે મુંહસે નિકલે વો કલેમા હોના ચાહિયે.

મૌતકી અલામત

જબ સાંસ ઊપડ જાએ ઔર જલ્દી જલ્દી ચલને લગે ઔર ટાંગેં ઢીલી હો જાયે ખડી નહો સકે ઔર નાક ટેડી હો જાયે ઔર કનપટી બેઠ જાએ તો સમજો ઊસ્કી મૌત આ ગઈ ઊસ વક્ત કલેમા આવાઝસે પઢના શુરૂ કરો.

सुरअे यासीन शरीफ़ पढनेसे मौत की सप्तती कम होती है. ईस्के सरहाने या किसी और जगा बेठकर पढो या कीसी और आदमीसे पढाओ.

(उ) जिस वक्त कोई बात ऐसी न करो के ईस्का दील दुनियाकी तरफ़ माँवल हो. कयुंके ये वक्त दुनियासे जुदाई और अल्लाह तआला की बारगाह में हाजरी का वक्त है.

ऐसे वक्तमें बाल बच्चोंको सामने लाना या वो यीज जससे उिस्को मुहल्लत थी उिस्को सामने लाना या उिस्की बातें करना. जससे मरनेवाले का दील उिस्मे समा जाये ये बहुत बुरी बात है. दुनियाकी मुहल्लत लेकर मरना बुरी मौत की अलामत है. अल्लाह तआला हम सबकी हीफ़ाजत फ़रमावे. (आमीन)

जुब रुह निकल जाये :- तो सब अजज़ा सीधे करदो. मुंह पुल गया हो तो उिस्को कपडे से बांधकर बंद करदो. आंभे बंध कर दो. दोनो पावको मीलाकर कपडे से बांध दो ताके इलने न पावे. डीर कोई यादर उिदादो. मुंह वगेरह बंध करते वक्त ये पढो "बिस्मिल्लाही वअला मिल्लती रसुविल्लाह" उिस्के बाद लोबान या अगरबत्ती वगेरह जलाओ. और जुब तक मय्यत को गुस्ल न दीया जाये उिस्के पास कुर्आन शरीफ़ पढना हुअस्त नलि.

मैथ्यत का गुस्ल

पहेले कीसी पाक तप्ते को लोबान या अगरबत्तीकी धुनी तीन या पाय या सात मरतबा देकर मुरदे को ईस पर लीटा दो और कपडे उतार लो और अेक कपडा नाफ़ से लेकर ज़ानों (जंग) तक डाल दो के ईल्ना बदन छुपा रहे. बेरी के पत्ते डालकर पानी गरम करो तप्ते के नीचे गढा ढोदो ताके गुस्ल का पानी उिस्मेजमा हो इँले नलि. और गुसल देने की जगा अलग हो और पानी बेह ज़ता हो तो गढा ढोदनेकी ज़रूरत नलि.

गुस्ल देने वाले अपने हाथों में कपडेकी धेलीया पहेनले तांके मय्यतके बरहेना (नंगे) बदन पर हाथ न लगे पहेले मुरदे को ईस्तज़ा करा दो यानी जो कपडा नाफ़से लेकर ज़ानों तक पडा है उिस्के अंदर अंदर धुवादो

ईस पर निगाह मत डालो ईर ईस्को वुसु करा दो लेकीन कुल्ली न कराओ और नाक में पानी न डालो- गटटे तक हाथ धुलाओ पडेले मुंह धुलाओ. ईर हाथ को कोहनिचों के समीत धुलाओ. ईर सरका मसल करावो ईर दौनो पेर धुलाओ ईर तीन भरतभा इधं लीगाकर दातों और मसोढो पर डेर जाओ और नाक के अंदर डेर जाओ तो ली जाईज डे. अगर मुरदा नहानेकी डालतमे (यानी नापाकी की डालतमे) भर जाओ तो ईस तरड मुंह और नाकमें पानी पडोयाना जरूरी डे. और नाक और मुंहमें इधं डेरदो कानमें ली भर दो ताके वुसु कराते और गुसल देते वक्त पानी न जाने पाओ.

जब वुसु करां युकी तो ईर मुरदेको बाई करवट लिटाकर गरम पानी सरसे लेकर पांव तक डालो यहां तकके दाहनी करवट तक पडोय जाओ. ईर दाहनी करवट पर लिटाकर ईसी तरड सरसे पाव तक तीन भरतभा पानी डालो बाई करवट तक पडोय जाओ ईस्के बाह मुरदे को अपने बदनसे टेक लगाकर बीकाओ और पेटको आडिस्ता आडिस्ता मले और दबाओ. अगर पाभाना निकले तो उसको पुछकर धो डालो ईस्के निकलने से गुसल में कुछ नुकसान नहि हुआ. गुसल दोबारा करानेकी जरूरत नही. ईस्के बाह ईर ईस्को बाई करवट पर लीटा दो और काहुरवाला पानी सरसे पाव तक तीन भरतभा डालो. ईर पुरा बदन कपडे से पुंछ कर कफना दो.

जब मुरदे को कफन पर रफ्फो तो सर पर ईत्र लगाओ मर्दको दाढी पर ली लगाओ माथे और नाक, डधेली ओर घुंटनों और दोनो पाव परकाहुर लगाओ बाज लोग कफनमें ईत्र लगाते डे. कानों मे ईत्रकी कुरेरी रभते डे ये सब जडालत की आते डे. बालों में कन्धी न करो. नापुन न काटो कहीसे बाल न काटो सब ईसी तरड रहने दो

मस्जला :- (१) अगर कोई मर्द भर गया और मर्दों में कोई गुसल देनेवाला न होतो तो ईस्की बीवी के अलावा दूसरी औरत को मैथल का गुसल देना जाईज नही अगर ये मेहरम ही क्युं न हो.

अगर बीवी न हो तो उसको तयम्मुम करा दो लेकीन ईस्के बदन को हाथ न लगाओ बडेके अपने हाथ में दस्ताने पडेनालो तब तयम्मुम कराओ.

मस्जला :- (२) अगर कीसीका भाविंद भर गया तो ईस्की बीवी उसको नडेलाये और कफन दे तो जाईज डे.

अगर बीवी मर जाये तो पार्विंद को बीवीका बदन धुना और हाथ लगाना दुरस्त नही. अलबत्त देभना दुरस्त है. और कपडे के उपर से हाथ लगाना भी दुरस्त है.

मस्थला :- (३) जो औरत हैज या निःशस से हो वो मुई को गुसल न दे. ये मकड़ह और मना है.

मस्थला :- (४) बेहतर ये है के जस्का रीश्तेदार जियादा करीब हो वो गुसल दे. अगर वो गुसल न दे सके तो कोई दीनदार से गुसल दीलाओ.

मस्थला :- (५) अगर गुसल देते वक्त कोई औंभ देमे तो कीसीसे न कहे. जैसे के उसका बेहारा बीगड गया. या काला हो गया तो ये भी न कहे. ये सब नाजाईज है.

हा भुल्लम भुल्ला कोई बडा गुनाह करता हो जैसे नायना-गाना बजाना या रंडी थी तो ऐसी बातें केलना दुरस्त है जससे दूसरे लोग. ऐसी बातों से बचें और तौबा करे. (बेहशती जेवर)

कङ्कन की भयान

(१) मईको तीन कपडो मे कङ्कन दीया जाता है. अक यादर दुसरा ईजार तीसरा कुर्ता. ईजार सरसे पाव तक होनी याहिये यादर ईससे अक हाथ बरी होनी याहिये और कुर्ता गले से पाव तक होना याहिये लेकीन जिस्मे न कली हो न आस्तीन.

(२) औरतको पांय कपडों मे कङ्कन दीया जाता है. अक कुर्ता, दुसरा ईजार, तीसरा सरबंद योथा यादर पांयवा सिनाबंध अगर कोई तीन कपडो मे कङ्कन दे अक ईजार दूसरा कुर्ता और तीसरा सरबंद तो भी दुरस्त है. और तीन कपडो से कममें कङ्कन देना मकड़ह और भुरा है. अगर मजबुरी होतो दुरस्त है. सिनाबंध छातीयों से लेकर रानोंतक होना जयादा अख्श है. सरबंद हो हाथ लंबा हो हाथ योडा होना याहिये.

पहेले कङ्कनको तीन या पांय भरतबा लोभान की धुनी हो. डीर पाक जगह पर बिछाओ डीर ईजार डीर ईस पर कमीज या कुर्ता डीर मुई को ईस पर लीटा कर पहेले कङ्कन के याक मे सरडालकर कङ्कन पहेनाहो और आधी कङ्कनी यानी कुर्ता मरुदे पर डेलाहो डीर ईजार को बाई तरफसे ईस पर लपेटे ईसी तरह. यादर भी लपेटे डीर कङ्कन को

દોનોં તરફસે યાની સર ઓર પાવ કી તરફ સે બાધ દો.

ઓરત કો કફન પહેનાનેકા તરીકા યે હૈ કે પહેલે ચાદર બિછાઓ ફીર ઈઝાર ફીર કુર્તા ફીર મુરદે કો ઊસપર લિટાકર પહેલે કુર્તા પહેનાઓ સરકે બાલોંકો દો હિસ્સા કરકે કુર્તે પર (સિનાકે ઉપર) ડાલ દો એક હિસ્સા દાહની તરફ દુસરા હિસ્સા બાઈ તરફ ઊસ્કે બાદ સર પર સરબંદ ડાલો ઊસ્કો ન બાંધો ન લપેટો. ફીર ઈઝાર લપેટ દો પહેલે દાઈ તરફ ફીર બાઈ તરફ લપેટ દો. ઈસ્કે બાદ સિનાબંદ બાંધ દો. ફીર ચાદર લપેટો પહેલે બાઈ તરફ ફીર દાહની તરફ ફીર પટ્ટીસે પેર ઓર સરકી તરફસે કફન બાંધ દો કે ખુલ ન જાએ.

બચ્ચે કે અહકામ

જો બચ્ચા ઝીંદા પૈદા હો ફીર મર ગયા તો ઊસ્કો ભી ઈસી કાઈદેસે ગુસલ દીયા જાયે ઓર કફન પહેનાયા જાય. ઓર જનાઝાકી નમાઝ પઢી જાયે ઓર નામ રખકર દફન કર દીયા જાયે.

છોટે બચ્ચે કે લીએ એક કપડાં ઓર લડકી કે લીએ દો કપડે કા કફન ભી જાઈઝ હૈ. (એક ઈઝાર એક ચાદર) લેકીન બડોકી તરહ કફન દેના બહેતર હૈ.

અગર મરા હુઆ બચ્ચા પૈદા હો ઊસ્કો ગુસલ ઈસ તરહ દો. લેકીન સિફ એક બડે કપડેમે લપેટ કર કફન દો ઊસ્કા નામ રખકર બગૈર નમાઝે જનાઝા દફન કરદો.

નમાઝે જનાઝહ

મૈયતકી નમાઝ પઢના ફર્જે કિફાયા હૈ. અગર એક દો આદમી ભી પઢલે તો સબકે ઝિમ્મેસે ફર્જ સાકિત (ઊતર જાતા હૈ) હો ગયા. ઓર કીસીને નહી પઢી તો સબ ગુનેહગાર હૈ.

નમાઝે જનાઝામેં દો ચીઝેં ફર્જ હૈ. :-

(૧) કિયામ (૨) ચાર તકબીરેં. યાની “અલ્લાહુ અકબર” કહેના

નમાઝે જનાઝામે ત્રીન ચીઝે મસનુન હે. :-

(૧) સના પઢના (૨) દુરુદ શરીફ પઢના (૩) મય્યતકે લીએ દુઆ પઢના નમાઝે. જનાઝાકે લીએ જમાઅત શર્ત નહી અગર એક શખ્સ ભી પઢલે તો ફર્જ અદા હો જાયેગા. ચાહે ઔરત હો ચાહે મર્દ હો. બાલિગ હો. યા ના બાલિગ. અલબત્તા જનાઝેકી નમાઝમે જીતની બડી જમાઅત હોગી મય્યતકો ફાઈદા હોગા. ઈસલીયે કે યે મય્યતકે લીએ દુઆ હૈ. ઔર ચંદ મુસલમાનોંકા જમા હોકર બારગાહે ઈલાહીમે કીસી ચીઝ કે લીએ દુઆ કરના એક અજબ ખાસિયત રખતા હૈ. બરકતે નાઝીલ હોતી હૈ ઔર બારગાહે ઈલાહીમે કુબુલિયત હાસિલ હોતી હૈ.

મુસ્તહબ યે હૈ કે ત્રીન સફેં કી જાયે. ઔર જયાદા આદમી હો તો જયાદા સફેં કરે. અગર સાત આદમી હૈ. તો એક આદમીકો ઈમામ બનાયા જાયે. પહેલી સફમે ત્રીન દુસરીમે દો ઔર ત્રીસરીમે એક આદમી પડા હો અગર એક વક્તમે એકસે જયાદા જનાઝેજમા હો જાયે તો હર જનાઝેકી અલગ નમાઝ પઢના બેહતર હૈ. અગર સબ જનાઝેકી એકહી નમાઝ પઢી જાયે તો ભી જાઈઝ હૈ. ઊસ વક્ત સબ જનાઝેકી સફ કરદી જાયે જીસ્કી બહેતર સુરત યે હૈ કે એક જનાઝે કે આગે દુસરા જનાઝા રખ દીયા જાયે સબકે પૈર ઔર સર એક તરફ હો ઊસ્મે સબકા સિના ઈમામકે સામને હોગા જો મસનુન હૈ.

નમાઝે જનાઝા કા તરીકા

મય્યતકો આગે રખકર ઈમામ ઈસ્કે સીનેકે બરાબર ખડે હો જાયે. ઔર સબ લોગ યે નિય્યત કરે. “નવયતું અન ઊસલ્લી સલાતલજનાઝતિ લીલ્લાહી તઆલા વઅદઊ લીહાઝલ મય્યીતી ઈકતદૈતું બીલિહાઝલ ઈમામ” યાની મેં નિય્યત કરતા હું નમાઝે જનાઝાકી અલ્લાહકે લીએ પીછે ઈસ ઈમામ કે

યે નિય્યત કરકે દોનોં હાથ કાનોં તક ઊઠા કર “અલ્લાહુ અકબર” કહેકર દોનોં હાથ બાંધ લેં ફીર સના યાની “સુબહાનકલ્લાહુમ્મ વબિહમ્દીક વતબારકસ-મુક વતઆલા જદદોકહ વજલ્લ સનાઊિક વલાઈલાહ ગયરૂકહ” પઢે. ઊસ્કે બાદ ફીર એક બાર અલ્લાહુ અકબર કહે હાથ ન ઊઠાએ બલ્કે દુરુદ ઈબ્રાહિમ પઢે ફીર ત્રીસરી મરતબા અલ્લાહું અકબર કહે. હાથ ન ઊઠાએ ઔર મય્યતકે લીએ દુઆ કરે.

अगर जनाजा बालिग मर्द का है तो ये पढ़े.

اللَّهُمَّ اغْفِرْ
لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا
وَذَكَرِنَا وَأَنْشَأْنَا اللَّهُمَّ مِنْ أَحْيَيْتَنَا مِنْهَا فَاحْيِهِ
عَلَى الْأَسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنْهَا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ

अल्लाहुम्मगईर लिहय्येना वमैय्यीतीना वशाहीदीना वगाईबिना वसगीरीना
वकबिरीना वजकरीना वगिन्साना अल्लाहुम्म मन अहय्यतहु
मिन्नाइअहयिही अललईस्लाम वमन तवईयतहुं मिन्ना इत वंइइहुं अलल
ईमान

जब ये दुआ पुरी हो जाये तो योथी मरतबा अल्लाहुं अकबर कहे.
लेकीन हाथ न ठिकाअे बडे सलाम केरदे जस तरह नमाजमें सलाम केरते है.
अगर जनाजा ना बालिग लडके का हो तो ये दुआ पढे .

اللَّهُمَّ اجْعَلْ لَنَا
أَجْرًا وَذُخْرًا وَاجْعَلْ لَنَا شَافِعًا وَمُسْتَفْعًا

अल्लाहुम्मज-अल्लु-लना इरतंव वजअल्लुलना अजरव-वजुभरव वजअललहुं
लना शाईअंव वमुशइइआ.

अगर जनाजा ना बालिग लडकी का हो तो ये दुआ पढ़े.

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا
لَنَا فَرْطًا وَاجْعَلْهَا لَنَا أَجْرًا وَذُخْرًا وَاجْعَلْهَا
لَنَا شَافِعَةً وَمُسْتَفْعَةً

अल्लाहुम्मज-अल्लालना इरतंव वजअललहा लना- अजरव वजुभरव
वजअल्लालना शाईअतव व मुशइइअह

नमाजे जनाजामें कुरानशरीफकी तिलावत अतहिय्यात वगेरह नही है.

अगर कीसीको नमाजे जनाजामें पढी जाने वाली दुआ याद न हो
तो ठिस्के बहले मे

અલ્લાહુમ્મગ-ફીરલીલ મુઅમેનીન વલમુઅમીનાત કેહ લેના કાફી છે. ઓર અગર યે ભીન હો સકે તો સિફ ચાર મરતબા અલ્લાહું અકબર પર કિફાયત કરે તબબી નમાઝ હો જાયેગી. નમાઝે જનાઝામે દુઆએ જનાઝા પઢના ફર્જ નહીં હૈ.

અફસોસ ! બાઝ લોગ ઈસ મસઅલેકો ન જાનેકી વજહસે મય્યતકા હક મારતે હૈ ઓર નમાઝે જનાઝાસે મેહરૂમ રેહતે હૈ. બાઝ દેહાતોમે બગૈર નમાઝે જનાઝા પઢે મય્યતકો દફન કર દેતે હૈ ઓર તમામ ગાંવ વાલે મુસલમાન ગુનેહગાર હોતે હૈ.

દફન કરનેકા તરીકા

જબ નમાઝે જનાઝાસે ફારીગ હો જાએ તો જનાઝા કબ્ર કે પાસ લે જાએ જનાઝા ઊઠાનેકા મુસ્તબ તરીકા યે હે કે પહેલે ઈસ્કા અગલા દાહના પાયા અપને કાંધે પર રખકર કમ અઝ કમ દસ કદમ ચલે ફીર પીછલા દાહના પાયા કાંધે પર રખકર દસ કદમ ચલે ફીર અગલા બાયા પાયા ફીર પીછલા બાયા પાયા ઊઠાકર દસ કદમ ચલેયે ચારો મિલાકર કુલ ચાલીસ કદમ ચલે.

હદીસ શરીફમે હૈ કે જો શપ્સ જનાઝા ઊઠાકર ચાલીસ કદમ ચલે ઊસ્કે ચાલીસ ગુનાહે કબીરા મુઆફ હો જાતે હૈ.

જનાઝે કો તેઝ કદમ લે જાના મસનુન હૈ. મગર ન ઈસ કદર કે મૈય્યતકો હરકત ઓર ઈજતિરાબ હોને લગે જો લોગ જનાઝા કે સાથ હો તો ઊન્કો જનાઝે કે પીછે ચલના મુસ્તહબ હૈ.

મૈય્યત કી કબર કમસેકમ આધે કદકે બરાબર ગહરી ખોદી જાયે. ઓર મૈય્યતકે કદકે મુવાફીક લંબી હો. બગલી કબ્ર બનાને મે ઝિયાદા સવાબ હૈ. બગલીકા ઈત્ના ગહેરા ખોદના ઝરૂરી નહી. કે મુદા બેઠ સકે કયુંકે મુન્કીર નકીર કે સવાબ જવાબ કે લીએ મુદે કા બેઠના દુનિયાકે બેઠને કી તરહ નહી હૈ. ઈસલીયે જો લોગ બગલી ઝિયાદા ગેહરી ખોદતે હૈ ઓર ઊપર કા હિસ્સા કમ ગેહરા રખતે હૈ યે ઊલ્ટી બાત હૈ.

મૈય્યતકો કબ્રમે રખતે વક્ત બિસ્મિલ્લાહી વઅલામિલ્લતી રસુલીલ્લાહ કહેના મુસ્તહબ હૈ.

મૈય્યતકો કબ્રમે રખકર દાહને પહેલું પર કિબ્લા રૂખ કરના મસ્નુન હૈ.

कब्रमें मिट्टी डालते वक्त मुस्तलब ये है के सरहाने की तरफ से शुरु किया जाये अपने दोनों हाथों में मिट्टी लेकर डाले और पहली मरतबामें **बिन्हा भलकनाकुम**. और दूसरी मरतबामे **वहीडा नुईदुकुम** और तीसरी मरतबामे **वमीन्हा नुभरीशुकुम** तारतन **गिभ्रा** पढना याहीये.

दफन करने के बाद थोडीदर कब्र पर ठेहरना और हुआये मगहीरत करना और कुआन शरीफ पढकर **गिस्का** सवाल पहोयाना मुस्तलब है.

दफन करने के बाद सर की जानीब पडे होकर सुरअे बकरह का शुरु अलीइलाम भीमसे मुकलिहुन तक हीर पावकी तरफ सुरअे बकरह की आपरी आयत आमनरसुहु से अत्म तक पढे.

दफन करने के बाद कब्र पर अजान कहेना दुरस्त नहि. जैसेके बाज जगा रिवाज है. सप्त बिदअत है. शरीअत में गिस्की असल नही है.

ईसाले सवाल

दजरत सुइयान सौरी (र.दी) कहा करते थे के जोस तरह जीदि ईन्सान पाने पीनेके मोहताज होते है गिन्से जियादा मुई हुआके मोहताज होते है. गर्ज के ईस पर गिम्मत का ईजमअ (ईत्तेफाक) है के मैय्यत को हुआ नफा देती है.

दजरत सईद बिन उबादह (र.दी)से रिवायत है के या रसुलुल्लाह (स.अ.) मेरी मा मर गई ईस्के लीअे कोनसा "सदका" बेहतर है. आप (स.अ.)ने इरमाया "पानी" बस गिन्डोने अेक कुंवा फोदवाया और इरमाया के ये मेरी मा के लीअे सदका है.

दजरत अब्दुल्लाह बिन गिभर (र.दी) कहते है के रसुलुल्लाह (स.अ.)ने इरमाया के आदमी को नफली भयरात करते वक्त अपने मा बापको (निय्यत करके सवालमे) शामिल करना याहीअे.

दजरत अली (र.दी) से रिवायत है इरमाते है के जो शप्स कब्रस्तान में पडोयकर कुलहुवल्लाहु अहद ग्यारह मरतबा पढे और गिस्का सवाल मुईको बपशे तो गिस्को मुई की तअदाद के बराबर अजर दिया जायेगा.

दजरत अबु हुदैरह (र.दी.) इरमाते है के रसुले पुदा (स.अ.)ने इरमाया जो शप्स कब्रस्तान में जाकर इतिहा यानी अललह्दु शरीफ और कुलहुवल्लाहु अहद और अल्हाकुमुत्तकासुर पडे. और कहे या अल्लाह मैंने

जो तेरा क्लाम पढा है उसका सवाब कब्रस्तान के मुअमिनीन और मुअमिनात को पढोयादे तो वो कियामत के रोज उसकी शिफारीश करेगे.

हजरत अनस (र.दी) से रिवायत है के रसुले अकरम (स.अ.)ने ईशाद इरमाया जो शप्स कब्रस्तानमें जाकर सुरअे यासीन शरीफ पढता है तो अल्लाह तआला मुर्दों से अजाब को हल्का कर देते है. और मुर्दों की ताअदाद के मुताबिक पढने वाले के वीअे नेकिया वीभी जाती है.

तअजीयत करना

मैय्यतके घरवालों को तसल्वी देना और सब्रके इजाईल और सवाब सुनाकर उनको सब्रकी रगबत दिवाना और उनके और मैय्यतके वीये दुआ करना जाईज है. ईसीका नाम तअजीयत है. तीन दीनके बाद तअजीयत करना मकड़ह है. अगर कोई सइरमें गयाहो और वो सइरसे तीन दीनके बाद आयेतो ईस सुरतमें तीन दीनके बाद तअजीयत करना मकड़ह नही. जो शप्स अेक बार तअजियत कर युका हो दोबारा करना मकड़ह है.

आजकल "जियारत" के नामसे लोग मर्हुमके मकान पर सुबह ८ से ११ बजेतक या दोपहरमें दो बजे से ४ बजे तक जमा होते है जस्में कसरत से औरते जमा होती है. और बाज लोग मजबुरन ईसलीये आते है के नहि जायेगें तो शिकायत होगी वो न तो नमाजकी परवा करते है न मर्हुम के वारिसों से ईस्वामी तअजीयत करते है. और औरतोंका जमा होना तो अेक मुस्तकील "फीत्ना" है.

ये काम जहालतका है और बे असल है ईससे मर्हुमको और वारीसोंको हकीकी नफा होने के बजाअे तकलीफ होती है उसको बंद करना याहीअे.

कबर की जियारत करना

कबरोंकी जियारत करना यानी उनको जाकर देबना मर्दों के वीये मुस्तहब है. बेहतर ये है के हरहफते में कमसे कम अेक मरतबा कब्रस्तान जाये जुम्मा का दीन हो तो बेहतर है कब्रस्तानमें दाबिल होत्रे ये कहे.

“अस्सलामु अलैयकुम या अल्लिल कुबुर अन्तुम लना सलहुन वनहुनु लकुम तबजिन यग़ीरइल्लाहुं लना वलकुम.”

ईर इसके बाद कब्रस्तान के मुर्दों को कुआँन मज्हद पढकर हुआये मग़ीरत करके सवाब पछोयादे और अपनेलीये ईब्रत हासिल करे.

क़फ़न का लंकाशा

नाम	लंबाईका माप	पना	लंबाईका अंदाज़	केंद्रियत
ईज़ार	सर से पाव तक	१ से १।। मीटर	२ से २। मीटर	पना कम हो तो जोड लगाकर १।। मीटर पना बनालो.
कुर्ता	काधे से पीन्डली तक	१ मीटर	२ से २। मीटर	अेक मीटर पनाहो तो दोनों सीरे बराबर करके गलेका याक लगाये.
शाहर	मैय्यत के कदसे १।। फीट लंबाई	१।। मीटर	२। मीटर	पना कम हो तो जोड लगा कर १।। मीटर पना करलो
सिनाबंद	बगलसे गुटने तक	१। मीटर	१।।। मीटर	ये कपडा औरत के लीये है.
सर बंद	★	१ मीटर	१ मीटर	”

नोट :- ये माप बडी मय्यत के लीये है बय्यों का क़फ़न उसके मुनासिब लो जैसे के क़फ़न में लीया गया है.

पाकी और सफ़ाई

हर ईन्सान को अपने जाहीर और बातिन की सफ़ाई और पाकीज़गीका पुरा प्याल रचना चाहीये.

हुज़ुर (स.अ.)ने इरमाया दीनकी बुन्याद पाकी पर हे. और मुहा तआला मुह पाक है और पाकी को पसंद करता है.

ઝાહીરી પાકી યે હૈ કે આદમી અપને બદન ઓર કપડો કો હર કીસ્મકી નજાસતોસે પાક રખે છોટી બડી નાપાકી દુર કરે. જનાબતકા ગુસ્લ કરે ઓર વુઝુકી ઝરરત હો તો વુઝુ કરે. નાખુન કાટે નાફ કે નીચે કે બાલ ઓર બગલ કે બાલો કો દુર કરે મુંછકે બાલ કતરાએ.

નાખુન કાટનેકા મુસ્તહબ તરીકા

યે હૈ કે દાહને હાથકી શહાદત કી ઊગલીસે શુરૂ કરે ઓર ઇંગલી તક પહોંચે ઊસ્કે બાદ બાયે હાથકી ઇંગલી સે શુરૂ કરે ઓર અંગુઠે તક પહોંચાયે ઊસ્કે બાદ દાયે હાથકે અંગુઠે કો લે ઓર પેરો મેં દાહને પેરકી ઇંગલીસે શુરૂ કરે ઓર બાયે પેરકી ઇંગલીપર ખત્મ કરે. નાખુન કાટને ઓર બાલ સાફ કરને મેં ચાલીસ રોઝ સે ઝિયાદા તાખીર કરના જાઈઝ નહી.

ઈસી તરહ બદન કે જન હિસ્સો મે મેલ જમ જાતા હૈ. ઊસે દૂર આખોંકા મેલ કુચેલ દુર કરે નાક ઓર નથને સાફ રખે. દાતોંકા ખિલાલ કરકે ઊસ્મેસે ખાનેકે રેઝે નિકાલ દે.

મુંહ ઓર દાત સાફ કરને કે લીએ મિસ્વાક કરે. મિસ્વાક પિલું કે દરખતકી બેહતર હૈ. નમાઝ ઓર તિલાવત સે પહેલે મિસ્વાક કી બડી તાકીદઆઈ હૈ. કપડે ભી સાફ સુથરે ઈસ્તિમાલ કરે. અલબત્તા ફુઝુલ ખર્ચી કરનેવાલે માલદારોં કી નકલ ન કરે.

પાકીઝગી હાસિલ કરને મેં દાઢીમેં કંગી કરે. તેલ લગાએ. સરકે બાલોંકો સાફ રખે આંખોં મે સુરમા લગાએ હર આંખમે તીન તીન સિલાઈ ફેરે. હુઝુર (સ.અ.)ભી એસા કરતે થે.

પુશ્બુ

કપડોંમે પુશ્બુ લગાના સુન્નત હૈ. જુમ્આ ઓર ઈદકી નમાઝો ઓર ઈજતેમાઅકી શિર્કત કે વક્ત પુસુસીયત સે પુશ્બુ કા એહતેમામ કરે. હુઝુર (સ.અ.) ઈત્ની ઝિયાદા પુશ્બુ ઓર ઈત્ર કા ઈસ્તેમાલ કરતે થે કે આપકે સરકી માગ મે પુશ્બુકા અસર ઝાહીર હોતા થા.

और आप (स.अ.) का ये अमल उम्मतको सभक देनेके लीये था वरना आप (स.अ.) भुद सरापा "पुशु" थे आपके पसीने में पुशुभी उजराते सहाबा (र.दी.) आपका पसीना जमा करते थे और पुशु की जगा इस्तिमाल करते थे.

पुशु लगाने में मटो को इस्का प्याल रचना याहीअे के पुशु तेज और उस्का रंग हल्का हो. और औरतो को इस्के पिलाइ हल्की पुशु और तेज रंगवाली चीजें इस्तेमाल करनी याहिये.

गुस्ल

जनाबत (पानी नापाकी) से पाक होने के लीये गुस्ल जल्दी करना याहीये हुसुर (स.अ.) ने ईशाद इरमाया जिस घरमें जनाबतवाला आदमी होता है और बगैर मजबुरीके गुस्ल करने में देर करता है. तो उस्के घरसे रेहमतके फीरशते यले जाते है. और शयातिन जमा होजाते है नापाक होनेकी डालतमें मरखदमें ठेहरना हराम है. नापाक होनेकी डालतें पाने पीने से बचना याहीये अगर फीरन गुस्ल न कर सके तो कमसे कम शरमगाह को घोरकर वुसु कर लेना याहिये

गुस्ल में तीन इज्ज हैं. :-

- (१) मुंह बरकर कुल्ली करना.
- (२) नाकमें पानी बढाना (नरम जगा तक)
- (३) तमाम बदन पर अेक भरतभा पानी बढाना

गुस्ल करने का तरीका :- पहले दोनों हाथ पडोयो तक घोवे उस्के बाद इस्तिन्जा करे फीर जो नापाकी लगी हो उस्को घोवे फीर कुल्ली करते वक्त अगर रोजा न हो तो गरारा भी करे. उस्के बाद नाकमें अच्छी तरह पानी, बढाये औरसाइ करे फीर बावों की जडोंको तर करे इस्के बाद तमाम बदन पर पानी बढाये अगर कोई जगा बाल बराबर सुभी रेह जायेगी. तो गुस्ल न होगा भुब अेहतियात करे.

मस्थला :- अगर गुस्ल करने के बाद याद आये के इला जगा पानी नही पडोया तो फीर से गुस्ल करनेकी जरूरत नहि जो जगा पुशु है उस्को घोवो अगर कोई कुल्ली करना या नाकमें पानी डालना भुल गया तो पास ईस कमी को पुरा करनेसे गुस्ल हो जायेगा.

भस्त्रलल :- गुस्ल करने के बलद वुलु करना जडूरी नलड है. अगल नडलल या कुअन शरीक वगेरड पढनल यलडे तो पढ सकतल है कडुके गुस्ल में वुलु ली डो गयल.

भस्त्रलल :- गुसलभलने मे यल कीसी औसे डुकलड पर जलडं दूसरे आदमी की नलगलड उसके सतर पर न पडे. तो नंगे बदन नडलनल जलरुज है. डगर उस डललत में कलले की तरक डुंड और पीठ करना जलरुज नलड. गुसलभलने में पेशलब करने से बयनल यलडलये.

भस्त्रलल :- गुस्ल करते वक्त ललललडल पलनी बडलनल सतर डुलल डोनेकी डललतमे बलते करना कलले की तरक डुंड करना सुनत के डलललक वुलु करना वगेरड डकडुड है.

जुडुडल और रूडेन केलीअे और रूजतेडललत में शलरकत के लीये गुस्ल करना अकडल है. डदडीष शरीक में जुडुडलकी नडलज के लीये गुस्ल करनेकी बडी तलकीड आरू है. गुस्ल से कलरलग डोने के बलद ये दुरल पढनल यलडलये.

अशददु अलललरूडलडरूडललडुं वडदडुं लल शरीकलडुं वअशददुअन डुडडडन अडुडु वरसुडुडुं.

तुड अगल कलडलडतमें नेक डुुगुुकी जडलतत में शलडील डोनेल यलडु तो तुडुं डर रूडलदत में डुलुडर (स.अ.)की आदतको रूडुतीडलर करना यलडलये.

अथतुलभलके आढल

अथतुलभलल यल पेशलबभलने में डुलेसर और डुले बदन नलड जलनल यलडलये और अपनल बलडल डेर पडेले रभनल यलडलये और बलडर आते वक्त दलडल डलव बलडर रभनल यलडलये अथतुलभलल में जलते वक्त येदुरल पडु.

डलसुडलडुी अलललडुड रूनुनी अडुलुडुीक डलनल डुडुसे वलभडलरूड और डलडर नीकलते वक्त ये दुरल पडु. :-

गुकरनक अलडडुडलललललललल अडुडु अनुनील अडु वअकलनी . ये दुरलअे दीलमें पढनी यलडलये.

अथतुलभललमें कुुी यीज अलललडुके नलडकी सलथमें न डोनी यलडलये के

बेअदबी न हो ईस जगा कोई हुजुल बात न करो अल्बत्ता कोई सुइरी बात हो तो की जा सकती है. शर्मगाहसे जइरतसे जियादा कपडा न उिकाओ पाभाना और पेशाब के लीये दुर जगा जाकर बैठना याहीये जइस्से लोगोंको आवाज और बदबु न आवे. डिब्बेकी तरफ मुंड और पीठ करना मना है. अगर मजबुरी हो तो ईजाजत है. ठेकरे हुओ पानी में पेशाब करना. सायेदार और फलदार दरभत के नीचे और पानीकी नहर या नालीमें दुरइस्त नही. ईस्तिन्ज पहिले मीट्री के ढेले से डीर पानी से अफजल है. ईस्तनजे के बाद ये हुआ पढे अल्लाहुम्भइस्सीन इर्जी अनील इवाहीशे वतइलीर कल्मी मिननीइक (तोइइतुलअबरार)

मस्जिद के आदात

मस्जिद पुढाका घर है और सब मुकामात से अफजल है मुसलमान को जियादा वक्त मस्जिदहीमें रहना यहीये और ओअतिकाइकी नियत कर लेनी याहीजे.

इदीस शरीफ में है के जइस शप्स को देओ के मस्जिदमें आता जाता है और मस्जिदसे तअल्लुक पैदा हो गया है तो ईस्के मुसलमान होनेकी गवाही हो अल्लाह तआला इरमाता है.

ईन्नमा यअमुइ मसाजिदल्लाही मन आमन बिद्लाही वलयवमील आपीरी. "बेशक जो लोग पुढा और आभेरत पर ईमान रभते है. वो लोग मस्जिदोंको आबाद रभते है."

इदीस शरीफ मे आता है जो मुसलमान मस्जिद से दील लगाता है. और अक नमाजके बाद दुसरी नमाज का ईन्तीजार करता है. पुढा तआला जिस्को अशकि साये मे जगा अता इरमायेगा.

मस्जिदमें दुनियाकी बातें करना जाईज नहि.

मस्जिद पुढाकी ईबादत. नमाज, तिलावत और वअज व तब्दीग के लीये है. अल्लाह तआलाने जिस्को जिसी मकसद के लीये बनाया है. मस्जिदमें दापील होते वक्त सीधा पाव रभे और ये हुआ पढे. बिसिमल्लाही वस्सलातु वस्सलामुं अला रसुबिल्लाहे अल्लाहुम्भग-डीरवी जुनुबि वइतइली अब्वाब रहमतिक.

मस्जिदमें बैठनेसे पहिले हो रकात तहीयतुल मस्जिद अदा करो

અગર નફીલ કા મૌકા ન હો તો ચાર મરતબા સુબ્હાનલ્લાહી વલ હમ્દુલિલ્લાહી વલાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહુ વલ્લાહુ અકબર પઢવો.

મસ્જીદસે બાહર નિકલે તો બાયા પાવ બાહર નીકાલો ઔર મજકુર (દાખીલ હોનેકી) દુઆ પઢો મગર "રહમતિકા" કી જગા "ફદલિકા" પઢો ઔર ઊસ પર યે ઝિયાદા પઢો વઅઝીઝુ બિલ્લાહી મિનશ્યતાનિર્જીમ વજુનદીલી.

(૧) મસ્જીદમેં દુનિયાકી બાતેં કરના નેકીયોંકો ઈસ તરહ સાફ કર દેતી હૈ જીસ તરહ જાનવર ઘાસ કો ખા જાતે હૈ.

(૨) મસ્જીદમેં લેહસન ઔર પ્યાઝ મુલી લેકર આના યા ઊસ્કો ખાકર આના નાજાઈઝ હૈ. આપ (સ.અ.)ને ફરમાયા જો શપ્સ બદબુદાર દરખ્ત યાની પ્યાઝ ખાયે વો હમારી મસ્જીદ કે કરીબ ન આયે ઈસલીયે કે ફરિશ્તોં કો ઈન તમાપ ચીઝોં સે તકલીફ હોતી હૈ. જીન્સે ઈન્સાનોંકો તકલીફ હોતી હૈ.

મતલબ યે હૈ કે જબ તક ઈસ્કી બદબુ મુંકસે ન જાયે વૈહાં તક મસ્જીદમેંદાખીલ ન હો યે હુકમ હર બદબુદાર ચીઝ કેલીયે હૈ જૈસે હુક્કા બીડી સિગરેટ વગેરહ.

ઈસી તરહ જીનકે બદન ઔર કપડોંસે પસીનેકી બદબુ આતી હો વો ભી જબ તક બદબુકોં દુર ન કરે મસ્જીદ મેંન જાયે.

(૩) મસ્જીદે આખિરત કે બાઝાર હૈ, જો શપ્સ ઈસ્મે દાખીલ હો ગયા વો અલ્લાહકા મહેમાન હૈ ઔર ઈસ્કી મહેમાની મગફીરત હૈ.

(૪) હઝરત ઊકબા બિન આમિર (ર.દી) સે રિવાયત હૈ ફરમાયા રસુલેખુદા (સ.અ.)ને જો શપ્સ અપને ઘરસે મસ્જીદકી તરફ નિકલતા હૈ તો ઊસ્કે નામએ આમાલમેં ફરિશ્તે ઊસ્કે હર કદમ પર દસ નેકિયા લીખતે હૈ.

(મુન્તાખબ)

લિબાસ કે આદાબ

કુર્તા ઔર ઈઝાર આધી પિંડલીયોં તક રહે. ઔર અગર યે ન હો સકે તો ટપને કે નીચે હરગીઝ ન લટકે અલબત્તા ઔરતેં ઈન્ના નીયા કપડા પહેને કે પુરે પાવ છુપ જાએ.

કપડે ખરીદને મેં દરમ્યાની પનકા ખ્યાલ રખે ન બહુત ઘટીયા

યાની હલકે ઔર ન બહોત ઊમ્દા હો બલકે દરમ્યાની ક્વૉલીટીકે હો મદ્દોકો સંકેદ લિબાસ ઝેબા હૈ. ઔરતો કે લીયે રંગીન કપડે ઊમદા હૈ.

અપની શરમગાહ યા સતરકા કોઈ હિસ્સા બગૈર ઝરૂરત કે ન ખોલો. જબ ઝરૂરત સે ખોલો તો યે દુઆ પઢો. "બિસ્મિલ્લાહીલ્લાહી લાઈલાહ ઈલલ્લાહુવ."

જબ કપડે પહેનોતો યે દુઆ પઢો. અલ્હમ્દુલિલ્લાહીલ્લાહી કસાની હાઝા વરઝકનીહે મિનગયરી હવલીમ મીન્ની વલાકુવત.

અમામા પહેનના સુન્નત હૈ.

બાતચીત કરને કે આદાબ

મુંહસે હમેશા અચ્છી બાત નિકાલો જો બાત મુંહ સે બોલના હરામ હો ઊસ્કા સુનનાબી હરામ હૈ. દુસરેકી બાત તવજજુહસે સુનો દુસરેકી બાત ન કાટો હા. અગર ગુનાહ યા બેદીની કી, જૈસે ગીબત વગૈરહ કી બાત હો તોવહાં સે ઊઠ જાઓ.

બાત બાતમેં કસમખાના ઈન્સાનકો બે એતબાર કર દેતા હૈ પુદાકી કસમ બહોત સખ્ત ઝરૂરત કે વક્ત ખાની યાહિયે ઔર સચ્ચી બાત પર ખાની યાહીયે.

સલામ કે આદાબ

આપસમેં સલામ કરો યાની અસ્સલામુ અલયકુમ કહો ઔર જવાબમેં વઅલયકુમસ્સલામ કહો. સલામ ઔર ઊસ્કે જવાબમેં ઈસ્કે અલાવા દૂસરે સબ તરીકે વાહીયાત હૈ.

જો પહેલે સલામ કરતા હૈ. ઊસ્કો જ્યાદા સવાબ મીલતા હૈ. જો કોઈ દુસરે કા સલામ લાએ તો ઊસ્કે જવાબમેં યું કહો "અલયહી વઅલયકુમુસ્સલામ" હાથકે ઈશારે સે સલામ કે વક્ત ઝૂકના મના હૈ.

અગર કોઈ શપ્સ દુર હો ઔર તુમ ઊસ્કો સલામ કરો યા વો તુમકો સલામ કરે તો ફીર હાથસે ઈશારા કરના જાઈઝ હૈ. લેકીન ઝખાનસે બી સલામ કે અલ્ફાઝ કેહને યાહિયે.

જો બચ્ચે સરકારી સ્કુલમેં પઢતે હૈ ઊન્કો અંગ્રેજી યા મુશરીફાના

તર્જસે સલામ ન કરના ચાહીયે બલકે સુન્નત તરીકે સે સબકો સલામ કરે.

અગર કોઈ ગેર મુસ્લિમ સલામ કરે તો ઊસ્કો ઈસ તરહ જવાબ દો “હદાકલ્લાહુ.”

જો શપ્સ અપને યા કીસી દુસરેકે મકાનમેં જાયે તો દાખીલ હોતે વક્ત સલામ કરે અગરયે ઘરમેં કોઈ મૌજુદ નહો ક્યુકે વહાં ફરિશ્તે તો હોતે હૈ. હદીસ શરીફમે આતા હૈ કે ઐસા કરને સે ઘરમેં બરકત હોતી હૈ.

આદાબે મુલાકાત

જબ તુમ કીસી કે મકાન પર મીલને કે લીયે જાઓ તો પહેલે ઈજાઝત હાસિલ કરો મકાન પર પહોંચ કર પહેલે સલામ કરો ફીર કહો “કયા હાઝિર હો સક્તા હું?” અગર ઈજાઝત મીલ જાએ તો અંદર જાઓ વરના વાપસ હો જાઓ બુરા મત માનો.

યાની તીન મરતબા સલામ કરને પર ભી જવાબ ન મીલે તો સમઝલો કે ઈજાઝત નહી. યા મુલાકાતકા મૌકા નહિ. કોઈ ઊઝર હૈ. બસ વાપસ હો જાઓ બુરા ન માનો. ઈજાઝત લેતે વક્ત મકાનકે દરવાઝેકે સામને ન ખડે હો. મકાનકે અંદર ઝાકના મના હૈ. જબ નઝર અંદર પહોંચ ગઈ તો ફીર ઈજાઝત કા કયા મતલબ ? ખુદ અપને મકાનમેં ભી સલામ કરકે જાયે.

મકાનકે અંદરસે પુછે કૌન ? તો તુમ યે ન કહો “મેં” અંદરવાલા કયા જાને મેં કૌન હૈ અપના નામ બતાઓ.

મકાનમે દાખીલ હોકર બેઠનેકી બઢીયા જગા તલાશ ન કરે. જહાં જગા મીલે બેઠ જાયે. યે ઘરવાલેકા કામ હૈ કે આપકો કહાં બીઠાએ

કોઈ આપકે યહાં આયે તો

તો ઊનકે આને પર ખુશી જાહીર કરો. ખડે હોકર ઈસતિકબાલ કરો. કુછ અરસેકે બાદ મુલાકાત હો તો મુઆન્કાભી કરો. ફીર અદબસે બિઠાંઓ. અગર કિસીકા આના ના પસંદ હો તો ભી અખ્લાકસે પેશ આના આપકા ફર્જ હૈ.

उदीच शरीरमें है के "बदतरीन" शब्स वो है के लोग इससे मिलना इसलिये पसंद न करेके वो बढ अष्वाक और बढ मिजाज है. "अल्लाह की पनाह" जैसे बुरे अष्वाक और बुरी छंदगी से के ये बिमारी दोनों जहानमें आदमीकी बरबाह कर देती है.

--: जब वापसी हो तो :-

उससे मुसाफा करो और ये दुआ देकर इपसत करो. अस्तवहीजिल्लाह दीनकुम वईमानकुम व भवातिम अमलुकुम.

--: सलामका लेहतरीन जवाब :-

वअलयकुमुस्सलाम वरहमतुल्लाही वबरकतुहु वमग कीरतुहु बढा दो दुस्तुर (स.अ.)का ईशाह है के ईन्मे से हर लकज पर दस नेकियोंका सवाब मिलता है. जैसे जैसे अलफाज बढ़ेंगे सवाब बढ़ता रहेगा.

सोनेके आटा

जब सोनेका ईरादा किया जाये तो सीधी करवट पर किल्लाकी तरफ होकर सोना याहीअे और ये दुआ पढनी याहीअे. "अल्लाहुम्म बिस्मिक अमुतु व अहया." ये पढकर तीन मरतबा असतगकीइल्लाह अजीमुल्लाही वाईवाहा ईल्लाहुवल डय्युल कैय्युमु व अतुबु ईलयही उउ मरतबा सुब्दानल्लाह. अल्लहुदिल्लाह उउ मरतबा. अल्लाहु अकबर उउ मरतबा पढो.

सोनेसे पहेले हो सके तो वुलु करले और आंभ लगने तक जभान पर जिंक जारी रब्भे. नरम बिस्तर पर सोनेकी आहत डालना अच्छा नहि ताके गेहरी निंदसे नमाज कौत न हो.

उजरत सुलेमान (अ.व.)की वालेहद अपने बेटे को नसीहत करती थी के बेटा रातको जियादा न सोया करो. ऐसा आदमी कियामत के दीन भावी लाभ उठेगा.

ईमाम गिजाली (र.अ.) इरमाते है के रात दीन के २४ घंटे है. ईन्मे आठ घंटेसे जियादा न सोन याहीये. इस हिसाबसे अगर तुम्हारी उमर साठ सालकी हो तो गोया तुमने २० साल सोनेमे गुजार दीये और तुम्हारी तिहाई उमर बरबाह हो गई.

भसनून तरीका दाई करवट पर सोनेका है. लेकीन अगर कीसीका दील

याहें तो यीत लेटे या बाई करवट पर लेटे तो उसको पहले दाई करवट पर लेट कर सुन्नत अदा कर लेनी याहीये ईस्के बाद प्वाहीश के मुताबीक आराम कर सकता है.

कयलुला करना (यानी दोपहरमें पाने के बाद थोडी देर आराम करना.) सुन्नत है. ईससे रातको जागनेमें मदद मीलती है. नमाजे इजर के बाद सोना अच्छा नहि. ईससे रोजीमें बंग्ली पैदा होती है. नमाजे ईशांसे पहले सोना भी मुनासीब नही. ईससे नमाजुभी कजा हो सकती है. और निहली पराब होती है.

झाईदा :- तलजुदकी नमाज के वीये ठिठना हो तो सुरअे कइफ पारा-१५ की आपरी आयतें ईन्नल्लाजीन आमनु से आंपीर तक पढकर सोनेसे मुकरर वक्तमें आप भुल जायेगी. (ईन्शा अल्लाह)

नींदमे जब कोई प्वाब नजर आये तो पुदाकी तारीफ करनी याहीये और अगर बुरा प्वाब नजर आये तो ईस्की बुराईसे पुदाकी पनाह मांगनी याहीये और अपनी बाई तरफ तीन दफा धुत्कार देना याहीये और करवट बदल देना याहीये. ईस किसम के बुरे प्वाब कीसीसे बयान न करें ईस्से नुकशान नहि पछोयता.

पानेके आदाब

पाना पानेसे पहले बिस्मील्लाह पढना याहीये और जब पतम करे तो अलहुमुदु लिब्लाह पढे और जब पाना सामने आये तो अल्लाहुम्म बारिकलना कीमा रजकतना वअतअमना भयरम मिन्दुं पढे. अगर दुध होतो वजीदना मिन्दुं पढे कयुंके दुध पुदाकी सबसे बडी नेअमत है.

पाने से पहले दोनो हाथ धोअे- लुकमा छोटा भाअे और ईसे भुब यभाये. अपनी तरफसे पाना पाअे खेटमें हर तरफ हाथ न मारे ये तेहजीबके बिलाफ है.

लुकमा जमीन पर गीर जाअे तो उसे साफ करके दो बारह भावे उसकी शैतानके वीये न छोडे. पाने के बाद ठीगलीयोको जपानसे याट कर साफ करवे. और भरतन को ठीगलीयोसे साफ करे.

मुल्के शाममें अेक सहाबी (रदी.)के हाथसे लुकमा गीर गया तो उसको दो बारा ठीठाया देभनेवालोंने उनको रोका के शामके लोग ईस्को

और समझते हैं तो सहायी (रही.) ने इरमाया में छुट्टर (स.अ.)की सुन्नतकी र्धन जालीलोके ताने के भौंसे नही छोड सकता .

पाना तीन गिगलीयोसे पाया करो बीयकी गिगली शहादतकी गिगली और अंगुठा हा अगर यावल वगेरह हो तो पांय गिगलीयो से भी पा सकते है.

मेवा और इल पानेमें अपने सामने से पाना ज़रूरी नहि. अपनी पसंदका इल जहांसे याहे पाये.

पाना पाते वक्त दुसरोकी देपना मुनासिब नहि अपने काममें मशगुल रहेना याहीये जब लुकमा मुंडमे हो तो बात न करे. पन्कारने या छींके वक्त अपना मुंड दुसरोकी तरफसे डेर लेना याहीये.

जब कीसी के यहां पाये तो घरवालों के हकमें हुआ करो यानी ये हुआ पढे.

अल्लाहुम्म अर्लम मन अतअमनी वस्की मन सकानी अल्लाहुम्म बारिक लहुम डीमा रजकतलुम वगडीरलहुम वरहमहुम. जो शप्स ये हुआ पढता है उसकी बहोत अजर मिलता है.

जियादा लगीज और किमती गिजाये पसंद न करे. वरना गिन लोगोमे से हो जाओगे जुन्डे बारेमें रसुवे अकरम (स.अ.)ने ईशाद इरमाया के मेरी गिमतमें बदतरीन लोग वो है जो लगीज तरीन (यटाकेदार) पाने पाकर मोटे ताजे हो जाते है. और गिन्का मकसदे जीदगी ही किसम किसम के गिम्दा पाने पेटमे डालना और लंबी यौडी बातें करने मे गुजारना होता है.

बदबुदार चीज जैसे प्याज लेहसन वगेरह पाकर मस्जिदमें या मजलीसमे मत जाओ.पहेले मुंड साफ़ करलो ताकी बदबु न रहे. जब पाना पा युको तो दस्तार प्वान गिठा लो. अगर अपने साथीसे पहेले पा युको तो थोडा थोडा पाते रहो और उसका साथ हो ताके शरमकी वजहसे लुका न रहे. अगर कीसी वजहसे गिठना हो तो गिजर बताकर उठो महेमानको दरवाजा तक पडोयाना सुन्नत है.

पाने पीनेमे अतिदाव रपना ज़रूरी है जब लुक लगे तब पाना पाये. और लुक बाकी हो और हाथ पीय लो. पानी थोडा थोडा पीना याहीये और तीन सास से पीना याहीये भरतनमें सास लेना बुरा है और पानी भर छोकर पीना अच्छा नहि पानी बेठ कर पीये और बिस्मिल्लाह पढकर पीये और पीकर अलहुमुदिल्लाह कहे.

મસનુન દુઆઓ

સુબ્હ શામકે તમામ અવકાતકો ઈબાદત ઔર નવાફીલ ઔર ઝિક્ર વિગેરહમે ખર્ચ કરના ચાહીયે દિન રાતમેં થોડા વક્ત ભી ઝિક્ર ઔર અચ્છે અમલ કરને સે ખાલી ન રેહના ચાહીયે. એસા કરનેસે જિંદગી કે વક્તમેં બરકત જાહીર હોતી હૈ. જિંદગી કા મજા આતા હૈ. ઔર અલ્લાહ તઆલાકી તરફ તવજ્જુહ કાઈમ રહેતી હૈ.

ઝિક્ર ઈબાદતકે સાથ ખાને પીને ઔર રોઝી કમાને કે અવકાત ભી મુનાસિબ તરીકેસે તય કરલીયે જાયે વરના વક્ત બરબાદ હોનેકા ખતરા હૈ.

બસ યહી “વક્ત” તુમ્હારી ઊમર યા જિંદગી હૈ ઔર યહી જિંદગી તુમ્હારી અસલપુંજી ઔર બુન્યાદ હૈ ઈસ્કા હર સાસ કિમતી હૈ. જો સાસ ગયા જાનેકે બાદ વાપસ નહિ આ સકતા.

ઈસલિયે ઝરૂરી હૈ કે ઈબાદતમે ફર્જ કો એહતિમામસે અદા કિયા જાએ ઔર સાથમે મુખ્તલીફ દુઆઓકો અપને અપને વક્તમે પઢી જાયે કયુંકે હર ઈબાદત કા એક ખાસ રૂહાની અસર હૈ. ઔર અલ્લાહ તઆલાકે યહાં હર અમલ ઔર ઝિક્ર ઔર દુઆમેં એક ખાસ મંરતબા ઔર તાસીર હૈ.

નફીલ નમાઝે પઢના. તિલાવતે કુર્આન કરના. ઈલ્મે દીન હાસીલ કરના વગેરહ યે ભી ઝિક્ર ઔર અંવરાદકી મુખ્તલીફ કીસમેં હૈ.

અબ યહાંસે આગે ઈન મસનુન દુઆઓકો ઝિક્ર હૈ. જીસ્કો મોકેસે પઢનેમેં બહોત સવાબ મીલતા હૈ. નીઝ વો ઝરૂરિયાતે દીનકી બાતે જીસ્કા હિફ્ઝ કરના ઝરૂરી હૈ. ઊન્કો લીખા જાતા હૈ. લેહાઝા ઈન્કો ઝબાની (મુંહ પર)યાદ કરો.

કુર્આન-હદીસકે અનમોલ ખઝાને

(૧) હઝરત મઅકલ બિન યસાર (રદી.)સે રિવાયત હૈ કે હુઝુર (સ.અ.)ને ફરમાયા જો શખ્સ સુબ્હકો અઝિઝૂબિલ્લાહી સ્મમીઈલ અલીમે મીનશયતાનરિજમ તીન મરતબા પઢે ફીર યે આયત એક મરતબા પઢે તો અલ્લાહ તઆલા ઉસ પર સત્તર (૭૦) હઝાર ફરિશ્તે મુકર્રર કર દેતે હૈ. જો શામ તક ઈસ્કે લીયે ઈસ્તિગ્ફાર કરતે હૈ. અગર ઊસ દીન ઊસકી

મૌત આ ગઈ તો શહીદ મરેગા. જો શામકો પઢવે તો ઊસ્કોભી પહી દરજા મીલેગા. (મિશકાત)

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدِيمُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهِمِّنُ
الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ هُوَ
اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسْمِعُ
لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ه

આયત યે હૈ. હુવલ્લાહુલ્લઝી લાઈલાહા ઈલ્લાહુ આલીમુલ ગયબિ વશહાદતી હુવરહમાનુરહીમ હુવલ્લાહુલ્લઝી લાઈલાહ ઈલ્લાહુઅલમલીકુલ કુદદુસુસલામુલ મુઅમિનુલ મુહયમિનુલ અઝીઝુલ જબ્બારુલ મુતકબ્બીર મુબ્દાનલ્લાહી અમ્મા યુશરીકુન. હુવલ્લાહુલ ખાલિકુલ બારીઊલ મુસવ્વીરુ લહુલ અસ્માઊલ હુસ્ના યુસબ્બીહું લહું માફીસ્માવાતિ-વલ અર્દા-વહુવલ અઝીઝુલ હકીમ.

એક બુરૂગ ફરમાતે હૈ કે. મેં રોજાના સુબહ સત્તર (૭૦) હઝર ફરિશ્તોકો અપને લીયે ઈસ્તિગફાર કી ડુયટી પર લગા કર ફીર નાશતા કરતા હું (રૂહુલમઆની)

(૨) દુનિયા આખેરતકે ગમસે નજાત :-

હઝરત અબુ દરદા (રદી.)સે રિવાયત હૈ કે રસુલે અકરમ (સ.અ.)ને ફરમાયા જો શખ્સ સુબહ શામ સાત મરતબા

حَسْبِيَ اللَّهُ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ه

હસબિયલ્લાહુ લાઈલાહા ઈલ્લાહુવ-અલૈહે તવક્કલતુ વહુવ રબ્બુલ અર્શાલિ અઝીમ. પઢે તો અલ્લાહ તઆલા ઊસ્કે દુનિયા આખેરતકે હર ગમ કે લીયે કાફી હો જાયેંગે.

(રૂહુલમઆની)

(૩) જામેઅ દુઆ :-

હઝરત અબુ ઊમામા (રદી.)સે રિવાયત હૈ કે નબીયે કરીમ

(स.अ.)ने बहोत कसरतसे दुआअे मांगी लेकिन हम यंद लोगोंको जिस्मे से कुछ याद न रही तो हमने अर्ज किया या रसुलुल्लाह (स.अ.)आपने बहोत दुआअे मांगी हमको याद नही रही तो आप (स.अ.)ने इरमाया के में तुमको ऐसी दुआ न बताजि ? जो धन सबको जामेअ हो. तुम ये दुआ पढो.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ
 مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ
 شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
 وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَالْأَحْوَالُ وَالْأَقْوَةُ إِلَّا
 بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ۝
 (بخاری)

अल्लाहुम्म धन्नी असअलुक भिन भयरी भा सअलक भिन्दु नबीथुकेमुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलयहे वसल्लम व अजिउबिक भिन शर्रे भस्तआज भिन्दु नबीथुक मुहम्मदुन सल्लल्लाहुं अलयही वसल्लम वअन्तल मुसतआनु वअलयकल बलागु वलाहवल वलाकुवत एल्ला बिल्लाहील अलीथील अजीम (बुभारी)

सुब्हानल्लाह ! कीन्नी जिमदा दुआ है. अल्लाह करे सब मुसलमानोको याद हो.

(४) रंज और गमसे नजात दीलाने वाली दुआ :-

उजरत अबु सईद भुदरी (र.दी.) से रिवायत है के अेक शम्स ने अर्ज किया अय अल्लाहके रसुल (स.अ.) मुजे गम और कर्जने घेर लीया है. यानी जियादा कर्जकी वजहसे परेशान हुं हुसुर (स.अ.)ने इरमाया क्या में तुजे ऐसी दुआ बताजि ? जोस्के पढनेसे अल्लाह तेरे गर्भोको दुर करदे और कर्ज को अदा करदे अर्ज किया उजर बताये आप (स.अ.)ने इरमाया सुब्हशाम ये दुआ मांगो.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْمَرِّ وَالْحُرْبِ وَأَعُوذُ بِكَ
 مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُطْلِ وَالْجُبْنِ وَأَعُوذُ بِكَ
 مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ ۝ (مشکوة)

अल्लाहुम्म धन्नी अजिउबेका भौनलहम्मी वल हुजने वअजिउबिक भिनल

अजरी वल कस्वी वअउरुबिक मिनल बुध्वी वलजुब्नी वअउरुबिक
मिनगलबतिद - हेने वकहरिजाल

(मिशकात)

(५) जलाओंसे हिजाजत के लीये :-

उजरत अबाान बिन सवबाान (रदी.)से रिवायत है के मेने अपने
वाविदको केहते हुअे सुनाके रसुले अकरम (स.अ.)ने इरमाया जो बंदा
सुब्दशाम तीन-तीन भरतबा ये हुआ पढे. उरुको कोर्य थीज नुकशान नही
पहोंया सकती.

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ
وَهُوَ الشَّمِيعُ الْعَلِيمُ (مشكوة)

बिस्मील्लाहील्लजी ला यहुई मअ-ईस्मिही शयबिन डील अदी
वलाहीस्समाई वहुवस्सभीउव अलीम., (मिशकात)

(६) बेयेनी दर करनेके लीये :-

उजरत अनस (रदी.)से रिवायत है के हुजुर (स.अ.) को जब
कोई बेयेनी और परेशानी होती तो ये हुआ पढते. याहयु याकयुम
बिरहमतिक असतगीस.

अजीमुश्शान वजीहा

उजरत अबु अय्युब अन्सारी (रदी.)से रिवायत है के जब सुरअे
फातिहा आयतुल कुर्सी और शहिदल्लाहु और कुलिद्लाहुम माविकल मुल्क.
नाजील हुई तो इन आयतोंने अर्श से मोअल्लक होकर इरियाद की के
क्या आप हमको औसी कौम पर नाजील करते है. जो गुनाह करे ईशाद
इरमाया मेरी ईजाजत और जवालकी कसम जो लोग हर ईर्ज नमाजके बाद
तुम्हारी तिलावत करेंगे हम उनकी मगफीरत इरमायेगे और जन्तुल
किरदौसमे जगा देगे. और (७०)भरतबा नजरे रहमतसे देमेगे. और
उरुकी सत्तर हाजते पुरी करेंगे. उरुका अदना दरजा मगफीरत होगी.

वजीहा पढने का तरीका :

अलहम्दोशरीफ और आयतुलकुर्सी पढकर ये हुआ पढे.

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّمَا اللَّهُ الْهُوَ
 وَالْمَلَائِكَةُ وَالْأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۗ لَا
 إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۗ
 قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تَوَكَّلْ عَلَى الْمَلِكِ مَنْ تَشَاءُ
 وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ مِنْ تَشَاءُ وَتَعَزُّ مِنْ تَشَاءُ وَتَذِكُ
 مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۗ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۗ
 تَوَجِّحُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتَوَجِّحُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَ
 تَخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتَخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ
 مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۗ

शहीदल्लाहुं अन्नहुं लाईलाहा ईल्ला हुव वलमलाईकतुं वजिलुलईल्मी
 काईममबिल क्स्ती. लाईलाहा ईल्लाहुवल अजीमुल-इकीम ईन्नदीन
 -ईन्दल्लासिल ईस्लाम.

अल्लाहुम्म माविकल मुल्की तुअतिलमुल्क मन तशाअि वतनजीविल
 मुल्क भिम्नं तशाअि वतुईअतुं मन तशाअि वतुजील्लुं मन तशाअि बियदीकल
 भयर. ईन्नक अला कुल्ली शयईन कदीर. तुवीजुल वथ्व डीन्हाडीरी
 वतुविलुन्नहार किल-वयवी वतुभरीजुलइथ्य भिनव मथ्यती वतुभरिजुल
 मथ्यत भिनव इथी वतरजुकु मन तशाअि बिगैरे सिसाभ. (दयलमी)

(c) पहाडकी बराबर कर्ज हो तो अदा करनेकी दुआ :-

हजरत अली (रही.)से रिवायत है के मेरे पास एक मक़ातिबगुलाम
 आया और कहाके में गुलामीसे छुटकारेके लीअे रकम अदा करनेसे मजबूर
 हुं तो इरमाया के क्या ? में तुजको वो दुआ बताअि जो मुझे रसुले अकरम
 (स.अ.)ने सिभाई है के अगर पहाडके बराबर कर्ज हो तो अल्लाह
 तआला ईस्की अरकतसे अदा करे. दुआ ये है. "अल्लाहुम्मक ईनी
 बिडलावीक-अन इराभिक वअगनिनी भीइदविक अम्मन सिवाक" (तिर्माअी)
ईईद :- ईस्की इर नमाजके बाद जउर पढना याहीये अगर इर नमाज
 के बाद सत्तर (७०)मरतबा सिदक दीवसे पढे तो इफ़ता गुजरने से पहले
 अल्लाह तआला उसको गनी कर देंगे.

(९) हर चीज के लीये काफ़ी होने की दुआ :-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन पुबैब (रही.) इरमाते है के हुज़ुर (स.अ.) ने मुझे इरमाया कुलहुवल्लाहु अहद. और कुल अज़िज़ु बिरब्बीन्नास और कुल अज़िज़ु बिरब्बील इलक. तीन तीन भरतबा पढे तो तुज़को हर चीज़ के लीये काफ़ी होगी. (तीर्माज़ी)

(१०) मुसीबतमें बेहतर बढवा हासिल करनेकी दुआ :-

हुज़ुर (स.अ.) ने इरमाया के ज़स्की कोई मुसीबत पडोये वो ये पढे. ईन्नाखिल्लाही वईन्ना ईवयडे राजेज़िन. अल्लाहुम्म अज़रनी की मुसीबती वअलुफ़-वी भयरम मिन्यु. तो अल्लाह तआला उस्की ईस मुसीबतका अज़र देगा. और मुसीबतके बढवेमे उस्से बेहतर चीज़ अता इरमायेगा. ये दुआ हर मुसीबतमें पढी जा सकती है.

(११) अगर जौफ़ (डर) हो तो ये दुआ पढो :-

अल्ल हुम्म-क-दिना हु-बिमा शिअत.

(१२) अगर कीसी गीरोह (पार्टी) से जौफ़ हो तो ये पढो :-

अल्लाहुम्म ईन्ना नज़अलुक-ईनुदुरीहीम वन-उज़ुबिक मिन शुदुरीहीम.

(१३) ईमाम अबु हनीफ़ह (रह.) की अेक दुआ :-

ईमाम अबु हनीफ़ह (रह.) इरमाते है के मुज़ेज़ो कुछ भीला है वो ईस दुआकी बरकतसे भीला है.

अल्लाहुम्म ईन्ना नस-तईनुक अला ताअतिक. हर नमाज़के बाद ग्यारह भरतबा ये दुआ पढ लीया करो. (मज़लीसे हकीमुल उम्मत)

नमाज़के बादकी दुआएं :-

हुज़ुर (स.अ.) नमाज़के बाद ये दुआएं पढा करते थे.

(१) सलाम इेर कर अस्तग़फ़ि़रुल्लाह तीन भरतबा और ईस्के बाद

(१२) اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ

وَالْإِكْرَامِ - ایک مرتبہ

(१३) اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى تِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ

وَحَسَنِ عِبَادَتِكَ -

(२) اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي
 (३) لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
 الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
 (४) اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطَى لِمَا مَنَعْتَ
 وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ ۝

- (२) अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु वभिन्कस्सलामुं तबारकत याअल-जवावि
 वल ईकराम. अक भरतबा
 (३) अल्लहुम्म अ-ईन्नी अला तिलावतील कुर्आनी वजीकरीक - वशुकरिक
 वसुन्न ईबादतिक .
 (४) अल्लाहुम्मग-हीरली वरउम्नी वडदीनी वआदीनी वरजूकनी
 (५) लाईवाड ईल्लल्लाहुं वडदुं लाशरीकलहुं लहुल मुलु वलहुल उम्हु
 वहुव अला कुली शयईन कदीर.
 (६) अल्लाहुम्म ला-मानिअ लिमा अमतयत वला मुअतिय लिमा मनअत
 वला यनईजिल-जददी भिनकल जददी.

सुब्धान रब्बीक रब्बील ईजजती अम्मा यसेकुन वसलामुन
 अललमुरसलीन वल उम्हु विल्लाही रब्बील आलमीन. पढे.

- (७) और हुजुर (स.अ.)ने इरमाया जो शप्स हर इर्ज नमाजके बाद
 आयतुल कुर्सी पढे तो जिस्को जन्नतमें जाने से कोई चीज नही
 रोकगी और दूसरी नमाज तक अल्लाह तआलाकी डिफ़ाजतमें रहेगा.
 आयतुल कुर्सी (पारा-३ रूकुअ-१) याद करलो हर इर्ज नमाजके बाद
 ज़रूर पढे.

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ
 الْعَظِيمِ ۝ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا تَعْبُدُ إِلَّا آيَاتَهُ لَهُ
 النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الشَّاءُ الْحَسَنُ لَا إِلَهَ إِلَّا
 اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الَّذِينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ ۝

(૮) ઔર યે ભી પઢે. લાહવલા વલા કુવ્વત ઈલ્લાહિલ્લાહીલ અલીય્હીલ અઝીમ. લાઈલાહ ઈલ્લાહુ વલા ન અબુદુ ઈલ્લા ઈયાહુ લહુન - નિઅમતો વલહુલ ફદલો વલહુસ્સના ઊલહસનુ લાઈલાહ ઈલ્લાહુ મુખ્લીસીન લહુદ્દીન-વલવ-કરીહલ કાફીરન. પઢે.

મુખ્તલાઈ અવકાતકી દુઆએ

(૧) જયા યાંદ દેખકર યે દુઆ પઢો :- અલ્લાહુમ્મ અહીલ્લહુ અલયના બિલ અન્ને વલ ઈમાની વસલ્લામતિ વલઈસ્લામી રબ્બી વરબ્બુકલ્લાહ.

(૨) શબ્દક્રમે યે દુઆ પઢે. :- અલ્લાહુમ્મ ઈન્નક અફુવ્વન તુહીબ્બુલ અફવ ફઅફુ અન્ની.

(૩) મજલીસ સે ઊઠતે વકત :-

સુબ્હાનકલ્લાહુમ્મ વબિહ્મદીક અશહુદુ અલ્લાઈલાહ ઈલ્લાહ અસ્તગફીરુક વઅતુબુ ઈલયક.

(૪) સુબ્હ શામ યે દુઆ પઢો :-

રદીતુબિલ્લહી રબ્બવ વબિલ ઈસ્લામી દીનવં વબિમુહમ્મદીન સલ્વલ્લાહુ અલયહે વસલ્લમ રસુલવં વનબિયા ઔર યે ભી પઢે બિસ્મિલ્લાહીલ્લાહી લાયદુર્ફ મઅ ઈસ્મીહી શયઊન ફીલ અદી વલાફીસ્સ સમાઅ વહુવસ્સમીઊલ અલીમ. તીન મરતબા પઢે

(૫) ઘરસે નિકલતે વકત યે પઢે :-

બિસ્મિલ્લાહી તવકક્લતુ અલલ્લાહી વલાહવલાકુવ્વત ઈલ્લાહિલ્લહી.

(૬) પરેશાની કે વકત યે પઢે :-

લાઈલાહ ઈલ્લાહુલ હલીમુલ કરીમે લાઈલાહુ ઈલ્લાહુ રબ્બુલ અશીલ અઝીમ લાઈલાહ ઈલ્લાહુ રબ્બુસ્સ માવાતિ વરબ્બુલ અદી વરબ્બુલ અશીલ કરીમ.

(૭) સૈય્યેદુલ ઈસતિગફાર :-

હઝરત શદદાદ બિન અવસ (ર.દી.) સે રિવાયત હે કે નબીયે કરીમ (સ.અ)ને ફરમાયા જો શપ્સ સય્યેદુલ ઈસતિગફાર પઢે ફીર રાત મેં મર

જાયે તો જન્મતમે જાયેગા સચ્ચેદુલ ઈસિતગફાર ચે હૈ.

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي أَنَا عَبْدُكَ
وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ
شَيْءٍ مَا صَنَعْتُ أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي
فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذَّنْبَ إِلَّا أَنْتَ ۝

અલ્લાહુમ અન્ત રબ્બી લાઈલાહ ઈલ્લા અન્ત ખલકતની અના અબ્દુક વઅના અલા અહદીક વ વઅદીક મસ્ત તઅતુ વઅઝીઝૂબિક મિનશરી મા સનઅતુ અબુઝી લક બિનીઅમતિક અલથ્થ વઅબુઝી બિઝાબી ફગફિરલી ફઈન્નહુ લાયગફી રઝઝુબ ઈલ્લા અન્ત.

(૮) સોતે વક્ત કર લગે તો ચે દુઆ પઢો :-

અઝીઝૂબિકલીમાતિલ્લાહીત્તામ્માતિ મિનગદબિહી વઈકાબિહી વશરી ઈબાદીહી મમીન હમઝાતિશ શયાતીને વઅંયાયહ દોરન

(૯) ઘરકે ઓર દુસરે લોગોંકી બુરાઈ દુર કરને કે લીચે ચે દુઆ પઢો :-

અલ્લા હુમ્મ અસ્લીહ-આત બયનીના વઅલીફ બંચ કુલુબીના-વહદીના ઈલા સબીલીસલામી વનજજના મિનઝઝુલુમાતી-ઈલન્નુરી વજનબીનલ ફવાહીશ મા ઝહર વમા બાતન.

(૧૦) આમાલ નામે મેં નેકીયોંકા વજન બઢાનેકે લીચે ચે પઢો :-

સુબ્હાનલ્લાહી-વબિહમ્દીહી સુબ્હાનલ્લાહીલ અઝીમ

(૧૧) સુબ્હ નિંદસે ઊઠ કર ચે પઢો :- અલહમ્દુ લિલ્લાહીલ્લઝી અહ-યાના બાઅદ-મા-અમાતના-વઈલય હીન્નુશુર

(૧૨) કપડે પહેનનેકી દુઆ :- અલહમ્દુ લિલ્લાહીલ્લઝી કસાની

-માન્ઝીવારી બિહી અવરતિ-વઅતજમ્મહું બિહી-ફી હયાતી.

(૧૩) આઈનેમેં દેખતે વક્ત ચે પઢો :- અલ્લાહુમ્મ અન્ત હસ્સન્ત

ખલ્કી ફહસ્સીન ખોલોકી.

(૧૪) દુધ પીતે વક્ત ચે પઢો :- અલ્લાહુમ્મા બારિકલના ફીહે વઝીદના મિન્હું.

(૧૫) ખાનેસે ફારિંગ હોકર ચે પઢો :- અલહમ્દુલિલ્લાહીલ્લઝી

-અત-અમના વસકાના વજઅલના મિનલ મુસ્લિમીન

(૧૬) મહેમાનીમે ખાનેકે બાદ ચે પઢો :- અલ્લાહુમ્મ અતઈમ મન

અતઅમની વસ્કી મન સકાની

(१७) दई दूर करनेके लीये ये पढो :- बिस्मील्लाही अजिऊ बिधज्जतिव्वाही वकुदरतिही मिनशरी माअजुदु वजिहाजेर.

जस जगा दई हो हाथ रभकर सात मरतबा पढो.

(१८) जब आंघी चले तो ये पढो :- अल्लाहुम्म ईन्ना नसअलुक भीन भयरी हाजीही रईही वभयरी मा झीहा-वभयर-मा जिमीरतु- बिही-वनजिऊबिक मिन शरी हाजीहीरईही वशरी मा झीहा वशरी मा जिमीरतबिही.

(१९) जब जिजली समकने लगे :- सुब्दानल्लजी युसब्बीहुरअहु बि-इम्दीही वल मलाईकुतु-मिन भिकतिही.

(२०) जब भादल गर्जे तो ये पढो :- अल्लाहुम्म- हातक-तुल्ला-बिगदबिक-ववा तुहलिकना बिअज्जबिक व आझिना क्बल जालिक.

(२१) जारीश कम हो तो ये दुआ पढो :- अल्लाहुम्म अन्तल्लाहु लाईलाहा ईल्ला अन्त- अन्तलगनीयय्यु वनहुनुल कुकराअ-अन्जील-अलयनलगईस वजअल-मा-अन्जलाना-कुव्वतन वभलागन-ईलाहीन.

(२२) जब जारीश जयादा हो तो ये पढो :- अल्लाहुम्म उवालयना वलाअलयना अल्लाहुम्म-अलल-आकामी-वज्जरीराभी-वमना बतिश-शजरी.

(२३) जमाई (बगासा) आये तो ये पढो :- अजिऊबिल्लाही मिनशयता निरज्जम. बाया हाथ मुंह पर रभकर पढो.

(२४) मस्जुदमें टापील होते वकत ये पढो :-

अल्लाहुम्म-इ-तहवी अब्वाब रहमतिक.

(२५) मस्जुदमें अ'तिकाइकी निव्यत ईस तरह करे :-

बिस्मील्लाही-दभल्लु-वअलयही-तवक्कलुं-वनवयतु-सुन्नतल अ'तिकाइ

(२६) जब मस्जुदसे गहार निकले तो ये पढो :-

अल्लाहुम्म ईन्नी अस-अलुक मिन इहलिक वरहमतिक.

(२७) कीसीको इपसत करते वकत ये पढो :-

अस्तवं-दीजिल्लाह-दीनकुम वअमानातिकुम वभवतिम अमुलुकुम.

(२८) ईत्मकी तरक्की के लीये ये पढो :-

रब्बी जीदनी-ईल्ला-रब्बीशरहवी सदरी वयस्सीरवी अमरी वहुलुल जिकदतम-मिल्लीसाना यइकहु-कव्वी.

पुगू की दुआयें

- (१) पुगू शुरू करते वक़्त :- बिस्मिल्लाहील-अलीयील अज़ीम अलहुम्बिल्लिहिल्लाही अला हीनील ईस्लाम
- (२) कुल्ली करते वक़्त :- अल्लाहुम्भ अईन्नी-अला-तिलावतील कुर्आनी वज़ीकरीक वशुकरीक वहुस्न ईबादतिक.
- (३) नाकमें पानी डालते वक़्त :- अल्लाहुम्भ अरीहनी राईह तल जन्नत वला तुरीहनी राईहतन्नार.
- (४) मुंह धोते वक़्त :- अल्लाहुम्भ बथीद वजही- यव्वम तबयदहु वुज़ुहुव वतसवदहु वुज़ुह.
- (५) दाहना हाथ धोते वक़्त :- अल्लाहुम्भ-आतिनी किताबी-बियमीनी वडा-सिब्नी डिस्बाभंय-यसीरा
- (६) जाया हाथ धोते वक़्त :- अल्लाहुम्भ वा तुअतीनी किताबी बिशीमावी वला भीव-वराई ज़हरी.
- (७) सरका मसह करते वक़्त :- अल्लाहुम्भ अज़ील्वेनी तहत ज़िल्व अरशिक यवम लाज़ील्व ईल्ला ज़िल्व अरशिक.
- (८) कानों का मसह करते वक़्त :- अल्लाहुम्भज अलनी भीनल्वज़ीन यसतमे ग़िनल कव्व इयत्तबीग़िन अहसनहु.
- (९) गरदन का मसह करते वक़्त :- अल्लाहुम अ'अतिक रक़बति मिनार
- (१०) दाहना पाव धोते वक़्त :- अल्लाहुम सब्बीत कदमंथ्य अवस्सिराती यव्व तज़ील्लुलअक़दाम
- (११) जाया पाव धोते वक़्त : अल्लाहुम्भज-अल-ज़म्बी-मग़दुरव-वस्मीमशुकुरव-वतज़रनी लन तभुर.
- (१२) पुगू के जाह रे पढो ! : अल्लाहुम्भ-ज़-अलनी मिनत्तव्वाबीन वजअलनी भीनल मुततहडेरीन वज़अलनीमिन ईबादीक़स्सालेहीन-वजअलनी मिनल्वज़ीन-लाभवहुन अवयहीम वलाहुमं यदज़नुन.

કુઆન હદીસકી દુઆએ

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ أَلَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ أَلَمْ يَكُن لَّهُ
 كُفُوًا أَحَدٌ ۝

يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ۝ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝
 رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا
 لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝
 رَبَّنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝
 رَبَّنَا اتَّبَعْنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ
 وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝
 رَبَّنَا لَا تَجْعَلْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ

الدُّنْيَا رَحْمَةً ۝ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝
 رَبِّ ارْحَمْنَاهُمْ بِرَبِّي صَغِيرًا ۝
 رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ
 وَعَلَى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي
 بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۝
 اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَعَمَلًا مَتَّقِبًا ۝
 رَبِّ رَتِّبْ لِي رِزْقًا وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ ۝

اللَّهُمَّ ارِنِي أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّينِ
وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۝

اللَّهُمَّ حَبِّبِ إِلَيْنَا الْإِيْمَانَ وَزَيِّدْهُ فِي قُلُوبِنَا
وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ
وَجَعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ ۝

اللَّهُمَّ ارِن قُلُوبَنَا وَتَوَاصِينَا وَجَوَارِحَنَا بِبَيْدِكَ
لَمْ تَمْلِكْ لَنَا مِنْهَا شَيْئًا ۝ فَإِذَا فَعَلْتَ ذَلِكَ يَا فَاعِلُ
أَنْتَ وَلِيِّنَا وَاهْدِنَا إِلَى سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

اللَّهُمَّ اجْرِنَا مِنَ النَّارِ ۝
اللَّهُمَّ أَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الْأُمُورِ كُلِّهَا وَاجْرِنَا
مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْآخِرَةِ ۝
اللَّهُمَّ اعِنَا عَلَى تِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَذِكْرِهِ وَ

حُسْنِ عِبَادَتِكَ ۝
اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الْفُجُورَ حَسْ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۝
اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ ۝ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ
وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ۝ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ
الْمَسِيحِ الدَّجَالِ ۝ وَنَعُوذُ بِكَ فِي الْحَيَاةِ وَالْمَمَاتِ ۝
اللَّهُمَّ وَاقِيَةً كَوَاقِيَةَ الْوَلِيدِ ۝

اللَّهُمَّ اكْفِنَا كَلَالَكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاغْنِنَا
بِفَضْلِكَ عَنْ سُؤْرِكَ ۝

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ
مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ
مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانَ وَعَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَالْأَحْوَالُ وَلَا
 قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ۝
 رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَتُبْ
 عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝
 سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ وَسَلَامٌ
 عَلَى الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
 وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
 عَلَى آلِهِ وَآحِبَائِهِمُ وَأَتْبَاعِهِمْ أَجْمَعِينَ ۝
 بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ۝ آمِينَ ۝
 يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝

- (૧) અલ્લાહુ લાઈલાહ ઈલ્લાહુવલ હય્યુલ કય્યુમ અલીફ લામ મીમ અલ્લાહુ લાઈલાહા ઈલ્લાહુવલ હય્યુલ કય્યુમ વઅનતિલ વુજુહુ લીલ્હય્થીલ કય્યુમ.
- (૨) લાઈલાહ ઈલ્લા અન્ત સુબ્હાનક ઈન્ની કુન્તુ મિનઝઝાલીમીન.
- (૩) યા અહદસ સમદલ્લાહી લમયલીદ વલમ યુલદ વલમ યકુલ્લહુ કુકુવન અહદ.
- (૪) યા અરહમાન રાહીમીન યાઝલ જલાલિ વલઈકરામ
- (૫) રબ્બના ઝલમ્ના અનકુસના વઈલ્લમ તઝ્ફીરલના વતરહમ્ના લનકુનન્ન મીન લ ખાસેરીન
- (૬) રબ્બના વતુ લ અલયના ઈન્નક અન્તતવ્વાબુરહીમ
- (૭) રબ્બના આતિના ફીદ દુનિયા હસનતવ વફીલ આખિરત હસનતવ વફીના અઝઝબન્નાર
- (૮) રબ્બના લાતુઝીઝ કુલુબના બઅદ ઈઝ હદયતના વહબલના મિલ લદુન્નક રહમતન ઈન્નક અન્તલ વહહાબ.
- (૯) રબ્બીરહમ્હોમા કમા રબ્બયાની સગીરા.
- (૧૦) રબ્બી અવઝીઅની-અન-અશ્કુર નિઅમતિકલ્લતી-અન્અમ્ત અલય્ય વઅલા વાલીદૈય્ય વઅન અ'અમલ સાલેહન તરદાહુ-વઅદખિલ્ની બિરહમતિક ફી ઈબાદિકસાલેહીન.

- (૧૧) અલ્લાહુમ્મ ઈન્ની અસઅલુક ઈલમન નાફેઆ વઅમલમ મુતકબ્બલા વરીઝકંવ વાસેઆ વશિફાએમ મિનકુલ્લીદાઅ.
- (૧૨) અલ્લાહુમ્મ ઈન્ની અસ અલુકલ અફવ વલ આફિયત ફીદદીને વદદુન્યા વલ આખેરહ.
- (૧૩) અલ્લાહુમ્મ હબ્બીબી ઈલયનલ ઈમાની વઝયનહું ફી કુલબિના વકરિહ ઈલયનલ કુફ વલફુસુક વલઈસ્યાન વજઅલ્ના મિનરશીદીન.
- (૧૪) અલ્લાહુમ્મ ઈન્ન કુલુબના વનવાસિયના વજવારીહના બિયદીક લમ તુમલ્લીકના મિન્હા શઈઆ ફઈઝા ફઅલત ઝાલિક બિના ફંકુન અન્ત વલીય્થીના વહદીના ઈલાસવાઈસબીલ
- (૧૫) અલ્લા હુમ્મ અઝિરના મિનન્નાર
- (૧૬) અલ્લાહુમ્મ અહસીન આકીબતના ફીલ ઊમુરી કુલ્લીહા વઅજરના મિન મિઝયીદદ દુનિયા વઅઝાબિલ આખેરહ.
- (૧૭) અલ્લાહુમ્મ અઈન્ના અલાતિલાવતીલ કુર્આની વઝીકરેક વહુસ્ન ઈબાદતિક.
- (૧૮) અલ્લાહુમ્મ ઝન્નિબ્બલ ફવાહીશ માઝહર મિન્હા વમા બતન.
- (૧૯) અલ્લાહુમ્મ ઈન્ના નસ અલુકલ જન્નત વન ઊઝૂબિક મિન અઝાબી જહન્નમ વનઊઝૂબિક મિનઅઝાબિલ
- કબ્રી. વનઊઝૂબિક મિન ફિત્તતીલ મસીહીદ દજજાલ વન ઊઝૂબિક ફિલમહયા વલમમાત.
- (૨૦) અલ્લાહુમ્મ વાકિયતન કવાકીયતલ વલીદ.
- (૨૧) અલ્લાહુમ્મક-ફીના બિહલાલીક અન હરામીક-બઅગનીના બિફદલીક અમ્મન સિવાક.
- (૨૨) અલ્લાહુમ્મ ઈન્ના નસઅલુક મીન ખયરી માસઅલુક મિન્હુ નબીય્યુક મુહમ્મદુન સલ્વલ્લાહું અલયહે વસલ્લમ વનઊઝૂબિક મિન શરી મસ-તઆઝ મિન્હુ નબીય્યુક મોહમ્મદુન સલ્વલ્લાહુ અલયહે વસલ્લમ વઅન્તલ મુસતઆનુ વઅલયકલ બલાગુ વલાહવલ વલા કુવ્વત ઈલ્લા બિલ્લાહીલ અલીય્થીલ અઝીમ.
- (૨૩) રબ્બના તકબ્બલ મિન્ના ઈન્નક અન્તસસમીઊલ અલીમ વતુબ અલયના ઈન્નક અન્તત્તવ્વાબુરહીમ.
- (૨૪) સુબ્હાન રબ્બિક રબ્બીલ ઈઝઝતી અમ્મા યસેફુન વસલામુન અલલ મુરસલીન વલ્હમ્ફુલિલ્લાહી રબ્બીલ આલમીન.

(२५) वसल्लवलाहु तआला अलाभयरी पळेडी सथेदीना मोहंमदीव वअला आलेडी वअस्काबिडी व अत्ताईडी अजमईन. बिरहमत्तिक या अरहमरईडीमीन आमीन या रब्बल आलमीन.

काईदा :- बंदे की कोई दुआ बे असर नही रहेती बशर्ते के ईस्मे कोई नाजाईज बातका सवाल न किया जाये. और बात ये है के जो मागता है. वही भीलता है. और कभी मागी हुई चीज न भीलने पर कोई आनेवाली मुसीबत टल जाती है. अल्लाह तआला से दुआ मागनेका कोई पास वक्त मुकरर नही है. वो हमसे बहुत नजदीक है और उस्का दरबार हर वक्त लगा रहता है. जब याहो उस्को पुकारो.

लेकिन ईरबी हुजुर (स.अ.)ने यंद अवकात बताये है जस्मे दुआ कुबुल होना साबित है. हम उन्हे यहां मुफ्तसर नंबरवार दर्ज करते है.

- (१) पीछली रातमें
- (२) ईर्ज नमाज के आभीर में
- (३) अजान और ईकामत के दरम्यान
- (४) जुम्मा के दीन ईमाम के भीम्बर पर बेठनेसे नमाजे जुम्मा पत्म होने तक
- (५) जुम्मा के दीन असर से मगरीब तक
- (६) सिजदे में
- (७) सईरमे
- (८) अजान के बाद
- (९) रोजा ईकतार करते वक्त
- (१०) बिमारी मे
- (११) बारीश होते वक्त
- (१२) जिहाद में
- (१३) मजलूम की दुआ जबके ईस पर जुल्म किया जाये

दुआ मागने का मरनुन तरीका

सीना के सामने हाथ उठाओ और हथेलीया आस्मान की तरफ रहे. क्युंके दुआका डिब्बा आस्मान है. दोनों हाथोंमें थोडा सा झंसवा हो

(शामी)

ઔર દુઆ કે બાદ દોનોં હાથોંકો ચેહરે પર મલ લે. યે નેક ફાલ હૈ. ગોયા શાહી અતીયા મીલ ગયા ઔર દુઆકી ઈબ્તીદાઅ (શરૂઆત) અપને નફસસે કરે ફીર વાલેદૈન કો ફીર તમામ મુસલમાનોં કો શામીલ કરે.

“અવ્વલ આપીર દુરૂદ શરીફ પઢને સે દુઆ જલ્દી કુબુલ હોતી હૈ.”

દો રકાત સલાતુલ હાજત પઢકર સલાતે હાજત કી દુઆ પઢને સે ભી જલ્દી હાજત પૂરી હોતી હૈ. (શામી) દુઆ કો આહિસ્તા માગના ઔર તજરૂઅ સે યાની ગીડગીડા કર માગના જૈસાકે કુર્આન શરીફ મેં હૈ. ઈદ્-ઊ-રબ્બકુમ તદરરોઅવ વખુફયહ (કુર્આન શરીફ)

બાઝ લોગ દુઆ માગને સે માયુસ હો ગયે હૈ. કે જબ હમસે ઐસે બડે બડે ગુનાહ હો ગયે તો અબ કીસ મુંહસે દુઆ કરે, ઔર તૌબા કરે. અબતો શર્મ આતી હૈ. યે સખ્ત નાદાની હૈ. કયુંકે જબ ગુનાહ કરતે વક્ત શર્મ ન આઈ અબ તૌબા કરતે હુએ શર્મ આ રહી હૈ. યે નાદાની કાબિલે તઅજજુબ હૈ ! હાલાકે બંદેકો હાલતે તૌબા મેં દેખના અલ્લાહ તઆલા કો બહોત પસંદ હૈ.

બગેર હીસાબ મગફીરત કી તદબીર

હઝરત આઈશા (ર.દી)ને એક મરતબા સવાલ કીયા યા રસુલુલ્લાહ (સ.અ.) આપકી ઊમ્મત મેં કોઈ ઐસા ભી હૈ. જો બગેર હિસાબ કિતાબ જન્નતમેં દાખીલ હો આપ (સ.અ.)ને ફરમાયા હા જો અપને ગુનાહો કો યાદ કરકે રોતા હૈ. (હીકાયતે સહાબા ર.દી)

જરૂરી મઝલુમાત

રસુલે અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહે વસલ્લમ ઔર અહલે બૈયત :-

હમારે આકા હઝરત મુહંમદુર્રસુલુલ્લાહ (સ.અ.) ચૌદહ સો બરસ પહેલે મક્કા શરીફ મેં પયદા હુએ. આપ કુરેશ ખાનદાનસે હૈ. કુરૈશ કે બહોત સે કબીલે હૈ. ઊન્મે સે એક કબીલા બની હાશીમ ભી હૈ.

હમારે આકા હઝરત રસુલે પુદા (સ.અ.) બની હાશીમ ખાનદાન સે હૈ. આપકા મશહુર નામ મુહંમદ ઓર અહમદ (સલ્લલ્લાહુ અલયહે વસલ્લમ) હૈ. આપકે વાલિદ કા નામ અબદુલ્લાહ ઓર વાલેદહ કા નામ આમેના ઓર દાદા કા નામ અબ્દુલ મુત્તલીબ હૈ ઓર આપકા ખાનદાન હાશમી કહેલાતા હૈ. ઓર બિરાદરી કો કુરૈશ કહા જાતા હૈ.

તારીખે વિલાદત :- હઝરત મુહંમદ રસુલે પુદા (સ.અ.) ૧૨ રબીઝિલ અવ્વલ કો પયદા હુએ પીર કા દીન થા સુબહ કા સુહાના વક્ત થા ઈ.સ. કે હિસાબસે આપ ૨૨ એપ્રિલ ૫૭૧ ઈ.સ. મેં પયદા હુએ.

આપ (સ.અ.) પૈદા હુએ તબ સિજદે મેં થે ઓર સર ઊઠાતે હી ફરમાયા લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહુ વઅન્ની રસુલુલ્લાહ હર તરફ નુર ફેલ ગયા કાબા મે રખે હુએ બુત મુંહ કે બલ ગીર ગયે.

આપ (સ.અ.)ને બીબી હલીમા કા દૂધ પીયા આજ ભી બીબી હલીમા કા નામ રહમતુલ લીલ આલમીન કે (દૂધ પીનેકી) બરકત સે દુનિયામે મશહુર હૈ. બીબી હલીમા ફરમાતી હૈ. કે આપ (સ.અ.) અઠારહ માહકી ઊમર મેં બોલને લગે રિવાયત મેં આતા હૈ કે જબ આપકા દૂધ છુડાયા ગયા ઓર આપને બોલના શુરૂ કીયા તો સબસે પહેલે યે અલ્ફાઝ મુંહસે નીકલે અલ્લાહુ અકબર કબીરા વલહમ્દુ લિલ્લાહી કસીરા વસુબ્હાનલ્લાહી બુકરતવં વઅસીલા.

તારીખે વફાત :- ૧૨ રબીઝિલ અવ્વલ હીજરી સન -૧૦ પીર કે દીન ચાશત કે વક્ત ત્રેસઠ (૬૩) સાલકી ઊમર મેં વફાત હુઈ ઓર મંગલ કે દીન યા રાત કો મદીના તૈય્યબહ મેં અપને હુજરે શરીફ મેં દફન કીયે ગયે.

અઝવાજે મુતહહરાત :- (પાંક બીબીયા) હુઝુર (સ.અ.) કી ગ્યારહ બીવીયા થી ઊન્કો અઝવાજે મુતહહરાત કહતે હૈ. જો તમામ ઊમ્મત કી માયે હૈ. ઈસીલીયે ઊન્હે ઊમ્મહાતુલ મુઅમીનીન ભી કહતે હૈ. ઊન્મે સે દો આપકે સામને ઈન્તેકાલ કર ગઈ.

(૧) હઝરત ખદીજહ રદીયલ્લાહુ અન્હા.

(૨) હઝરત ઝયનબ રદીયલ્લાહુ અન્હા.

ઊન ગ્યારહ અઝવાજે મુતહહરાત કે નામ મુબારક યે હૈ :

(૧) હઝરત ખદીજહ રદીયલ્લાહુ અન્હા.

(૨) હઝરત ઝયનબ રદીયલ્લાહુ અન્હા.

- (૩) હઝરત સવદા રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૪) હઝરત આઈશા રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૫) હઝરત હફ્સા રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૬) હઝરત ઊમ્મે સલ્મા રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૭) હઝરત ઝયનબ બિન જહશ રદિયલ્લાહું અન્હા
- (૮) હઝરત ઊમ્મે હબીબહ રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૯) હઝરત ઝુવૈરીયહ રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૧૦) હઝરત મૈમુના રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૧૧) હઝરત સફીયા રદીયલ્લાહું અન્હા

બીબીયોકે અલાવહ દુસરી ત્રીન બાદીયા થી :-

- (૧) હઝરત મારીયહ રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૨) હઝરત રેહાના રદીયલ્લાહું અન્હા
- (૩) હઝરત નફીસા રદીયલ્લાહું અન્હા

ઔલાદે રસુલ સલ્લલ્લાહું અલયહે વસલ્લમ :-

- (૧) હઝરત મારીયહ રદીયલ્લાહું અન્હા સે એક ફરજંદ પૈદા હુએ જીન્કા નામ ઈબ્રાહીમ હૈ. બચપન મે હી વફાત હુઈ.
 - (૨) હઝરત ખદીજહ રદીયલ્લાહું અન્હા સે દો સાહબઝાદે ઔર ચાર સાહબઝાદીયાં કુલ છે ઔલાદ થી
 - (૧) હઝરત કાસીમ યે ભી બચપન મે વફાત પા ગયે
 - (૨) હઝરત અબ્દુલ્લાહ જો તૈયબ ઔર તાહીર કે નામસે મશહુર હૈ. યે ભી બચપન મે વફાત પા ગયે.
 - (૩) હઝરત ઝયનબ રદીયલ્લાહું અન્હા
 - (૪) હઝરત રૂકૈયા રદીયલ્લાહું અન્હા
 - (૫) હઝરત ઊમ્મેકુલસુમ રદીયલ્લાહું અન્હા
 - (૬) હઝરત ફાતિમા રદીયલ્લાહું અન્હા
- હઝરત ફાતિમા (ર.દી) કે અલાવહ ત્રીનું સાહબઝાદીયાં આપ (સ.અ.) કી ઝીંદગી મેં ઈન્તેકાલ ફરમા ગઈ ઊન્કી શાદીયા ભી હો ચૂકી થી.
- (૧) હઝરત ઝયનબ (ર.દી) કા નિકાહ અબુલઆસ બિન રબીઅ (ર.દી) કે સાથ હુઆ ઊન્સે એક લડકા ઔર એક લડકી હુઈ નસલ નચલી
 - (૨) હઝરત રૂકૈયા (ર.દી.) કા નિકાહ અબુ લહબ કે બેટે ઊત્બા કે સાથ હુઆ
 - (૩) હઝરત ઊમ્મે કુસલુમ (ર.દી) કા નિકાહ અબુ લહબ કે બેટે ઊતૈબા

કે સાથે હુઆ.

યે દોનોં નિકાહ બચપન મેં હુએ થે રૂપસતીકી નૌબત નહી આઈ થી કે તલાક હો ગઈ બાદમેં હઝરત રૂકેયા (ર.દી.) કા નિકાહ હઝરત ઊસ્માન (ર.દી.) સે હુઆ. ઊન્કે ઈન્તેકાલ કે બાદ હઝરત ઊમ્મેકુલસુમ (ર.દી.) કા નિકાહ ભી હઝરત ઊસ્માન (ર.દી.) સે હુઆ.

(૪) ચોથી સાહબઝાદી હઝરત ફાતિમા (ર.દી.) હૈ. જો ઊમ્ર મેં સબ બહેનોં સે છોટી હૈ. કહેતે હૈ. ઊન્કા નામ ફાતિમા વહી યા ઈલ્હામ સે રખ્યા ગયા.

ઈન્કા નિકાહ હઝરત અલી (ર.દી.) સે હુઆ હઝરત ફાતિમા (ર.દી.) હુઝુર (સ.અ.)કી વફાત કે વક્ત મૌજુદ થી. ઔર છે માહકે બાદ વોભી ઈન્તીકાલ ફરમા ગઈ. ઊન્કો આપ (સ.અ.)કી વફાતકા બહુત સદમા હુઆ થા.

હઝરત ફાતિમા (ર.દી.)કો હઝરત અલી (ર.દી.)સે ત્રીન બેટે ઔર ત્રીન બેટીયા થી. ઔર યે જન્નતમેં તમામ બીબીયોંકી સરદાર હોગી.

હઝરત ઈમામ હસન (ર.દી.)કો હઝરત હુસૈન (ર.દી.)સે બકસરત (જયાદા)ઔલાદ પૈદા હુઈ ઈન હઝરાતસે જો ઔલાદ પૈદા હુઈ વહી “સાદાત” (સૈયદ) કેહલાયે જાતે હૈ ઔર જો ઔલાદ હઝરતે અલી (ર.દી.)કી હઝરતે ફાતિમા (ર.દી.)કે અલાવહ હૈ ઊન્કો “અલવી” કહેતે હૈ.

ખુલફાએ રાશેદીન

હમારે નબી (સ.અ.)કો જીસ્ને ઈમાનકી હાલતમે દેખા ઊન્કો “સહાબી”કહેતે હૈ. ઊન્કે અલ્લાહકે યહાં બડે દરજે હૈ. ઊન્સે મુહબ્બત રખનાં ચાહીયે.

સહાબા (ર.દી.)કી ગીનતી કા અંદાઝ નહી કીયા જા સકતા. મગર લાખોંકી તઅદાદમે હૈ. બાઝને એક લાખ ચૌદહ હઝાર ઔર બાઝને સવા લાખકા અંદાઝા કીયા હૈ. બહરહાલ ઈન્કી સહી તઅદાદ ખુદાહી જાનતા હૈ. અલ્લાહ તઆલા તમામ સહાબા (ર.દી.)સે રાઝી હુઆ. સહાબા (ર.દી.)મે ચાર સહાબા અફઝલ હૈ.

(૧) હઝરત અબુ બક રદીયલ્લાહું અન્હ

(૨) હઝરત ઊમર રદીયલ્લાહું અન્હો

(૩) હઝરત ઊસ્માન રદીયલ્લાહું અન્હો

(૪) હઝરત અલી રદીયલ્લાહું અન્હુ
ઈન યારોકો “ખુલફાએ-રાશેદીન” કહેતે હે

ખિલાફત :- રસુલે અકરમ (સ.અ.)કી વફાત કે વક્ત ખિલાફતકા મસઅલા પેશ આયા . . કે કીસકો ખલીફા બનાયા જાયે. (યાની દીની-દુન્યવી કામોંકી ઝિમ્મેદારી કીસકે હવાલે હો)

યુનાંચે સહાબા (રદી.)કે ઈત્તેફાકસે હઝરત અબુબક (રદી.)કો ખલીફાએ અવ્વલ મુકરર ક્રિયા ગયા. ફિર હઝરત ઊમર (ર.દી) ફીર હઝરત ઊસ્માન (ર.દી) ફીર હઝરત અલી (રદી.)ઈન અસહાબકી ખિલાફતકી કુલ મુદત ૩૦ સાલ ૯ માહ ૧૪ દિન હૈ.

ખલીફાએ અવ્વલ :- હઝરત અબુબક (રદી.) ૩ સાલ ૩ માહ દસ દીન ખલીફા રહે

ખલીફાએ દૌમ :- હઝરત ઊમર (રદી.) ૧૦ સાલ ૬ માહ ચાર દીન ખલીફા રહે.

ખલીફાએ સૌમ :- હઝરત ઊસ્માન (રદી.) ૧૨ સાલ ખલીફા રહે.

ખલીફાએ ચહાઝમ:-હઝરત અલી (રદી.) પાંચ સાલ તક ખલીફા રહે.

દસ જન્મતી

સહાબા (રદી.)કી જમાઅતમં સે દસ સહાબા (રદી.)કો અલ્લાહ તઆલાને દુનિયાહીમે જન્મતકી ખુશ ખબરી સુનાઈ ઊન્કે નામ યે હૈ.

(૧) હઝરત અબુબક રદીયલ્લાહું અન્હ. (૨)હઝરત ઊમર રદીયલ્લાહું અન્હ. (૩) હઝરત ઊસ્માન રદીયલ્લાહું અન્હ. (૪) હઝરત અલી રદીયલ્લાહું અન્હ. (૫) હઝરત ઝુબૈર બિન અવામ (રદી.) (૬) હઝરત તલ્હા રદીયલ્લાહું અન્હ. (૭) હઝરત અબ્દુરહમાનબિન ઔફ (રદી)(૮) હઝરત સઅદ બિન અલીવક્કાસ (રદી.) (૯) હઝરત સઈદબિન જેદ રદીયલ્લાહું અન્હ. (૧૦) હઝરત ઊબૈદહ બિન જરરાહ રદીયલ્લાહું અન્હે ઊન્કો “અશરએ મુબશ્શરહ”કહેતે હૈ. (હયાતે નબ્વીયહ)

ચાર ફરિશ્તે

ફરિશ્તે પુદાતઆલાકી એક મખ્લુક હે. જો નુરુ સે બને હે. વો હમારી નજરોસે ગાઈબ હે. પુદાતઆલાકી ના ફરમાની નહી કર તે. જન કામોં પર અલ્લાહ તઆલાને ઊન્કો મુકરર ક્રિયા હે. ઈન્દીમેં લગે રહતે હે ફરિશ્તોંકી ગીનતી પુદાતઆલા કે સિવા કોઈ નહી જાનતા હા ઈત્ના માલુમ હે કે ફરિશ્તે બહોત હે. ઓર ઊન્મે ચાર ફરિશ્તે મુકરરબ ઓર મશહુર હે.

(૧) હઝરત જિબ્રઈલ અલૈહીસ્સલામ જો પુદા તઆલાકી ક્રિતાબે પુદાકે અહકામ ઓર પયગામ પયગંબરોકે પાસ લાતે થે.

(૨) હઝરત ઈસરાફીલ અલૈહીસ્સલામ. જો ક્રિયામતમેં સુર ફુકંગે.

(૩) હઝરત મિકાઈલ અલૈહીસ્સલામ જો બારિશ બરસાને ઓર બંદોકો રોઝી પહોંચાને કે કામ પર મુકરર હે.

(૪) હઝરત ઈઝરાઈલ અલૈહીસ્સલામ જો મખ્લુકકી જાન નિકાલને પર મુકરર હે.

ચાર પયગમ્બર

દુનિયામેં બહોતસે પયગમ્બર અલ્લાહતઆલાકે બંદોકો સીધી રાહ બતાને આયે ઓર વો સબ ગુનાહોંસે પાક હે ઊન્કી પુરી ગીનતી તો પુદાતઆલાકી માલુમ હે. ઊન્મેસે ચાર પયગંમ્બર મશહુર હે. જન પર આસ્માની બડી ચાર ક્રિતાબેં નાઝીલ હુઈ ઊન્કે નામ યે હે.

(૧) હઝરત મુસા અલૈહીસ્સલામ. આપ પર તૌરેત નાઝીલ હુઈ.

(૨) હઝરત દાઉદ અલૈહીસ્સલામ. આપ પર ઝબુર નાઝીલ હુઈ.

(૩) હઝરત ઈસા અલૈહીસ્સલામ. આપ પર ઈન્જીલ નાઝીલ હુઈ

(૪) હઝરત મુહમ્મદ મુસ્તુફા (સ.અ.) આપ પર કુઆન શરીફ નાઝીલ હુઆ.

આપ (સ.અ.)તમામ પયગંમ્બરોમે અફઝલ હે પુદાતઆલાકે બાદ આપ (સ.અ.)કા મરતબા મખ્લુકમેં સબસે બઢા હુઆ હે.

ચાર ઈમામ

અલ્લાહ તઆલાને રસુલે અકરમ (સ.અ.)કે દીનકી સબ બાતેં કુર્આન શરીફ ઓર હદીસમેં બતાદી અબ કોઈ નઈ બાત દીનમેં નિકાલના દુરસ્ત નહી. એસી નઈ બાતકો “બિદઅત” કહેતે હૈ. બિદઅત કરના બહોત બડા ગુનાહ હૈ.

અલબત્તા બાઝ બારીક બાતેં જો હર એક મુસલમાન કી સમજમેં નહી આ સકતી બડે પક્કે ઓર બુરૂગ (અગલે ઝમાનેકે) આલીમોને ઈલ્મકે ઝરીયે સે કુર્આન શરીફ ઓર હદીસસે સમજકર દુસરોકો બતલાદી એસે લોગો કો “મુજતહીદ” કહેતે હૈ. મુજતહીદ બહોત હુએ. ઊન્મેસે ચાર મશહુર હૈ ઊન્કે નામ યે હૈ.

(૧) હઝરત ઈમામે આઝમ અબુ હનીફા રહમતુલ્લાહી અલૈહ

(૨) હઝરત ઈમામ શાફઈ રહમતુલ્લાહી અલૈહ

(૩) હઝરત ઈમામ માલીક રહમતુલ્લાહી અલૈહ

(૪) હઝરત ઈમામ અહમદ બિન હમ્બલ રહમતુલ્લાહી અલૈહ

ઈન ચારોકો “અઈમ્મએ-અરબઆ”કહેતે હૈ ઈન ચારોમેં સે જીસ્કી પેરવી હોગી ઊન્કી તરફ નિસ્બત હોગી.

હિન્દુસ્તાનમેં ઈમામ આઝમ અબુ હનીફહ (રહ.)કી પેરવી કરનેવાલે ઝિયાદા હૈ વો હન્ફી કહેલાતે હૈ. (તાલીમુદીન)

ચાર શેખ

ઈસ તરહ નફ્સ કો સવારને કે લીએ જો તરીકે કુર્આન શરીફ કે મુતાબિક અલ્લાહકે વલી લોગોને ઈલ્મ કી રોશનીમે સમજ કર બતાયે હૈ એસે લોગ શેખ કહેલાતે હૈ. શેખ બહોત હૈ મગર ઈન્મે ચાર મશહુર હૈ.

(૧) ખ્વાઝા મુઈનુદ્દીન ચિશ્તી અજમેરી (રહ.)

(૨) ગૌસુલ આઝમ શેખ અબ્દુલ કાદીર જીલાની (રહ.)

(૩) શેખ શહાબુદ્દીન સોહરવરદી (રહ.)

(૪) ખ્વાજા બહાઉદ્દીન નકશબંદી (રહ.)

સબસે પહેલે ઈમાન લાનેવાલે

- (૧) મદોમેં હઝરત અબુબક સિદ્દીક (રદી.)
 - (૨) ઔરતોમેં હઝરત ખદીજા રદીયલ્લાહું અન્હા
 - (૩) બચ્ચોં મે હઝરત અલી રદીયલ્લાહું અન્હ.
 - (૪) બાન્દીયોં મે હઝરત ઊમ્મે અયમન (રદી.)
 - (૫) ગુલામોં મે હઝરત ઝૈદ રદીયલ્લાહું અન્હ.
- યે પાંચ બુર્જુગ સબસે પહેલે મુસલમાન હુએ.

મશહુર દીની કિતાબેં

- હદીસ શરીફ મેં :-** બુખારી શરીફ - મુસ્લિમ શરીફ
તિર્મીઝી શરીફ - મિશકાત શરીફ
અબુ દાવુદ શરીફ - ઈબ્ને માજા શરીફ
- તફસીર મેં :-** જલાલૈન શરીફ - બયાનુલ કુર્આન
તફસીર ઈબ્ને કસીર વગેરહ
- ફિકહ મેં :-** હિદાયા - શામી - દુરૈ મુખ્તાર
(મસાઈલ) આલમગીરી વગેરહ
- તસબુક મેં :-** કિમયાએ સઆદત - મસ્નવી શરીફ
(મૌલાના રૂમ ૨. અ.) વગેરહ

ઈસ્લામી મહીનોકે અહમ દીન

(૧) **મોહર્રમ :-** યે કમરી સાલ કા પહેલા મહીના હૈ. યે મહીના ઈસ્લામસે પહેલે ઔર ઈસ્લામકે બાદબી હુર્મત ઔર અઝમત વાલા મહીના સમઝા જાતા થા ઔર બહોતસે વાકેઆત ૧૦ મોહર્રમ કો પેશ આયે. જન્મેસે એક વાકેઆ હઝરત મુસા (અ.લ.) ઔર બની ઈસરાઈલકા ફીરઔનકે જૂલ્મસે નજાત પાના. ઔર ફીરઔનકા ગર્ક હોના.

ઈસી યાદમે મહીના કે યહુદ ૧૦ મોહર્રમ કો રોઝા રખતે થે. ઔર

जब रसुले पुदा (स.अ.) मदीनह तशरीफ़ लाये तो आप (स.अ.)ने इरमाया के हमारा तमद्लुक हज़रते मुसा (अ.व.)से धन पहुंटीयोसे जयादा है. ईसलिये हमको ईन्से जियादा पुशी मनानेका और शुक्र अदा करनेका हक है. आप (स.अ.)ने पुदबी रोज़ा रब्बा और मुसलमानोंकोबी रोज़ा रपनेका हुकम दीया.

रमज़ानके रोज़े इर्ज़ा होनेसे पहले यही रोज़ा मुसलमानों पर इर्ज़ा था.

अेक दूसरा निहायत गमअंगेज़ वाकेआ ज़स्को याद करके हर मुसलमानका हील गमगीन होता है. के हुरुर (स.व.)के नवासे हज़रत ईमाम हुसैन (रदी.)की शहादत है. जो पास आशुरेके दिन पेश आई. वो दिन यज़ीदके मुकाबले में लडते हुअे करबलाके मयदानमें १० मोहर्म्म डीजरी सन ६० मुताबीक २२ ओक्टोबर ६७५ ई.स. को शहीद हुअे. और उनके पानदानके और बी बहोतसे जवाँ मर्दाने जामे शहादत नोश इरमाया

(२) रबीउिल अव्वल :- ये कमरी सालका तीसरा महीना है. ईस्की १२ तारीख (मशहुर रिवायतके मुताबिक)को पयगम्बरे ईस्लाम (स.अ.)की पयदाईश हुई. दुनियाके अक्सर मुल्कोमे ईस दिन पुशी मनाई जाती है. बडे बडे जस्से होते है. जन्मे हुरुर (स.अ.)की हयाते तैय्यबल (मुबारक खंडगी)और आप (स.अ.)की पयगाम और तालीमात पर रोशनी डाली जाती है. उस्को भीवाह शरीफ़ और मौलुद शरीफ़ के नामसे याद करते है.

आप (स.अ.)के हावात चाहे कीसी कीसमके हो जिन्का बयान करना और सुनाना बरकत और सवाब का जरीया है. लेकीन आजकल उस्मे बहोतसे पुराफ़ात (बिकार)की बातें भीला दी गई है. ईसलिये ईस्का करना नाजइज़ है.

(३) रज्जः :- रज्जब कमरी सालका सातवा महीना है. ईस्को आम लोग मरीयम रोज़ाका याद कहेते है. ईस्की संतावीसकी तारीख मे रोज़ा रपने को अख़्त समजते है लेकीन शरीअतमे ईस्की कोई असल नही. ईस महीनेमे तबारककी रोटीया पकती है. येबी मनघडत बात है.

२७ रज्जबबी मुसलमानोंमेंमुबारक समज्ज जाती है. ये मशहुर है के ईस रोज़ हुरुर (स.अ.)को मेअराज हुई थी. ईसलिये ईस रातमें मेअराज के बयान को पास करना.बले २७ मी रातको लाज़ीम करार देना बिदअत है.

माहे रजब अेक मुबारक महीना है. जस्मे हुजुर (स.व.) ये दुआ मांगते थे. अय अल्लाह बरकत दे हमारे लीये रजब और शाबानमें और पढोया हमको रमजान तक (अयहकी)

ईस्लामी तहेवार

- | | | |
|-----------------|----|--|
| (१) नया साल | :- | मुईरम महीने की पहेली तारीफ |
| (२) यवमे आशुरह | :- | मईरम महीने की दसवी तारीफ |
| (३) मीलाहुन्नबी | :- | रबीउल अव्वलकी बारवी तारीफ |
| (४) शबे मेअराज | :- | रजब महीनेकी सताईस्वी तारीफ |
| (५) शबे बरात | :- | शाबान महीनेकी पंदरवी रात |
| (६) रोजह | :- | रमजान शरीफका पूरा महीना |
| (७) ईदुल फ़ित्र | :- | शव्वाल महीने की पहेली तारीफ |
| (८) यवमे अरफ़ह | :- | जिलहज महीनेकी नवमी तारीफ |
| (९) ईदुल अजहा | :- | जिलहज महीनेकी दसवी तारीफ |
| (१०) हजज | :- | मक्का शरीफ में जिलहज महीनेकी ८ से १२ तारीफ |

याद रणनेकी बातें

- (१) **वही कीसको कहते हैं :-** अल्लाहतआलाके अहकाम और पयगाम जो उजरत जिब्रईल (अ.व.)के जरियेसे नबी या रसुल को पढोयाये गये हो उसको वही कहते हैं.
- (२) **मुअजिजह कीसको कहते हैं :-** पयगम्बरकी सख्याई बताने के लीये अल्लाह तआलाने उनके हाथों ऐसी नई नई मुशकिल बाते जाहीर की है. जस्को और लोग नहीं कर सकते ऐसी बातोंको मुअजिजह कहते हैं.
- (३) **मेअराज :-** हमारे पयगम्बर (स.अ.)को अल्लाह तआलाने जागतेमे जिसमके साथ मक्कासे अयतुल मुकददस और वहांसे सांतो आसमानो पर और वहांसे जहां तक अल्लाहकी मंजूर था पढोयाया और फिर मक्का शरीफमें पढोया दीया उसको मेअराज कहते है.

- (४) **इरिशते** :- अल्लाह तआला ने कुछ मज्लुक ऐसी पैदा इरमाई है जो नुरसे बनी है ओन्को हमारी निगाहोंसे पोशीदा किया है ओन्का मर्द होना औरत होना नहीं बतायागया. बहोतसे काम ओन्के सुपुर्द किये है. वो कभी पुदाके हुकम के खिलाफ नहीं करते ओन्हे इरिशते कहते है.
- (५) **मुन्करनकीर** :- जब आदमी मरता है अगर दफन किया जाये तो दफन के बाद और दफन न किया जाये तो जिस हाल में वो ओस्के पास हो इरिशते आते है और सवाल करते है के "तेरा परवरदिगार कोन है ?" इजरत मोहंमद (स.अ.) के बारेमें पुछते है ये कोन है? तेरा दीन क्या है ? ये सवाल करने वाले इरिशतों को मुन्करनकीर कहते है.
- (६) **किरामन कातिबीन** :- हर ईन्सान के साथ दो इरिशते रहते है. ओक नेक काम लीभता है दुसरा बुरे काम लीभता है. ओन्को किरामन कातिबीन कहते है.
- (७) **मुडाज्जर** :- जो पुदा के लीये अपना वतन छोडकर यला जाये ओस्को मुडाज्जर कहते है.
- (८) **अन्सार** :- मुडाज्जरो की मदद करने वाले और पनाह देने वालों को अन्सार कहते है.
- (९) **मुअमीन** :- क्लमअे तौहीदको दीलसे सय्या जानकर जभान से ओस्का ईकार करने वाला और ईमानी अमल करनेवालोंको मुअमीन कहते है.
- (१०) **काफीर** :- पुदा और रसुल (स.अ.) को नमानने वाला यानी ईन्कार करने वाला काफीर कहेलाता है.
- (११) **मुशरीक** :- पुदा के साथ शरीक करने वालो को मुशरीक कहते है.
- (१२) **वली** :- मुसलमान जब पुब ईबादत करता है और गुनाहोंसे बयता है और दुनिया से मुहब्त नहीं रभता और पयगम्बर (स.अ.) की इतरतह पुब ईताअत करता है तो वो अल्लाह तआला का दोस्त और प्यारा बन जाता है जैसे शम्स को वली कहते है.
- (१३) **करामत** :- ईस शम्स से यानी वली से कभी ऐसी बातें आलीर होती हैं जो और लोगों से नहीं होती ऐसी बातों को करामत कहते है.

- (१४) **जुन** :- अल्लाहतआवाने कुछ मज्बुक आग से पैदा करके हमारी नजरों से पोशीदा किया है जिन्को जून कहते है.
- (१५) **घल्लिस** :- यानी शयतान जो हजरत आदम (अ.व.) को सिजदा न करने की वजह से मरदुद हुआ उसकी ली औवाह होती है इन सबमें जियादा मशहुर शरीर (नावायक) शयतान है.
- (१६) **जेहरी नमाज** :- जून नमाजों में आवाजसे किराअत की जाती है. जिन्हे जेहरी नमाज कहते है.
- (१७) **सिरी नमाज** :- जून नमाजों मेंआहिस्ता किराअत किजाये जिन्हे सिरी नमाज कहते है.- जैसे जोहर-असर-की नमाजे.
- (१८) **कुर्ग** :- वो हुकम है जो कुर्आन शरीफ की आयतसे बिवा ईप्तीवाइ साबित हो उसका ईन्कार करने वाला काफ़ीर है.
- (१९) **वाजुज** :- वो हुकम है जो कुरानशरीफ या हदीस से साबित हो उसका ईन्कार करने वाला काफ़ीर नहि होता-हा-बग़ैर जिजर छोडनेवाला फ़ासिक और अजाबका मुस्तहीक होता है.
- (२०) **सुज्जत** :- ईस काम को कहतेहै ज्जस्की रसुले अकरम (स.अ.) ने और सहाबा (र.दी.) ने किया हो या करनेका हुकम दीया हो.
- (२१) **नकील** :- इन कामों को कहतेहै ज्जस्की फ़जीवत शरीअत में साबित हो जिन्के करने मे सवाब हो और छोडनेमे गुनाह नही. जिसे मुस्तहब और मन्दुबली कहते है.
- (२२) **नमाज के ग़ुरी हिस्से और घण्डे नाम :-**

- (१) रफ़अे यदैन. (दोनो हाथो का उठाना)
- (२) कियाम (पडा होना)
- (३) रूकुअ (सुकना)
- (४) कवमा (रूकु से पडा होना)
- (५) सिजदा (जमीन पर येहरा रभना)
- (६) जल्सा (दोनो सिजदों के बीय में बेठना)
- (७) काअेदा (दोनो सिजदों के बाद अतदिय्यात पढने के लीये बेठना)

सहाबी :- जस शप्सने हुजुर (स.अ.) की ईमानकी डालतमें जियारत की हो या आपकी पिटमत में डजिर हुये हो उसको सहाबी कहते है.

તાબેઈ :- જીસ શખ્સને ઈમાન કી હાલત મેંકીસી સહાબીકી ઝિયારત કી હો ઊસ્કો તાબેઈ કહેતે હૈ.

હિજરત :- હુઝુર (સ.અ.) મક્કા શરીફ છોડકર મદીના શરીફ તશરીફ લે ગયે ઊસ્કો હિજરત કહેતે હૈ.

હિજરીસન :- હુઝુર (સ.અ.) કી હિજરત સે જો તારીખ શુરૂ હુઈ હૈ ઉસ્કો સને હિજરી કહેતે હૈ.

હમ કયા કરેગેં ?

- (૧) હમ અલ્લાહ કો એક માનેગે ઈસલીયે કે અલ્લાહ એક હૈ ઔર અકેલા હૈ.
- (૨) હમ રસુલ (સ.અ.) કો અલ્લાહ કા રસુલ માનેગે ઈસલીયે કે અલ્લાહ તઆલા ને હમેં હુકમ દીયા હૈ.
- (૩) હમ હુઝુર (સ.અ.) કો આખરી નબી માનેગે ઈસલીયે કે અબ ક્રિયામત તક કોઈ નયા નબી આનેવાલા નહિ.
- (૪) હમ કુર્આનશરીફ પર અમલ કરેગેં ઈસલીયે કે યે અલ્લાહ તઆલા કી કીતાબ હૈ.
- (૫) હમ કુર્આન શરીફ હમેશા પઢેગે. ઈસ લીયેકેઈસ્કો પઢને સે બહોત સવાબ મીલતા હૈ.
- (૬) હમ કુર્આન શરીફકો પકડનેસે પહેલે વુઝુ કરેગે ઈસ લીયે કે અલ્લાહકા હુકમ હૈ.
- (૭) હમ પાચો વકતોં કી નમાઝોં પઢેગેં ઈસલીયે કે નમાઝ બુરાઈયોંસે બચાતી હૈ. અગર નમાઝ કે વકત કોઈ દુનિયા કા કામ પેશ આયે તબ બી ઊસ્કો છોડકર પહેલે નમાઝ પઢ લીયા કરેગેં.
- (૮) હમ રમજાન શરીફમે રોઝે રખેગેં ઈસલીયે કે જો બચ્ચે રોઝા રખતે હૈ ઊન્કો સવાબ મીલતાહૈ.
- (૯) હમ ઝકાત ઔર ખૈરાત દેકર ગરીબોંકી મદદ કરેગેં ઈસલીયે કે ઈસસે અલ્લાહ તઆલા બહોત ખુશ હોતાહૈ.
- (૧૦) હમ મક્કા શરીફ જાકર હજજ કરેગેં. ઈસલીયે કે હજજ કરને સે સારે ગુનાહ મુઆફ હો જાતે હૈ.
- (૧૧) હર અચ્છે કામકો શુરૂ કરને સે પહેલે બિસ્મિલ્લા હીરહમા નિરહીમ

पढ़ेंगे इसलीये इससे बरकत होती है.

- (१२) हम क़िब्ले की तरफ़ पाव नही डेलायेगें और न ठिस्की तरफ़ थुकेगें और न ठिस्की तरफ़ मुंड या पीठ करके इस्तिन्जा करेगें इसलीये के बेअदबी होती है.
- (१३) हम लुकों को भाना, नंगोंको कपडा और प्यासो को पानी पीलायेगें, लायारों की मदद करेगें इसलीये के इससे अल्लाह तआला पुश होता है.
- (१४) हम अपने मा-बाप-बडे-बुढों की इज्जत करेगें इसलीये के ठिन्की नाराज करने से अल्लाह नाराज होता है.
- (१५) हम बीमारों और कमजोरोंकी बिदमत करेगें इसलीये के बिदमतसे पुदा मीलता है.
- (१६) हम कीसीसे ज़घडा नही करेगें इसलीयेके ज़घडा शरीफ़ोंका काम नही.
- (१७) हम कीसीकी गीबत नही करेगें इसलीये के कीसीको इस्के पीछे बुरा कहेना बडा गुनाह है.
- (१८) हम कीसीकी तअना (भेड़ेंशा) नही देगें इसलीये के ठिससे दुश्मनी बढती है.
- (१९) हम ज़ुठ और गावी नही बोलेगें इसलीये के इससे अप्लाक बीगडते है.
- (२०) हम अपने पडोसीयों के साथ बराब बरतावनही करेगें. इसलीये के अल्लाह तआलाने हमें मना किया है.
- (२१) हम अपने बदन और कपडों को पाक साफ़ रभेगें इसलीये के अल्लाह तआलाको सफ़ाई पसंद है और लोग भी औसे लडकों से मुहब्बत करते है.
- (२२) हम मैले - गंदे नही रडेगें इसलीयेके इससे बिमारी पैदा होती है और लोग भी बिन करते है.
- (२३) हम सुब्ह ठिठने के बाद और रातकी सोनेसे पडेले मिस्वाक से दांत साफ़ करेगें इसलीये के इससे मुंड में बदन्यु नही रहती.
- (२४) हम रोज़ाना नहाया करेगें इसलीयेके इससे तंदुरस्ती बढती है.
- (२५) हम पाना भानेसे पडेले दोनो हाथ धोलीया करेगें इसलीये के तमाम अंबिया (अ.ल.) की सुन्नत है. हाथ का मेल पेटमें न जाये.
- (२६) हम मदसा -स्कूल में हमेशा पाबंदी से जायेगे इसलीये के वो इल्म हासिल करने का ज़रीया है.

- (૨૭) હમ ઊસ્તાદ કા અદબ કરેગેં ઓર ઊન્કી નસીહતોં પર અમલ કરેગે ઈસલીયે કે બેઅદબ બેનસીબ હોતા હૈ.
- (૨૮) હમ મદસે મેં જાકર ખુબ મહેનત સે ઈલ્મ હાસિલ કરેગેં ઈસલીયે કે બગૈર મહેનતકે ઈલ્મ હાસિલ નહી હોતા.
- (૨૯) હમ મદસે મેં બચ્ચોં કે સાથ મુહબ્બત સે પેશ આયેગે ઈસલીયે કે ઈસ્સે અલ્લાહ તઆલા ઓર ઊસ્કે બંદે રાઝી હોતે હૈ.
- (૩૦) હમ કો રાસ્તે મેં કોઈ મીલે તો અસ્સલામો અલયકુમ- કહેગેં ઓર અગર કોઈ અસ્સલામો અલયકુમ કહેગા તો હમ વ અલૈકુમુસ્સલામ કહેગેં.

બુર્ગુગાને દીનકી બાતે

(૧) ઈલ્મકી ચાટ :- ઈમામ અબુ યુસુફ (રહ.) અપની તાલીબે ઈલ્મી યાની પઢનેકે ઝમાનેકા કિસ્સા સુનાને લગે કે હમ બહોતસે લડકે પઢને જાયા કરતે થે. લેકીન ઈલ્મ ઈન્હીકો મીલા જીન્કે દીલ દહીં ખાકર પક ગયે થે. સુબ્હ હોતેહી બાસી રોટી પર દહીં લગા કર નાશતા કરકે ફોરન પઢને કે લીયે ઘરસે નિકલ જાતે. લેકીન હમારે ચટોરે સાથી મજેદાર ખાનેકી ચાટમેં રૂકે રહેતે ઓર ઊસ વક્ત મદસામે પહોંચતે જબ હમ બહોતસા હિસ્સા પઢ લેતે થે. ઈસી તરહ યે ચટોરે સાથી ઈલ્મકી ચાટસે મહેરૂમ રહે.

ફાઈદા :- ઈસસે માલુમ હુઆકે ઈલ્મકો હાસિલ કરનેકે લીયે કીત્ની ફીક ઓર પાબંદીસે મદસેમેં પહોંચનેકી ઝરૂરત હૈ. જો બચ્ચે ઈસ બાતકા ખ્યાલ રખતે હૈ. અલ્લાહ તઆલા ઊન્હે ઈલ્મસે નવાઝતે હૈ. ઓર જો બચ્ચે લાપરવાહી ઓર સુસ્તીસે રહેતે હૈ વો ઈલ્મસે મહેરૂમ રહેતે હૈ. ઓર ઈલ્મસે મહેરૂમ રહેના ગોયા દીન-દુનિયાકી ભલાઈયો ઓર બરકતોસેં મહેરૂમ રહના હૈ. (અલ્લાહ કી પનાહ)

(૨) સુલેહ :- એક જગા દો દુરવેશ લડ રહે થે એકને કહા અગર એક ત્ની ગાલી દી તો એક કે બદલે હઝાર ગાલીયાં દુંગા.

ઈત્તીફાકસે મૌલાના રૂમ (રહ.)કા ઊઘરસે ગુઝર હુઆ આપને દોનોકો લડતે હુએ દેખકર ફરમાયા લડના ઝઘડના અચ્છા નહી. જોકુદ

कहेना है मुजसे केडलो अगर हज़ार गावीया दोगे तोजवाभमें अेकली न सुनोगे वो दोनों मौलाना की बात सुनकर शरमींदा हुअे और आपसमें सुलह करली.

झाईदा :- अक्वव तो अपनी जभानसे गावी बोलना बडोत बुरा है. अैसा आदमी जो गावीया बोलता है. अल्लाह तआलाकी निगाहसे गीर जाता है. और जो आदमी अल्लाह तआला की निगाहसे गीर जाअे उसको कोई चीज और भरतबा (डीथ्री) याहे कीत्ना ही बडा क्युं न हो. काम्याब नही कर सकता.

अगर दूसरा कोई बढकलामी करे तो उससे ठिक्के नहिए. बढे ठिससे दुर हो जाये और सभ्र करनेसे पुढाकी पुरी मढढ नसीब होती है. और सवाब मीलता है.

(३) शुक्र :- अेक बुर्जुग के मुतअल्लीक लीभा है के जब रातमें आंभ पुलती तो येहरे पर हाथ डेरते और कल्मअे शहादत पढते कीसीने पुछा अैसा क्युं करते हैं ? डेरमाया के कलेमा तो ये मालुम करनेके लीअे पढता हुं के दीलमे ईमान बाकी हे या नही. क्युंके मेरे आमाव अैसे नही जैसे अेक मुअमीन के होने याहीये.

और येहरे पर हाथ ईसलीये डेरता हुं ताके मालुम हो जाये के मेरी बढआमावी की नहुसतसे बढलतो नही दीया गया. (जैसा के अगले जमानेमें गुनाहोंकी वजहसे ईन्सानकी शकलको बढलकर जानवरोंकी शकल बनादी जाती थी)

जब ईमानको शकलको सलामत पाता हुं तो अल्लाहका शुक्र अदा करता हुं के अल्लाह तआलाने अपने इजलसे मेरे गुनाहों पर पर्दा डाल रप्भा है. और मेरी बढअमलीकी मुजको कोई सजा नहीं दी गई.

झाईदा :- बाज गुनाह अैसे है के उसको हमेशा करनेसे और उसकी आदत बना लेने से मरते वक्त ईमान सल्ब हो जाता है. यानी ईमानसे महेडूम कर दीया जाता है. जैसे के शराब पीना-गाना बजाना-गीबत करना-युगली करना-मा-बापकी नाडरमानी करना-वगेरह अैसे गुनाह हे. के उससे मरते वक्त ईमानसे महेडूम कर दीया जाता है.

अलबत्ता हुज़ुर (स.अ.)की दुआकी बरकतसे अब गुनेहगारोंकी सुरतें नही बढली जायेगी. लेकीन गुनाहोंका वबाव ईन्सानको दुसरे तरीको से बरबाद करता है. ईसलीये गुनाहोंसे बये और नेकी करता रहे. अल्लाह तआला ईस्की बरकतसे ईमान पर पातेमा डेरमायेंगे.

મદદ કરને કા સવાબ

એક કિસાન એક મરતબા હઝરત ખ્વાજા મુઈનુદ્દીન ચીશ્તી અજમેરી (ર.અ.) કે પાસ આયા ઓર કહા અય હઝરત ! એક સરકારી આદમી મેરે પાસ આકર મુઝે પરેશાન કરતા હૈ. ઓર મેરી ઝમીન પર કબ્જા કરનાયાહતા હૈ. લિહાજા આપ મેરે સાથ દિલ્હી ચલ કર બાદશાહ કે પાસ શિકારીશ કરકે મેરી મદદ ફરમાદૈ.

હઝરત ખ્વાજા સાહબ (ર.અ.) કિસાન કી મદદ કરને કે લીએ દિલ્હી રવાના હુએ. જબ દિલ્હી કે કરીબ પહુંચે તો આપકે ખલીફા ઓર જાનશીન હઝરત કુત્બુદ્દીન બખત્યાર કાકી (ર. અ.) આપકે ઈસ્તીકબાલ કે લીએ બાહર તશરીફ લે આયે. ઓર હઝરતસે દિલ્હી આને કી વજહ દરયાફત કી.

હઝરત ખ્વાજા અજમેરી (ર.અ.)ને ઈસ કિસાનકી તરફ ઈશારા ફરમાકર ફરમાયા ઈન્કી મદદકે લીએ આયા હું આપકે ખલીફાને અર્જ કિયા કે આપને તકલીફ કયું ઊંકાઈ.

અગર આપ ખત તહરીર ફરમા દેતે યા મેરે પાસ ઈન્કો ભેજ દેતે તો ભી કામ હો જાતા.

હઝરત ખ્વાજા અજમેરી (ર.અ.)ને ફરમાયા યે તો ઠીક હૈ. કે કામ તો હો જાતા લેકિન ઈનકે સાથ ચલનેમૈ જો અજરો સવાબ મીલને વાલા હૈ વો કેસે મીલતા ?

ફીર આપને એક હદીસ શરીફ બયાન ફરમાઈ કે અલ્લાહ તઆલા અપને બંદેકી મદદ મૈ રહેતા હૈ જબ તક બંદા અપને કિસી ભાઈ કી મદદ કરતા હૈ. (તાલીમી ચેહલ હદીસ)

માલુમ હુઆકે હમૈબી હમેશા હમારે ભાઈઓ કી મદદ કરની ચહીયે. જસસે હમ અલ્લાહ કી મદદકે હક્કદાર બન સકૈ.

આમ મહાલુમાત

(૧) ઈસ્લામી મહીનો કે નામ :- (૧) મોહર્રમ (૨) સફર (૩) રબીઊલ અવ્વલ (૪) રબીઊલ આખર (૫) જમાદીલ અવ્વલ (૬) જમાદીલ

આખર (૭) રજબ (૮) શાઅબાન (૯) રમઝાન (૧૦) શવ્વાલ (૧૧) જીલ્કાદહ (૧૨) જીલ્હજા.

યે નામ અરબી હૈ.

(૨)યે ગીનતી ઔરતોને કી હૈ :- (૧) મોહર્રમ (૨) તેઝી (૩) બારાવફાત (૪) મિરાંજી (૫) શાહમદાર (૬) ખ્વાજાજી (૭) રજબ (૮) શુબરાત (૯) રમઝાન (૧૦) ઈદ (૧૧) ખાલી (૧૨) બકરા ઈદ. યે નામ ઔરતોને રખે હૈ.

(૩) હીંદી મહીનોં કે નામ :- (૧) કાતક (૨) અધન (૩) પોષ (૪) માહ (૫) ફાગન (૬) ચૈત (૭) બૈસાખ (૮) જૈઠ (૯) અષાઠ (૧૦) સાવન (૧૧) ભાદોં (૧૨) કુવાર

(૪)અંગ્રેજી મહીનોં કે નામ :- (૧) જનવરી (૨) ફરવરી (૩) માર્ચ (૪) અપ્રેલ (૫) મઈ (૬) જૂન (૭) જુલાઈ (૮) અગસ્ત (૯) સીતમ્બર (૧૦) અકતુબર (૧૧) નવમ્બર (૧૨) દિસમ્બર

(૫) દીનોં કે નામ :- (૧) સનીચર (૨) ઈતવાર (૩) પીર (૪) મંગલ (૫) બુધ (૬) જુમેરાત (૭) જુઆ. યે ઊર્દૂ નામ હૈ.

(૬) ફારસી નામ :- (૧) શંમ્બહ (૨) યકશંમ્બહ (૩) દો શંમ્બહ (૪) સેહશંમ્બહ (૫) ચહાર શંમ્બહ (૬) પંજ શંમ્બહ (૭) આદીનહ.

(૭) અરબી નામ :- (૧) યવમુલ અહદ (૨) યવમુલ ઈસનૈન (૩) યવમુસ્સુલસાઅ (૪) યવમુલ અરબઅ (૫) યવમુલખમીસ (૬) યવમુલ જુમ્બહ (૭) યવમુસ્સબ્ત.

(૮) સિમ્તો કે નામ (દિશા) :- (૧) મશરીક (૨) મગરીબ (૩) શિમાલ (૪) જુનુબ. યે અરબી નામ હૈ.

(૯) હીંદી નામ :- (૧) પુરબ (૨) પચ્છીમ (૩) દખ્ખન (૪) ઉત્તર

(૧૦) અંગ્રેજી નામ :- (૧) ઈસ્ટ (૨) વેસ્ટ (૩) નોર્થ (૪) સાઉથ

ખેલ કૂદ

(૧) મુકીદ ખેલ :- જન ખેલોંસે કુછ દીની યા દુન્યવી ફાઈદે હાસિલ હો સકતે હૈ વો જાઈજ હૈ. બશર્તે કે ઊન્કો ફાઈદા હાસિલ કરનેકી નિયતસે ખેલા જાયે મહઝ લહવોલઅબ યાની ખેલ તમાશા ન હો. હા ઈસ્કી બાઝી પર કોઈ રકમ યા ઈનામ મુકર્રર કરના જાઈજ નહી.

जैसे के गॅद का भेल जिससे जस्मान्नी वरजिशल्नी होती है या लाठी वगैरहके भेल या पडेलवानोंकी कुश्ती जो जहाद वगैरहमें मददगार बनते हैं. अगर ये भेल करनेमें नमाजें झूत होती हो तो ये ली जाईज नही.

(२) बे झईदा भेल तमाशे :- जैसे भेल तमाशे जस्का कोई झईदा दीन-दुन्याका यकीनी नही है. वो सब भेल नाजाईज और हराम है. याहे ईस पर बाजी लगाई जाये या अकेले भेला जाये बहरहाल जैसे बेकार भेल नाजाईज है. जैसे कबुतर बाजी-बटेर बाजी-मुर्ग बाजी-चौसर-शतरंज-ताश भेलना-पतंग बाजी वगैरह ये सब नाजाईज है.

(३) रेडीयो और टीवी :- आजकल ये मुसीबतल्नी आम हो गई है गोया ये चीजें जिंदगी बसर करनेके लीअे जरूरी समजी जाने लगी है. ये चीजे बडाई और तरक्की की अलामत समजी जाती है. घरके सब छोटे बडे मा-बाप भाई-बहिन और लडके-लडकीया गर्ज सबही शरमो हयाको ताकमें रभकर ईशकी गाने और नंगी तस्वीरे देपते है. और इन चीजोंकी दाद दी जाती है. और इन गंदी बातों पर हसी और केहकेले लगाये जाते है. न बडोंका अदब है न छोटोंका लिहाज. सब अकेही रंगमें रंगे हुअे होते है. शरमो हया ईज्जत सब भतम हो जाती है.

हजरत रसुले मकबुल (स.अ.)ने इरमाया के मेरे रबने मुजे तमाम जहानों के लीअे रहमत और हिदायत देनेवाला बनाकर भेजा है. और मुजे हुकम दीया है के गाने बजानेके सामान और जालीलीयतकी चीजोंको भीटा हुं हुजुर (स.अ.)से सख्खी मुहब्बत करनेवाले अैसी गंदी चीजोंसे मुहब्बत कर सकते है?

(४) थियेटर और सिनेमा :- बेहया (बेशरम) बनानेकी ट्रेनींग स्कुल है. सिनेमा देपनेवाले ईस कदर बढ़ गये है और बढ़ते जा रहे है के ईन्को देपनेके लीये लंबी लंबी लाईने लगती है. मर्द और औरत छोटे बडे सब ईस बडे गुनाह को करते है. बाज लोग पुरे पानदानको लेकर इन लअनतवाले घरोंमें सिनेमा देपते है. जिस्मे दौलत बरबाद होती है. शरमो हया का पुन होता है और बहकारीका सबक सीभकर आते है ईससे भुदल्नी बये और अपने साथीओ को ली बयाये.

(५) नाविल और अइसाने :- आजकल सबसे बडी आफत जो मुस्लिम घरोंमें तेजीसे फैल रही है. वो नावील और अइसाने और इिल्मी स्टारके रिसाले है. जो सरासर बेहयाई सिभानेवाले है. जन्मे नंगी तस्वीरे और गंदी बातें होती है. जिन्की पढनेसे गंदे भ्यावात दीमागमें

जम जाते हैं। उनके नतीजेमें पराभीया-बदयलनी-बेहयाई-बदकारी के कीस्से जो आजकल देभे जाते हैं वो ईन्ही गंदी किताबोंके पढनेसे पैदा छोटें हैं। यानी पैसाबी बरबाद और छंदगीली बरबाद अल्लाह अपनी पनाहमें रभे। (आमीन)

दीनी तालीमी तहरीक :-

बच्चोंको सही तालिम और तरबियत अेक अहम दीनी इरीजा है। ईसलीये तय कर लीज्जे...

- ★ मिल्लतके हर बच्चोंको जइरी तालिमसे आरास्ता करना है..
- ★ ईस कामको अपने बल बुते पर करना है.
- ★ पूरी मिल्लतको मीलजुलकर करना है.
- ★ जुजवी और कुइई (छोटे फ़ालतु) ईप्तेवाइको बावाअे ताक रभ कर करना है.
- ★ तन मन धन से लग खिपट कर करना है.

याद रहे ! मुइके मौजूदा हालातमें ये काम बछोट जइरी है। ईस्से गइलत मिल्ली मौत है.

सेहत और तंदुरस्ती

- (१) पाने पर पाना तमाम बिमारीयोंकी जड है अेक गीजा(भोराक) जब तक बराबर उजम न छे जाये दुसरी गीजा हरगीज न पाअे. जिसुल यह है के पाना तो जब लुक लगे तबही पाअे और थोडी लुक बाकी रहे और पाना छोड दें.
- (२) बाज यीजें बाज यीजेंके साथ पाना सप्त नुकसान देता है. ईस्को जानने के लीअे ईल्मे तीबकी जइरत है. जो हर शप्स नही जानता. बस आसान और उमिदा बात ये है के अेक वक्तमें बस अेकही सालन पाये.
- (३) मुली और दही सिरका और यावल अंडा और सिरिपायें अंगुर, दुध और भटाई दूध यावल और सत्तुं यावल और तरबुज अेक वक्तमें न पाये और भरबुजा नहार मुंड न पाना याहीअे.
- (४) पाना पाने के बाद इोरन ही दिमागी काम या अस्मान्नी महेनतमें मशगुल छेना सेहतकी नुकशान देता है. दोपहरकी कैलुल और

रातको थोडी खेडल कदमी कर लीया करो और पाने के बाद गुग्गुलु न करे.

- (५) रंज और गुस्सेकी डालतमें पाना न पाये बल्के तबीअत को अेतीहाल पर आने दे.
- (६) दूध ठंडा न पीअे न बडोत गरम
- (७) अस दीन डारुमा ठीक न डो तो यायमें दूध डालनेके बजाये लीबुंका थोडा रस डाल कर पीअे.
- (८) आराम तल्बी बडोत भुरी यीज है. जो लोग मडेनत और वरजिश करनेके आदी नही डोते वोड ज्यादा भीमार रहेते हैं. और जल्दी बुडापा आ जाता है. डंमेशा वरजिश करते रहे सुब्डका टहेलना कभी न छोडे अगर देर डो जाये तबल्बी नागा न करे. असको टेडलनेका मौका न भीले वो कमसे कम ४५ मीनीट घरमें ही टेडल लीया करे. औरतो के लीअेघरका कामकाज और सुब्डको यक्की पीसना आअला क्रीसमकी वरजिश है.
- (९) रातको देर तक जागना और सुब्डको देर तक सोना तंदुरस्तीके लीअे ली भुरा है. और लोगोके नजदीक ली पसंद नही है अेसी आदत डरगीज न डाले.
- (१०) मछली डंमेशा ताजी भरीडे मछली पा कर पानी कमसे कम पीअे ज्यादा पानी पीना सप्त नुक्सान करता है. मछली के साथ दूध और अंडा न पाये मछ और जुन और जुवाछिके मडीनेमें और सप्त सरदीमें मछली न पाना बेडतर है. और मछली और पीर रातको न पाना याडीये.
- (११) भुंदातआवाने अस मौसममें जो यीज पैदा की है. ईस्मे बडोत मस्लेडतें और झार्डे है. अस मौसमकी डर यीज कम अज कम अेक भरतबा जरूर पानी याडीये अगर भीमार डो और तबीअने मना किया डो तो अलग भात है. तब तो ईस्का छोडना ही मुनासिब है.

शिकायते सअदी :- अजमके बादशाडने माडिर तबीअको डुरुर (स.अ.)की भीडमतमें लेजा. वो कछ साल तक अरबके मुल्कमे रहा. कोछ शम्सकीसी क्रीसमके ईवाजके लीअे न आया वो डकीम डुरुर (स.अ.)के पास आया और शिकायत की के ईस भादीमको पास तौर पर आपके साथीयोके

ईलाज के लीअे जनाबकी भीदमतकें लेजाहै. लेकिन ईल्नी मुदतमे कीसीने मेरी तरफ तवज्जुह न की के में ईस्का ईलाज करता.

हुजुर (स.अ.)ने इरमाया इन लोगों का तरीका औसा है के जब तक लुक मजबुर नही करती ये जाना नही जाते और लुक बाकी होती है के जानेसे हाथ पीय लेते है. तबीब बोला तंदुरस्तीका यही सलब है. दरबारकी जमीनको बोसा दीया और यला गया.

“पुदाने आज तक जिस कौमकी डालत नही बढली

न हो अस्को भ्याव अपनी डालतके बढवने का.

दुमारी ली नेअमत है :- अक हदीसमें हुजुर (स.अ.) ने इरमाया के जो शप्स बीमार हो जाता है. और अपने काम नही कर सकता तो अल्लाह तआला ईस्को अपने सेहतके जमानेके कामोंका सवाब देता है.

जैसे के कोई शप्स तंदुरस्तीके जमानेमें नमाज बाजमाअत का आदी था. मगर बीमार पडनेकी वजहसे जमाअतमें शरीक नही हो सकता तो ईस्को जमाअतका सवाब मीलेगा.

ईसी तरह नवाझील और वज्राईका सवाब ली बीमारके जमानेमें मिलता रहता है. ये इजले पुदावंदीकी बात है.

मुअमीनके हकमें बीमारी गुनाहोंका कफ़ारह बनती है. और ईस पर सवाब मीलता है.

ईस्के साथ तंदुरस्तीके जमानेमें जो नेकी होती थी और बिमारी की वजहसे बंद हो गई ईस्का सवाब मिलता है. ईसलीअे बीमारी मुअमीन के लीअे नेअमत है.

गनीमत जानो :-

अय ईन्सान ! अंदगीकी कदर कर. दरघडीको गनीमत जान और ये सोच के भबर नही अगली घडी केसी आयेगी. और उस्मे तेरा क्या डाल डोगा मुर्दोंकी हसरत और नदामतसे सभक ले. के वो दो रक़ात नमाज बल्के सिर्फ़ कविमा तय्यबह पढनेकी बकदर (अतनी) अंदगीकी तमन्ना करते है. लेकिन जिन्की तमन्ना पुरी होने की कोई शकल नही. ये तेरे पास अंदगीके बंद लम्हात बाकी है. जो कुछ करना है ईन्दीमे करले.

मबादा तुज पर वही वक्त आ पडोये के तुंभी हसरत और नदामत के सिवा कुछ न कर सके. (रवजतुस्सालिहीन)

हर जिमारी की दवा

-: नज़म :-

जहाँ तक काम चलता हो जिजासे
 वहाँ तक याहीये बचना दवासे
 अगर तुझको लगे ज़ाँ में सरदी
 तो छिस्तेमाल कर अंते की जर्दी
 जो हो मेहसूस मेढे में गीरानी (वजन)
 तो पी ले सोंफ़ या अदरक का पानी
 अगर पुन कम हो या बलगम ज्यादा
 तो भा गाजर यने शलजम ज्यादा
 अगर के बल पर है छिन्सान छता
 अगर जोअड़े अगर है भा पपीता (कमज़ोर)
 अगरमे हो अगर गरमी दही भा
 गर आतों मे पुशकी हो तो घी भा
 थकनेसे हो अगर अजलात ढीले (अवयव)
 तो झोरन दूध गरमा गरम पी ले
 ज्यादा गर दीमागी है तेरा काम
 तो पाया कर भीवा कर शडेद बादांम
 अगर हो दीलकी कमज़ोरीका ओहसास
 मुरब्बा आम्ला भा और अनन्नास
 जो दुपता हो गला नज़ले के मारे
 तो कर नमकीन पानीसे गरारे
 अगर है दरदसे दांतोके बेकल
 तो जिंगलीसे मसोंडो पर नमक मल
 जो बढडज़मीमें तुं याडे छिंफ़ाका (आराम)
 तो करले अेक दो वकत फ़ाका
 (डकीम असद मुस्तानी)

કલિમા કા બયાન

જો અલ્લાહ અલ્લાહ તઆલા ઓર રસુલે અકરેમ (સ.અ.) પર ઈમાન લાને કે લીયે કહે જાતે હૈ. ઊન અલ્લાહ કો શરીઅતમે કલિમહ કહા જાતા હૈ.

કલિમહકે ચાર ફર્ક હૈ.

(૧) ઝબાનસે પઢના (૨) તરજુમા ઓર મતલબ જાનના (૩) દીલસે સચ્ચા જાનના ઓર યકીન કરના (૪) ઊસ પર કાયમ રહેના યહાં તકકે મૌત આ જાએ.

કલિમહ યે હૈ.

(૧) **કલિમએ તઝ્યિબહ** :- લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહુ મુહમ્મદુર્રસુલુલ્લાહ.

(૨) **કલિમએ શહાદત** :- અશહદુઅલ્લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહું વઅશહદુ અન્ન મુહમ્મદન અબ્દુહુ વરસુલોહુ

(૩) **કલિમએ તમજુદ** :- સુબ્હાનલ્લાહી વલહમ્દુલિલ્લાહી વલા ઈલાહ ઈલ્લલ્લાહું વલ્લાહુઅકબર વલા હવલ વલા કુવ્વત ઈલ્લા બિલ્લાહીલ અલીયીલ અજ્જમ.

(૪) **કલિમએ તૌહીદ** :- લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહું વહદહુ લાશરીકલહુ લહુલ મુલ્કુ વલહુલ હમ્દુ યહયી વયુમિતું બિયદીહીલ ખયરુ વહુવ અલા કુલ્લી શયઈન કદીર.

(૫) **કલિમએ રદદે ફુફ** :- અલ્લા હુમ્મ ઈન્ની અઊઝૂબિક મિન અન ઊશરીક-બિક શયઅંવ વઅના અઅલમું બિહી તુબ્તું અન્હું વતબર્ અતું મિનલ ફુફી વશ શીરકી વલ કીઝબી વલ બુહતાની વલ મઆસી કુલ્લીહા અસલમ્તું વઆ મન્તુ વઅકુલુ લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહું મુહમ્મદુર્રસુલુલ્લાહ.

અતહિઆત :- અતહિયાતું લિલ્લાહી વસ્સલવાતું વતૈયેબાતુ અસ્સલામું અલૈયક અથુહન નબીય્યું વરહમતુલ્લાહી વબરકાતુહું અસ્સલામું અલૈયના વઅલા ઈબાદીલ્લાહીસ્સાલેહીન અશહદુઅલ્લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહું વઅશહદુ અન્ન મુહમ્મદન અબ્દુહુ વરસુલુહુ

ફુરદે ઈબ્રાહિમ :- અલ્લાહુમ્મ સલ્લેઅલા મુહમ્મદીવ વઅલા આલિ મુહમ્મદીન કમા સલ્લયત અલાઈબ્રાહીમ વઅલા આલી ઈબ્રાહીમ ઈન્નક હમીદુમ-મજ્હદ.

અલ્લાહુમ્મ બારિક અલા મુહમ્મદીવ-વઅલા આલિ મુહમ્મદીન કમા બારકત અલા ઈબ્રાહિમવઅલા આલી ઈબ્રાહિમ ઈન્નક હમીદુમ મજ્હદ.

દુઆ :- અલ્લાહુમ્મ ઈન્ની ઝલમ્તું નફસી ઝૂલ્મન કસીરવં વલા યગફીરૂ-ઝુબુબ ઈલ્લાઅન્ત ફગફીરલી મગફીરતમ-મીન ઈન્દીક વરહમ્ની ઈન્નક અન્તલ ગફુર્રહીમ.

દુઆએ ફુવુત :- અલ્લાહુમ્મ ઈન્ના નસત ઈનુક વનસતગફીરૂક વનુઅમિનુ-બિક-વનતવક્કલુ અલયક વનુસ્ની અલયકલ ખર વનશકુરૂક વલાનકફૂરૂક વનખલબી વનતરૂક મંય-યફજુરૂક અલ્લાહુમ્મ-ઈય્યાક-નઅબુદુ-વલક-નુસલ્લી વનસ્-જુદુ-વઈલયક-નસ્આ-વનહફીદુ વનરજું રહમતક વનપ્શા અઝાબક-ઈન્ન અઝાબક-બિલ-કુફકારી મુલ્હીક.

સના :- સુબ્હાનકલ્લાહુમ્મ વબિહમ્દીક વતબારકસ્મોક વતઆલા જદદુક વલાઈલાહ ગયરૂક

અગર જનાઝેકી નમાઝ હો તો ઊસ્મે જદદુક કે બાદ વઝલ્લ સનાઊક પઢે.

અમલકે લીએ મુખ્તસર યાદ દાશત

અબ હમ કિતાબકો ખત્મ કરતે હૈ. ઈસ્કો બાર બાર પઢો. ઘરવાલોંકો દોસ્તો-પડોસિયોંકો સુનાઓ ઔર અમલ કરો આખીરમેં હર વક્ત દેખકર યાદ કરનેકે લીએ યાદ દાશતકે તૌર પર ચંદ બાતે લીખતે હૈ.

- (૧) કલીમહ તથ્થબહ કે અલ્લાહ સહી યાદ કરો. મઅના ઔર મતલબ ભી યાદ કરો ઊસ્કે મુતાલીબે કો પુરા કરો.
- (૨) નમાઝકી પાબંદી કરો દીલ લગાકર પઢો. રૂકુઅ-સિજદહ કીક અદા કરો. જો કુછ નમાઝમેં પઢા જાતા હૈ સહી યાદ કરો નફીલ નમાઝે ભી પઢા કરો.
- (૩) જહાં તક હો સંકે હર વક્ત અલ્લાહકી યાદમેં લગે રહો કમસેકમ સુબ્હ શામ ૧૦૦ મરતબા તીસરા કલ્મા ૧૦૦ મરતબા દરૂદ શરીફ ૧૦૦ મરતબા ઈસ્તિગફાર પઢા કરો રોઝાના સુરએ યાસીન પઢા કરો. હર ફર્જ નમાઝ કે બાદ આપતુલ ફુર્સી ચારો કુલ ઔર ૩૩ મરતબા સુબ્હાનલ્લાહ ૩૩ મરતબા અલહમ્દુલિલ્લાહ ૩૩ મરતબા અલ્લાહુઅકબર પઢો. રોઝાના કુર્આન મજીદકા એક પારા પઢો.
- (૪) બંદોકે હુકુક કા ખ્યાલ રખો. કીસીકા કોઈ હક અપને ઝીમ્મે ન

- રખો. કીસીકો આગે પીછે બૂરા ન કહો-ન ગાલી દો-ન તઅમા દો-ન લઅનત કરો. સબકો રાહત પહોંચાઓ.
- (૫) મા-બાપકો હરગીઝ ન સતાઓ. હર વક્ત ઊન્કી ખીદમત કરો ઊમ્ર ભર ઊન્કી રાહતકા ખ્યાલ રખો.
- (૬) પડોસીયોકો ન સતાઓ-ઊન્કો હદીયા લીયા દીયા કરો-ઊન્કે બચ્ચોંસે પ્યાર મુહબ્બતકા બરતાવ કરો.
- (૭) હર કામ ખુદાકો રાઝી કરનેકે લીયે કરો ખાસ કર નમાઝ-રોઝા-ખયરાત ફરનેમેં. રિયાકારી ઓર બડાઈસે પરહેઝ કરો- સિફ અલ્લાહકો રાઝી કરનેકે લીએ અમલ કરો.
- (૮) ઝબાનકી હિફાઝત કરો-બેકાર બાતોંસે ઓર બુરાઈકી બાતોંસે-લાનત-ઓર ફીટકાર ઓર ગાલી ગલોચસે ઝબાનકો પાક રખો.
- (૯) માલ ફુઝુલ ન ઉડાઓ-આમદનીસે જ્યાદા ખર્ચ ન કરો સિનેમા ન દેખો-ટીવી સે દુર રહો. ફોટો ઘરમે ન આને દો શતરંજ ચોસર વગેરહ બુરે કામોંસે પરહેઝ કરો.
- (૧૦) જો દુઆએ હર વક્ત કી હદીષ કી કિતાબો મેં આઈ હૈ. ઊન્કો મુંહ પર યાદ કરો. ઓર હર મૌકે પર ઊસ્કો પઢો.
- (૧૧) ગુનાહોંસે બચો દીનકે હુકમો પર ચલો-કીસીકે સામને દીનકી બાત કહનેસે મત ઝિઝકો

અલ્લાહ તઆલા હમ સબકો અમલકી તૌફીક દે ઓર અપને મહેબુબ સલ્વલ્લાહુ અલયહે વસલ્લમ કે મુબારક તરીકે પર ચલાયે. (આમીન)
નાઝેરીને કિરામ (કિતાબ પઢનેવાલોં)સે દરખાસ્ત હૈ કે અહકર મોઅલ્લીફશમ્સુલહક હાશીમ કે લીએ દોનોં જહાનકી આફીયત ઓર હુસ્ને ખાતેમા ઓર મગફીરતે બેહિસાબકી દુઆ ફરમાવે.

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

(الحکیم)

“અલઆરિઝ”

મૌ.શમસુલહક હાશીમ ગોફેરલહું

મા. યાંગા - સુયાર સ્ટ્રીટ

જી. ખેડા-ગુજરાત-પીન-૩૮૮૪૨૧

જમાદીલ અવ્વલ હીજરી ૧૪૧૫



ਰੇਹਕੇ ਦੁਨਿਆਮੇਂ ਭਸ਼ਰ ਕੋ ਨਹੀਂ ਐਯਾ ਗਫ਼ਲਤ
ਮੌਲਕਾ ਧਿਆਨਭੀ ਲਾਯੀਮ ਹੈ ਫ਼ਰ ਆਨ ਰਹੇ
ਯੇ ਭਸ਼ਰ ਆਲਾ 'ਹੈ ਦੁਨਿਆਮੇ ਯੇ ਕੇਹਤੀ ਹੈ ਕਯਾ
ਮੇਂ ਭੀ ਪੀਠੇ ਯਲੀ ਆਤੀ ਫੁੰ ਯਰਾ ਧਿਆਨ ਰਹੇ



"ਅਹਮ ਨਸੀਹਤ"



ਯਲੀਲੁਲਕੁਦਰ ਤਾਯੇਯ ਫ਼ਰਤ ਸੁਫ਼ਯਾਨ ਸੌਰੀ (ਰਹ.)
ਕਾ ਯਸ਼ਾਫ਼ ਹੈ ਕੇ ਦੁਨਿਆਕੇ ਲੀਯੇ ਯਲੀ ਮਫ਼ਨਤ
ਕਰੋ ਯੁਸ ਕਫ਼ਰ ਦੁਨਿਆਮੇਂ ਰਹੇਨਾ ਹੈ.
ਔਰ ਆਯੇਰਤਕੇ ਲੀਯੇ ਯਲੀ ਮਫ਼ਨਤ
ਕਰੋ ਯੁਸ ਕਫ਼ਰ ਯਹਾਂ ਰਹੇਨਾ ਹੈ.



હમ્દે બારીતઆલા

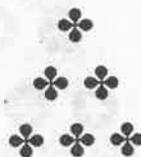
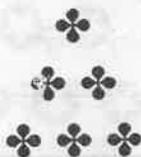
હમ્દો સના હો તેરી, કૌનો મકાન વાલે
અચરબ્બે હરદો આલમ, દોનો જહાન વાલે
બિન માગે દેનેવાલે, અશો કુર્આનવાલે
ગિરતે હૈં તેરે દરપર, સબ આન બાનવાલે

બેશક રહીમ, હૈં તુ, રહમત નિશાનવાલે
ચૌમુલજઝાકે માલિક, ખાલિક હમારા તુ હૈં
સજદા હૈં તુઝકો કરતે, તેરી હી જુસ્તજુ હૈં
ઈમદાદ તુજસે ચાહે, સબકા સહારાતુ હૈં
તેરી હી બારગાહ મે, એક ચે ભી આરઝુ હૈં

રાસ્તા દિખા દે સીધા ઓ આસ્માનવાલે
વો રસ્તા દિખા તુ, પરવર દિગારે આલમ
જુસ પર ચલા કિયે હૈં, પરહેઝગારે આલમ
નેઅમતથી જુનકો મીલતી, તુજ સે નિગારે આલમ
ઔરનામ જિનકા અબતક, હે ચાદગારે આલમ

તેરી નઝરમે દેહરે, જો ઈજઝો શાનવાલે
મઅતુબ હૈં જો તેરે, અચ ખાલિકે યગાના
ગુમરાહ હુચે જો તુજસે, અચ સાહિબે ઝમાના
હમ આજિઝો કો ચારબ, ઉન્કી રાહ ન ચલાના
કર રહમ ઈતના અબતો, અચ કાદિરે તવાના

મકબુલ ચે દુઆ હો, અચ લા. મકાનવાલે



नअते रसुल (स.अ.व.)

वो नलीयों में रहमत, लकल पाने वाला
 मुराटे गरीबों की, भरलाने वाला
 मुसीबतमें गयरोँ के, काम आने वाला
 वो अपने पराये का, गम जाने वाला
 अतरकर हिरासे, सुअे कौम आया
 और अेक नुस्अे, किमीया साथ लाया
 अलहर तरङ्गुल, ये पयगामे हकसे
 के गुंज छडेँ दशते, जलल नामे हक से
 ये सुनते ही ढर्रा, गया गल्लासारा
 ये राईने ललकार, कर जल पुकारा
 के हेँ गते वहिद, ईलादतके लार्क
 गलां और हिलकी, शहादत के लार्क
 अिसी के हेँ इरमान, ताअत के लार्क
 अिसीकी हेँ सरकार अिदमत के लार्क
 मुअर्रा हेँ शिर्कत से, अिसकी पुदाई
 नहीँ अिस्के आगे, अिसीकी अडाई



मुनाजत

गरये में नदकारो नालायक हूं, अथ शाढेजहां ।

पर तेरे दर को जाता, अब छोड कर जहाँ कहां ?

कौन है तेरे सिवा, मुझ जेनवा के वास्ते

हैं र्भजादत का सहारा, आभिदों के वास्ते,

और तकीया मुहदका हैं, ग्राहियो के वास्ते,

है असाये, आह, मुझ जे दस्तो पाके वास्ते

अकलोहेशो फिक और, ने अमाये दुनिया जेशुमार,

की अता तुने मुझे, पर अजतो अथ परवर दिगार !

जग्शा वोजेअमत, जो काम आये सदाके वास्ते

हद से अउतरहो गया है, हल मुझ नाशाद का

करमेरी र्भमदाद अल्लाह, पकत है र्भमदादका

अपने लुट्जे, रहमते जेर्भन्तिहा के वास्ते

गो मे हूं ओक जंन्दये आसी, गुलामे पुर कुसुर

जुर्म मेरा होसला है, नाम है तेरा गकुर

तेरा केहलातु हूं मे, जैसा अथ रज्जे शकुर

अन्त शाहीन अन्त काकिन की मुहिम्मातिल ठिमुर,

अन्त रब्बी अन्त हस्बी अन्तली निअमल पकील

પુશપબર

કિતાબનું નામ : “જવાની કા અનમોલ ખઝાના”

દુનિયામાં “ઈન્સાન” અશરફુલ મખ્લુકાત હોવાનું કારણ તેની અકલ-અખ્લાક અને રૂહાની તાકત છે. તેની તરકકી લાઝીમ છે. જવાનીમાં તેની શરૂઆત થતી હોવાથી નવ જવાનોની તે બાબતોમાં રેહબરીની જરૂર છે.

રૂહાની, અખ્લાકી, ઈબાદત, દોસ્તી, તાલીમ, મેહફીલ, ખેલકુદ. નિકાહ, તલાક, રોઝી, ગફાઈ, તંદુરસ્તી. વિગેરે ૧૭૫ બયાનો. કુર્આની આયતો, હદીસે પાક. અને બુર્હુગોના અકવાલ ની રોશનીમાં મુફીદ અને જરૂરી માલુમાત નો ઈલ્મી ખઝાનો કૌમ અને મિલ્લતના બિરાદરો અને ખાસ નવ જુવાન દોસ્તો માટે તૈયાર કરેલ છે.

કિતાબને રેહબરે જીંદગી સમજી તેનો અભ્યાસ કરી જીવનમાં ઈસ્લામી સંસ્કાર પૈદા કરો.

નજીકના સ્નેહીઓને-દોસ્તોને પણ કિતાબનો કિંમતી તૌહફો અપાવી કરી આપનો અખ્લાકી ફર્જ પુરો કરી શકો છો.

પ્રકાશક

નુરાની કુતુબખાના

મુ.પો. છાપી, જિ. બનાસકાંઠા

પીન - ૩૮૫૨૧૦

સર્વ હક સ્વાધીન છે.

પયામે ઈન્શાનિયત

સારે જહાંમે અચ્છા હિંદુસ્તા બનાદે
ઊલ્ફત કી રોશનીસે હર ઘરકો ઝગમગા દે

નફરત કી આગમે હમ જલતે રહેગે કબ તક
આવો જતન કરે અબ ઈસ આગકો બુઝાદે

આપસકી કશમકશ મે ફીર હમ ન ટૂટ જાયે
અપને વતનસે અબ હમ હર જુલ્મ કો મીટા દે

ઈન્શાનિયતકી બિદમત ઈસ તરહ કુછ કરે હમ
મઅસુમ મુસ્કુરાદે બુઢે હમે દુઆ દે

મઝહબ નહી રૂકાવટ ઈન્સાન દોસ્તી મેં
ભુલા હુઆ સબક યે ફીર યાદ હમ કરા દે

સબ માદરે વતન કે આગોશમે પલે હે
મજબુર કોઈ ભી હો હમ ઊસ્કો આસરા દે

નગમે કા યે તરન્નુમ ગુંજે ગલી ગલીમેં
દીલમેં તડપ હો ઐસી જાલીમકો ભી રૂલા દે

સબકો ગલે લગાના ભારત કી રીતમેં હે
તોપોં મે ભી નહી હેં તાકત જો પ્રિત મે હે